उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय

हल्द्वानी

Minor Vocational Course

BAKA(N)-121

बी.ए. कर्मकाण्ड (द्वितीय सेमेस्टर)

पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन विधि

तीनपानी बाईपास रोड , ट्रॉन्सपोर्ट नगर के पीछे
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल - 263139
फोन नं .05946- 261122 , 261123
टॉल फ्री न0 18001804025
Fax No.- 05946-264232, E-mail- info@uou.ac.in
http://uou.ac.in

अध्ययन समिति

प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह नेगी – अध्यक्ष
कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर रेनू प्रकाश – निदेशक
मानविकी विद्याशाखा
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, ज्योतिष विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी

प्रोफेसर रामराज उपाध्याय
अध्यक्षचर, पौरोहित्य विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रोफेसर रामानुज उपाध्याय
अध्यक्षचर, वेद विभाग, श्रीलालबहादुरशास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

प्रोफेसर उपेन्द्र त्रिपाठी
अध्यक्षचर, वेद विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाठ्यक्रम संयोजन एवं सम्पादन

डॉ. नन्दन कुमार तिवारी
विभागाध्यक्ष - वैदिक ज्योतिष एवं भारतीय कर्मकाण्ड विभाग
उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , हल्द्वानी

इकाई लेखक	खण्ड	इकाई संख्या
डॉ. नन्दन कुमार तिवारी असिस्टेन्ट प्रोफेसर एवं समन्वयक, **वैदिक ज्योतिष एवं भारतीय कर्मकाण्ड विभाग** उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी	**1/3**	**1/3**
डॉ. विजय रतूड़ी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष-कर्मकाण्ड, उ0मु0वि0	**1**	**2, 3,4**
डॉ. राकेश ममगाँई असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), उ0मु0वि0	**2**	**1,2,3**
डॉ. रंजीत दूबे असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष-कर्मकाण्ड, उ0मु0वि0	**2**	**4,6**
डॉ. प्रमोद जोशी असिस्टेन्ट प्रोफेसर (एसी), ज्योतिष, उ0मु0वि0	**2**	**5**
डॉ. शशिरंजन कुमार पाण्डेय असिस्टेन्ट प्रोफेसर, वेद विभाग, धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालय मुजफ्फरपुर, बिहार	**3**	**1,2**

कापीराइट @ उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय
प्रकाशक - उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।
प्रकाशन वर्ष - 2024
ISBN NO. –
मुद्रक: -

नोट : - (इस पुस्तक **के** समस्त इकाईयों के लेखन तथा कॉपीराइट संबंधी किसी भी मामले के लिये संबंधित इकाई लेखक जिम्मेदार होगा। किसी भी विवाद का निस्तारण नैनीताल स्थित उच्च न्यायालय अथवा हल्द्वानी सत्रीय न्यायालय में किया जायेगा।)

बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

अनुक्रम

प्रथम खण्ड – पूजन परिचय, भेद एवं उपचार	**पृष्ठ - 1**
इकाई 1: पूजन परिचय एवं विधि	2 -15
इकाई 2: उपचार क्या है?	16-24
इकाई 3: उपचार के भेद	25-37
इकाई 4: प्रमुख उपचार	38-47
द्वितीय खण्ड – पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन	**पृष्ठ- 48**
इकाई 1 : पंचोपचार पूजन	49-61
इकाई 2 : पंचोपचार पूजन विधि	62-77
इकाइ 3: पंचोपचार पूजन में विशेष	78-94
इकाइ 4: षोडशोपचार पूजन	95-110
इकाई 5 : षोडशोपचार पूजन विधि	111-129
इकाई 6 : षोडशोपचार पूजन में विशेष	130-147
तृतीय खण्ड – पूजन फल विचार	**पृष्ठ-148**
इकाई 1: पंचोपचार पूजन फल	149-163
इकाई 2: षोडशोपचार पूजन फल	164-177
इकाई 3: पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार का महत्व	178-190

बी.ए. (द्वितीय सेमेस्टर)

MINOR VOCATIONAL COURSE

पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन विधि

BAKA(N)-121

खण्ड – 1

पूजन परिचय एवं विधि

इकाई – 1 पूजन परिचय एवं विधि

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पूजन परिचय
1.4 पूजन विधि
1.5 सारांश
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1.8 सहायक पाठ्यसामग्री
1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना -

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-121 प्रथम खण्ड की प्रथम इकाई से सम्बन्धित है। आशा करता हूँ कि आप सभी 'कर्मकाण्ड' शब्द से परिचित होंगे है। इस इकाई में आप कर्मकाण्ड के अन्तर्गत पूजन का परिचय एवं उसकी विधि के बारे में ज्ञान प्राप्त करने जा रहे हैं।

कर्मकाण्डोक्त पूजन में उत्तरोत्तर क्या – क्या क्रम होता है। किसके पश्चात् क्या करना चाहिये आदि का ज्ञान तथा पूजन सम्बन्धित विभिन्न तत्वों का ज्ञान इस इकाई में वर्णित किया जा रहा है। पूजन के मुख्य रूप से तीन प्रकार है – पंचोपचार, दशोपचार एवं षोडशोपचार। पूजन क्रम क्या – क्या है तथा उसकी विधि क्या है, इस इकाई में आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत है।

1.2 उद्देश्य -

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप समझ सकते है कि –

- पूजन क्या है।
- देवपूजन में आरम्भिक पूजन क्या है।
- आरम्भिक पूजन के अन्तर्गत क्या - क्या करते है।
- देवताओं का पूजन क्रम क्या है।
- तिलक, दीपप्रज्वलन, दीप महत्व आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

1.3 पूजन परिचय

भारतीय वैदिक सनातन परम्परा में 'पूजन' वह प्रक्रिया है जिसके फलस्वरूप साधक अपने इष्ट की आराधना वेदोक्त कर्मकाण्ड प्रक्रिया द्वारा करता है। पूजन के माध्यम से ईश्वरीय आराधना करने का विधान है। सभी धर्मों के लोग अपने-अपने विधि के अनुसार पूजन की क्रिया करते है। पूजन के माध्यम से मनुष्य अपने आप को ईश्वर से जोड़ने का प्रयास करता है।

पूजन के लिये सर्वप्रथम शुभ मुहूर्त्त का चयन करते है और शुभ मुहूर्त्त का निर्धारण पंचांग के माध्यम से किया जाता है। पंचांग में तिथि, वार, नक्षत्र, योग एवं करण का उल्लेख होता है। पूजन मुख्यत: तीन प्रकार की होती है- पंचोपचार, दशोपचार एवं षोडशोपचार। पंचोपचार पूजन की सूक्ष्म विधि है तथा दशोपचार एवं षोडशोपचार दीर्घ विधि है। भारतीय वैदिक वांगमय में पूजन हेतु इन तीनों प्रकियाओं का प्रयोग समस्त देवी-देवताओं के आराधना-पूजन में किया जाता है।

आरम्भिक पूजन में सर्वप्रथम गणेशाम्बिका पूजन का वधिान बतलाया गया है तत्पश्चात् दैनिक पूजा में पंचदेव पूजन का विधान कहा गया है। उसी क्रम में अपने-अपने ईष्ट देवताओं का पूजन की विधि भी बतलायी गयी है।

शुभ मुहूर्त निर्धारण करने के पश्चात् पूजन के लिये तत् सम्बन्धित सामग्रीयों को एकत्र कर पवित्र स्थान पर आसन आदि बिछाकर वहॉ बैठते है तथा पूजन सामग्रीयों को सुव्यवस्थित करते है। किसी भी पूजन के लिए सर्वप्रथम पंचांगोक्त शुभ वार, नक्षत्र तिथ्यादि का प्रयोग करते हुए 'संकल्प' करने का विधान है क्योंकि संकल्प के बिना पूजन अधूरा माना जाता है।

अब आप सभी पूजन क्रम को समझ लिजिये –

जिस देवता की पूजन करनी हो, उसका मंत्र द्वारा आवाहन करते है, फिर पश्चात् का क्रम इस प्रकार है-

आवाहन

आसन

पाद्य

अर्घ्य

आचमन

स्नान

पंचामृत स्नान

शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान

वस्त्र, उपवस्त्र

चंदन

यज्ञोपवीत (जनेऊ)

पुष्प

दुर्वा गणेश जी के पूजन में

तुलसी विष्णु जी के पूजन में तुलसी

शमी शमीपत्र

अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त (लाल) अक्षत, अन्य में पीत (पीला) अक्षत

सुगंधिद्रव्य इत्र

धूप

दीप

नैवेद्य प्रसाद

ऋतुफल

ताम्बूल पान

दक्षिणा

आरती

पुष्पाञ्जलि

मंत्रपुष्पांजलि

प्रार्थना

इस प्रकार क्रमानुसार पूजन करते हैं।

आवाहन का मन्त्र -

आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिरा: समे।
यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु संनिधौ।।

मन्त्र पढ़ते हुये जिनकी पूजा कर रहे हो, उनका ध्यानपूर्वक आवाहन करना चाहिये। जिस देवता की पूजा कर रहे हो, उसका नाम लेकर पुष्प अर्पित करना चाहिय । यथा गणेश जी की पूजा कर रहे हो तो – गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि कहते हुए आवहनार्थे पुष्पं समर्पयामि कहना चाहिए। इसी प्रकार जो कर्म कर रहे हो, उसका नाम लेते हुए उच्चारण करना चाहिए।

आसन का मन्त्र –

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं परिगृह्यताम्।।

पाद्य का मन्त्र –

गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम्।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णनतु परमेश्वरा:।।

अर्घ्य का मन्त्र –

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृह्णन्त्वर्घ्यं महादेवा: प्रसन्नाश्च भवन्तु मे।।

आचमन –

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वरा:।।

स्नान –

मन्दाकिन्या: समानीतै:कर्पूरागुरूवासितै:।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभि: सुगन्धिभि:।।

पंचामृत स्नान –

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम्।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतंस्नानार्थं प्रतिगृह्यातम्।।

शुद्धोद्धक स्नान –

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रतम्।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुकुमाक्तं नु गृह्यताम्।।

वस्त्र – उपवस्त्र का मन्त्र –

शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे।
देहालंकरणे वस्त्रे भवदभ्यो वाससी शुभे।।

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वरा:।।

चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

पुष्प, पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तित:।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

धूप –

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तम:।
आघ्रेय: सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यातम्।।

दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्य -

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ऋतुफल –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ताम्बूल –

पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहय्ताम्।।

दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसो :।
अनन्तपुण्यफलदमत: शान्तिं प्रयच्छ मे।।

आरती –

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव।।

पुष्पांजलि –

श्रद्धया सिक्तया भक्तया हार्दप्रेम्णा समर्पित:।
मन्त्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्।।

प्रार्थना –

नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे ।

सहस्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः।।

उपर्युक्त सभी मन्त्र लौकिक हैं। इसी प्रकार वैदिक मन्त्रों से भी पूजन किया जाता है।

1.3.1 तिलक, दीप पूजन

तिलक के सम्बन्ध में कई लोगों के मन में यह विचार आता है कि तिलक क्यों लगाया जाता है। किस प्रकार लगाना चाहिये आदि ... इत्यादि। भारतीय सनातन परम्परा में ऋषियों ने तिलक को अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया है। तिलक लगाने से आत्मशान्ति, श्रीवृद्धि, पवित्रीकरण, पापनाशक, आपदा हरण, तथा सर्वथा लक्ष्मी का साथ होता है। चित्त सदैव स्थिर रहता है।

तिलक धारण का लौकिक मन्त्र –

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी वसति सर्वदा।।

वैदिक मन्त्र -

सुचक्षाऽहमक्षीभ्याम् भूयास गॅू सुवर्चामुखेन सुश्रुतकर्णाभ्याम् भूयासम्।।

तिलक धारण महत्व -

स्नानं दानं तपो होमो देवता पितृकर्म्म च।
तत्सर्वं निष्फलं याति ललाटे तिलकं विना।।

यजमान तिलक -

चन्दनस्य महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।
आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी वसति सर्वदा।।

स्नान, होम, देव, पितृकर्म, दान, एवं तपस्यादि कर्म बिना तिलक के निष्फल हो जाते है। इसलिये उपासक को चाहिए पूजनादि से पहले तिलक धारण अवश्य करें।

यजमान सकुटुम्ब को तिलक धारण का मन्त्र निम्नलिखित हैं -

यजमान तिलकः –

भद्रमस्तु शिवंचास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा सपत्नादुर्ग्रहापस दुष्टसत्वाद्युपद्रवाः तमाल पत्रमालोक्य निष्प्रभाव भवन्तु ते।।

आयुष्मान भव कहकर आर्शीवाद दें।

यजमान पत्नी तिलक का मन्त्र -

ऊँ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण।

आयुष्मती सौभाग्यवती भव।

बालक तिलक - यावद् गंगा कुरूक्षेत्रे यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावद् राम कथा लोके तावत जीवतु बालकः।।

बालिका- तिलक ऊँ अम्बे अम्बिकेऽऽम्बालिके नमानयति कश्चन।
ससत्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

यदि कोई विधवा स्त्री पूजन में साथ बैठी हो तो उसके लिए तिलक का मन्त्र –

ऊँ तद्विष्णोः परमं पदœ सदा पश्यन्ति सूरयः दिंवीव चक्षुराततम्।।

दीप प्रज्वलन एवं दर्शन के कई मन्त्र है -

मन्त्र- चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।।

शिव पूजन में दीप का मन्त्र –

ऊँ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान वृणक्तु विश्वत: ।

अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम् ।।

दीपक पूजन का मन्त्र –

त्वं ज्योतिस्त्वं रविश्चन्द्रो विद्युदग्निश्च तारका:।

सर्वेषां ज्योतिषां ज्योतिर्दीपावल्यै नमो नम:।।

दीप ज्योतिषे नमः।

आचमन किसी कर्म के प्रारम्भ में आचमन की महती आवश्यक होती है। आन्तरिक पवित्रता के लिये भी आचमन आवश्यक है। यजमान पूर्व दिशा की ओर मुख करके आसन में बैंठें निम्नलिखित तीन मन्त्रों से तीन बार जल को पीयें (आचमन करें)

ऊँ केशवाय नमः। ऊँ नारायणाय नमः। ऊँ माधवाय नमः

तत्पश्चात् हाथ को प्रक्षालन के मन्त्र-

गोविन्दाय नमो नमः हस्त प्रक्षालनम्।

बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की तीन अँगुलियों से अपने ऊपर मन्त्र पढते हुए जल के छीटें दें।

मन्त्र

ऊँ पवित्रेस्थो वैष्ण्व्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।

ऊँ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्धां गतोडपिवा।

यः स्मरेत् पुण्डीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुद्धिः।।

जल छिड़कते हुए तीन बार बोलें - ऊँ पुण्डरी काक्षः पुनातु

शिखाबन्धनम्:- शिक्षा बन्धन करें या शिखा में हाथ लगायें मन्त्र

ऊँ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः सन्विते।

तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धि कुरूष्व में।।

बोध प्रश्न -1

1. आचमन क्यों किया जाता है ?
2. पवित्र होने के लिये जल को किस हाथ में लिया जाता है ?

1.3.2 शंख, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन तथा देवताओं के पृथक-पृथक पुष्पांजलि

शंख पूजन – शंख में दो दर्भ या दूब, तुलसी और फूल डालकर 'ओम' उच्चारण कर उसे सुवासित जल से भरें। इस जल को गायत्री मन्त्र से अभिमन्त्रित कर दे। फिर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शंख में तीर्थों का आवाहन करें –

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
तानि तीर्थानि शंखेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्।।

पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर शंख को प्रणाम करें –

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृत: करे।
निर्मित: सर्वदैवश्च पाञ्जन्य नमोऽस्तुते।।

शंख मन्त्र –

ऊँ शंख चन्द्रार्कदैवत्यं वरूणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापति विधादग्रे गंगा सरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि ती र्धानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयते्।।
शंख में गन्धाक्षत पुष्प चड़ाये और बोले-भू भुर्वःस्वः-
शंखस्ध देवतायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि-समपयामि।।

घन्टा पूजन मन्त्र –

ऊँ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुरू घण्टे वरं नादं देवतास्थानसंन्निधौ।।

भूर्भुव: स्वः घण्टस्थ देवताय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि सर्मपयामि तत्पश्चात् शंख घन्टा बजायें।

पुष्पाक्षत भगवान पर अर्पित पुनः पुष्प हाथ में ले निम्न मन्त्रों से भगवान को अर्पित करें।
हाथ में पुष्प-अक्षत लें स्वस्तिवाचन का पाठ करें। सभी शूभ कार्यो के प्रारम्भ में स्वस्तिवाचन का पाठ करना अनिवार्य होता है।

स्वस्तिवाचन – हरिः ऊँ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वतिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्ठनेमिःस्वस्ति नो वृहस्पतिद्धधातु ।।1।। पृषदश्वा मरूतः पृश्निमातः शुभँव्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह ।।2।।
भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम् देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राःस्थिरैरङगस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्व्यशैमहि देवहितं जदायुः ।3। शतोमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् पुत्रासो यत्र पितरो भवन्तिमानो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ।।4।। अदितिद्यौरदितिरन्तक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः

पञ्चजना अदितिजामदितिर्जनित्वम् ।।5।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृधिनी शान्तिरायः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शन्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिदेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।7।। यतो यत: समीहसे ततो नो अभयंकुरू । शं नः कुरू प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।8।। गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम् ।।9।। अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। सुशान्तिर्भवतु।। श्रीमन्महागणधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः । इष्टदेवताभ्यो नमः कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सिद्धिबुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।।

पुनः पुष्प लेकर पुनः पुष्प लेकर गणेश जी का स्मरण करें।

ऊँ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षोभालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।।
विधारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।।
अभीप्सितार्थसिद्धयर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।
सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममंगलम् ।
येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः ।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽघ्रियुगं स्मरामि ।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।
यत्र यागेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।
पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मोशानजनार्दनाः ॥
यत्र योगेश्वर: कृष्ण यत्र पार्थो धनुर्धर: ।
तत्र श्रीर्विजयोभूतिध्रुर्वानीतिमर्तिमम् ॥

चन्दन से भूमि में त्रिकोण बनायें उसके अक्षर उलय त्रिकोण बनायें यह षट्कोण बन जायेगा इसके बाहर गोल घेरा बनायें और इन वाक्यों की संस्कृत में उच्चारण करें-भूमौ चन्दनेन त्रिकोणं षट्कोण वर्तुलं वा विलिख्य उसके ऊपर चन्दन से ही शंख चक्र की आकृति की कल्पना मात्र करें या बनाये। इस में पुष्प रखें (संस्कृत तदुपरि आसनं) पुष्प के उपर अर्धा रखें (तदुपरि अर्धपात्रं) अर्ध में कुशा की पवित्री रखें और मन्त्र बोले-

ऊँ पवित्रे स्थो वैष्णव्यो सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यीच्छद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः॥

तत्पश्चात् अर्धा में जल चड़ाये और मन्त्र बोलें-

ऊँ शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्त्रवन्तु नः॥

तीर्थों का आवाह्न का मन्त्र -

गंगा च यमुना चैव गोदावरि सरस्वती ।
नर्मदा सिन्धु कावेरि जलेस्मिन्सन्निधि कुरू ॥

अर्धा में यव (जौ) गन्धाक्षत पुष्प छोड़े और कहें-

यव, जल, गन्धाष्ठत पुष्पादिं तूष्णी निक्षिप्त अर्धपांत्र सुसम्पन्नं अस्तु सुसम्पन्नम्-

तेन जलेन आत्मानं सर्वान सूर्याध्य दान सामाग्रीं च सम्प्रोक्ष्य।

एक पात्र (थाली) में

सर्वप्रथम सूर्य भगवान् को अर्घ्य दें, पुष्प से ध्यान करें-

ध्यानम् - ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसंनिविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः ॥

भूर्भुवः स्वः श्री भास्कर देवाय नमः ध्यानं समर्पयामि

पुष्प चड़ा दें। अक्षत घुमा कर पात्र में चढ़ायें।

भू0 श्री भा0 नमः अक्षतैः आवाहनं समर्पयामि

एक पुष्प चड़ायें भू0 भा0 आसनोपरि पुष्पं समर्पयामि

एक चम्मच जल चड़ायें भू0 भा0 पाद्यार्थे जलं समर्पयामि

जो अर्धां आपने स्थापित किया उसी से सूर्य को अर्घा दें।

मन्त्र- एहि सहस्रांशो तेजोरशि जगत्पते।

अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घं दिवाकर।।

नमोऽतु सूर्याय नमोडस्तु भावने।

भू0 भा0 अर्धां समर्पयामि पुनः पात्र में गन्धाक्षत चड़ाये और बोलों भू0 भा0 गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि मन्त्र-

ऊँ आ कृष्णेन रजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यन्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

सूर्य पूजन के अनन्तर भूतोपसादन करें।

बाये हाथ में अक्षत और पीली सरसों लेकर चारों दिशाओं की और छोड़े-

मन्त्र-

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।

सर्वेषामीवसेधेन ब्रह्मकर्म (पूजाकर्म) समारथे।।

पाखण्डकारिणो भूता भूमौ ये चान्तरिक्षगाः।

दिवि लोके स्थिता ये ज ते नश्यन्तु विशाज्ञया।

निग्च्छितां च भूतानां वर्त्म दधात्स्ववामतः।।

पुनः पूर्वोक्त रीति से अर्धा स्थापन करें, अर्धा स्थापन के पश्चात् कहें "अर्धपांत्र सुसम्पन्नम्-अस्तु सुसम्पन्नम् गतेन जलेन आत्मानं सर्वान् पेजन सामाग्रीं च सम्प्रोक्ष्य पुष्प लेकर हाथ जोड़े भैरव जी का स्मरण करें-

मन्त्र - अति तीक्ष्ण महा काया कल्पान्त दहनोपम।

भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातु महर्सि।।

बोध प्रश्न -2

1. स्वस्तिवाचन से पूर्व क्या किया जाता है ?
2. सर्वमंगलमंगल्ये .....।

..... नमोऽस्तुते।।

इस श्लोक को पूरा कीजिये?

3. भूतोत्साधन किस वस्तु से किया जाता है?

1.3.3 संकल्प का महत्व

संकल्प - पूजनादि में संकल्प की महती आवश्यकता है,

संकल्पेन बिना कर्म यत्किन्चित्कुरूतेनरः।

फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्याद्धिक्षयोभवते।।

मनुष्य संकल्प के बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्य का फल क्षय हो जाता है। (भविष्यपुराण)

संकल्पं विधितत्कुर्यात् स्नानन्दान-व्रतादि के स्नान, दान, व्रत आदि में विविधवत् संकल्प करना चाहिए।

संकल्प भूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवः।

व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाउस्भताः।।

किसी काम को करने की इच्छा का मूल संकल्प है।

यज्ञादि संकल्प से ही होते है। व्रतादि सभी धर्मों का आधार संकल्प ही कहा गया है।

संकल्प करने से मास, पक्ष, तिथी, वार देश काल का भी सभ्यक ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

हाथ में पुष्प अक्षत कुशाकी पवित्री जल लें और संकल्प पढ़े –

ऊँ विष्णुर्विष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरूषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽपि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टविंशतितमें कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरत खण्डे आर्यावर्तैकदेशे, अमुकक्षेत्ते (जिस स्थान में आप बैठै है) बौद्धावतारे विक्रमशकें अमुकनाम संवत्सरे श्रीसूर्ये अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुक शर्माऽहं ;वर्माऽहं गुप्तोऽहंद्ध मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य मम इह जन्मनि जन्मान्तरे वा

सर्वपापक्षयपूर्वक दीर्घायुः विपुल धन धान्य पुत्र पौत्राद्यनवच्छिन्न सन्ततिवृद्धि स्थिरलक्ष्मी कीर्तिलाभ शत्रुपराजय सदभीष्टसिद्धज्ञर्थं अमुक पूजन कर्मणः पूर्वांगत्वेन निर्विघ्नता सिद्धयर्थं गणपति पूजनं करिष्ये ।।

अभ्यास प्रश्न- 3

1. संकल्प के बिना कर्म .....जाता है?
2. पवित्री किस वस्तु की होती है?

1.4 सारांश-

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपने जाना कि पूजा के क्रम में क्या-क्या होता है। आवाहन से लेकर प्रार्थना तक उनका क्रम किस प्रकार है। आचमन से संकल्प तक की क्रिया बोध आपको हो चुका है। आरम्भिक पूजन क्रम में आवाहन , आसन, पाद्य , अर्घ्य , आचमन, स्नान, पंचामृत स्नान, शुद्धोदकस्नान शुद्ध जल से स्नान, वस्त्र, उपवस्त्र , चंदन, यज्ञोपवीत, पुष्प, दुर्वा गणेश जी के पूजन में , तुलसी विष्णु जी के पूजन में तुलसी, शमी शमीपत्र, अक्षत शिव में श्वेत अक्षत, देवी में रक्त अक्षत, अन्य में पीत अर्थात् पीला अक्षत सुगंधित द्रव्य इत्र, धूप, दीप, नैवेद्य प्रसा , ऋतुफल , ताम्बूल पान ,

दक्षिणा, आरती ,पुष्पाञ्जलि, मंत्रपुष्पांजलि , प्रार्थना आदि है। प्रत्येक पूजन में ये कर्म होते ही होते है। अन्य पूजन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। प्रधान पूजन में एक को प्रधान मानकर उनका पूजन किया जाता है।

1.5 शब्दावली

प्रसीदतु - प्रसन्न हो।

हस्त प्रक्षालनम्- हाथ धोना।

पुण्डरी काक्ष - कमल जैसे नेत्रों वाले।

मंगलायतन - मंग जैसी आकृति वाले।

हृदिस्थे- हृदय में स्थित।

शशिवर्णम्- चन्द्र जैसे वर्ण वाले।

शुक्लांबर धरम्- श्वेत वस्त्र धारण करने वाले।

1.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

अभ्यास प्रश्न – 1

1. आचमन आन्तरिक पवित्रता के लिये किया जाता है।
2. पवित्र होने के लिये जल को बॉये हाथ में लिया जाता है।

अभ्यास प्रश्न – 2

1. स्वस्तिवाचन से पूर्व शंख घण्टा का पूजन किया जाता है।
2. सर्वमंगलमंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
   शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते।।
3. भूतोत्साधन पिली सरसों से किया जाता है।

अभ्यास प्रश्न – 3

1. संकल्प के बिना कर्म आधा हो जाता है।
2. पवित्री कुशा की होती है?

1.7 संन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कर्मकाण्ड प्रदीप - संपादक आचार्य जनार्दन पाण्डेय
2. रूद्रष्टाध्यायी
3. नित्यकर्मपूजाप्रकाश
4. मन्त्रसंहिता

1.8 सहायक पाठ्यसामग्री

नित्यकर्मपूजाप्रकाश
ग्रहशान्ति
मन्त्रसंहिता
कर्मकाण्ड भास्कर

1.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पूजन क्या है ? मन्त्रसहित उसका क्रम लिखिये।
2. आरम्भिक पूजन से आप क्या समझते है ? स्पष्ट कीजिये।
3. स्वस्तिवाचन के मन्त्र लिखिये।
4. कर्मकाण्ड में पूजन का महत्व पर अपने शब्दों में निबन्ध लिखिये।

इकाई – 2 उपचार क्या है

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 उपचार विधान
2.4 उपचार के द्वारा पूजन विधान
2.5 मुख्य उपचार
2.6 संकल्प के द्वारा उपचार
2.7 मंत्रो के द्वारा उपचार
2.8 वैदिक मंत्रो से समाधान
2.9 सारांश
2.10 पारिभाषिक शब्दावली
2.11 अभ्यास प्रश्न
2.12 सन्दर्भ ग्रंथ सूची
2.13 निबंधात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-121 से सम्बंधित है। इस इकाई में आप पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन के अंतर्गत उपचार क्या है, किसे कहते है, तथा कितने प्रकार के होते है? इन सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

सर्वप्रथम प्राणियों [मनुष्यों] को पूजन पाठ कर्मकांड की आवश्यकता क्यों पड़ी यह विधान किसके द्वारा बनाया गया है? वेदों से लेकर पुराणों तक सभी शास्त्रीय ग्रंथो में पूजन तथा कर्मकांड का वर्णन किया गया है। देव पूजन कैसे हो मांगलिक द्रव्यों के अलग-अलग उपचार से देव पूजा का विधान कैसे होता है जिसके द्वारा हम इस विषय को समझने में सफल हो पाएँगे

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप-

- ❖ मंगलाचरण को समझा सकेंगे।
- ❖ पूजन में उपचार के विधान को समझा सकेंगे।
- ❖ उपचार क्या है किसे कहते है समझा पाएँगे।
- ❖ किस पूजन में कौन सा उपचार होगा समझा पाएँगे।
- ❖ सबसे मुख्य उपचार क्या है इस बारे में समझा सकेंगे।

2.3 उपचार विधान

मुख्य रुप से उन सभी पदार्थों या प्रक्रियाओं को उपचार कहते हैं। जो जिस समस्या से पीड़ित हो,जैसे कोई आध्यात्मिक रुप से पीड़ित हैं कोई शारीरिक रुप से पीड़ित हो, या अन्य प्रकार की समस्याओं से जो परेशान हैं उन सभी की समस्याओं का निदान करना ही **'उपचार'** कहलाता हैं। यदि किसी को ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ग्रहगति के कारण परेशानी हो रही हो तो वह व्यक्ति कर्मकांड का सहारा लेकर धर्मानुष्ठानों को करने के बाद उस समस्या से मुक्ति पा सकता हैं। जैसे किसी व्यक्ति को मानसिक समस्या है या शारीरिक समस्या है तो वह व्यक्ति मेडिकल औषधियों का सेवन कर उस रोग से मुक्ति प्राप्त करना ही उपचार कहलाता हैं। जिससे व्यक्ति की समस्या दूर हो सकती हैं। इसी प्रकार से आध्यात्मिक दृष्टि के द्वारा जीवन मैं आने वाली घटनाओं का कैसे ज्ञान हो उसके लिए देविक ग्रंथों का, शास्त्रों का सहारा लेना आवश्यक होता हैं।जिससे की उस ग्रह को शान्त किया जाय उसके लिए

पूजन रुपी उपचार करना आवश्यक होता हैं। जिससे उस व्यक्ति की सारी समस्याओं का समाधान हो सके।

2.4 उपचार के द्वारा पूजन विधान

जिस भी समस्या से व्यक्ति ग्रसित है जैसे किसी को उदर की समस्या है तो उसका उपचार केसे हो सकता हैं इसके लिए धर्म शास्त्रों का सहारा लेकर ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ग्रहों का विचार कर उस समस्याओं से सम्बंधित ग्रह का कर्मकांड के द्वारा धर्मानुष्ठानों ,पूजन पाठ ,जप, यज्ञ करना चाहिए।

जैसे किसी व्यक्ति की शनि की दशा चल रही हो गोचर कुंडली मैं भी शनि पीड़ित हो तो इस स्थिति मैं इस दशा वाले व्यक्ति को षोडशोपचार विधि के द्वारा पूजन करना चाहिए। पंचांग पूजन से लेकर नवग्रह पूजन पर्यन्त सभी मण्डलों का मंत्रों के द्वारा पूजन कर जिस ग्रह से वो व्यक्ति परेशान उस ग्रह का जप कर यज्ञ करना चाहिए। इसी प्रकार से सभी समस्याओं का उपचार पूजन के द्वारा संभव है। इसी प्रक्रिया के द्वारा उस व्यक्ति का सारा कष्ट दूर होती हैं। जिसके बाद वह अपने जीवन मैं सुख प्राप्त करता रहता हैं। इस विधि का उपयोग करने से यह कहा जा सकता है कि किसी भी समस्या का उपचार हो सकता हैं।

2.5 मुख्य उपचार

मुख्य रुप से शास्त्रों मैं छह प्रकार के उपचार के विषय मैं कहां गया है, किस परिस्थिति मैं व्यक्ति को कोन सा उपचार करना चाहिए जिसके द्वारा हमारी समस्याओं का निदान हो सके।

1. पंचोपचार
2. दशोपचार
3. षोडशोपचार

ये तीन प्रकार के उपचार मुख्य हैं। इनमें से भी षोडशोपचार को विशेष रुप से स्वीकार किया गया है जिसके द्वारा पूजन विधि मैं कोई भी रुकावट न आ सके इस प्रकार से पाद्य अर्घ्य से लेकर आरार्तिक्य तक इस उपचार का प्रयोग पूजन कार्य मैं किया जाता हैं। जिससे पूजन मैं कोई भी रुकावट उत्पन्न न हो सके और कार्य आगे बढ़ते रहें इसके लिए इन मुख्य उपचारों का वर्णन प्राप्त होता हैं। जिससे के बल पर हम भी धार्मिक अनुष्ठान कर सकते हैं। पंचोपचार मैं पांच वस्तुओं से पूजन कार्य करनें का विधान हैं,इसी तरह भिन्न भिन्न उपचारों मैं क्रिया तथा वस्तु का विस्तार हो जाता हैं मुख्य उपचारों से यदि देवताओं का पूजन किया जाता है तो उसका फल अलग होता हैं यदि अन्य उपचारों

को ज्ञान नहीं हैं तो केवल षोडशोपचार इसका ज्ञान हो जाने पर भी हम सभी देवताओं का उपचार कर सकते हैं।

2.6 संकल्प के द्वारा उपचार

हमारी भारतीय परंपरा मैं किसी भी कार्य को करनें से पूर्व गणेश जी का ध्यान पूजन किया जाता है। जिस कार्य को हम करने जा रहें हैं उस कार्य से पहले शास्त्रों के अनुसार संकल्प का विधान हैं **संकल्प का शाब्दिक अर्थ प्रतिज्ञा है**, जिस कार्य को मैं करनें जा रहा हूं वह कार्य शीघ्र ही सफल हो उस कार्य की सफलता के लिए संकल्प किया जाता हैं।

हमारे शास्त्रीय ग्रंन्थों मैं कहां गया हैं कि बिना गणेश जी के आज्ञा के बिना तथा संकल्प के बिना कोई भी कार्य सफल नहीं होता हैं।

तन्मेमन:शिवसंकल्पमस्तु

जिस भी देवताओं या देवीयों का हम उपचार के द्वारा पूजन करते हैं उस पूजन मैं संकल्प आवश्यक होता हैं जिससे वह पूजन सफल हो सकें तथा संकल्प मैं उस व्यक्ति की सारी मनोकामनाएं होती हैं। वर्तमान से लेकर भविष्य पर्यंत कार्य की सफलता तभी संभव है जब हम देवताओं का पूजन, उपचार संकल्प के द्वारा करते हैं। आप इस ईकाई से समझ गये होंगे की विना संकल्प के हम देवताओं का उपचार नहीं कर सकते हैं।इन सभी उपचारों का क्रम संकल्प के बाद मैं प्रारम्भ होगा। इसलिए सभी प्रकार की समस्याओं को दूर कैसे किया जाए उन सबके लिए यह शास्त्रीय विधि आवश्यक हैं। शास्त्रीय विधि के अनुसार सभी प्रकार के उपचारों की सफलता सिद्ध होती हैं। **भविष्य पुराण में महर्षि वेदव्यास कहते है** कि संकल्प के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नही होता है।

संकल्पेन विना कर्म यत्किंन्चितकुरुते नर:
फलं चाप्यल्यपकं तस्य धर्मस्याद्धिक्षयोभवते।।
संकल्प भूत:कामों वो यज्ञा: संकल्पसम्भव:
व्रतानियमधर्माश्च सर्वे संकल्पजास्भता:।।

2.7 मंत्रो के द्वारा उपचार

पंचोपचार-

कर्मकांड में पंचोपचार पूजन को मुख्य रूप से ग्रहण किया गया है। पंचोपचार पूजन मैं पाँचों उपचारो के द्वारा विधि पूर्वक पूजन किया जाता है। जो इस प्रकार है

1.गन्ध
2.पुष्प
3.धूप
4.दीप
5.नैवेद्य

गन्ध (चन्दन)

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

सर्वप्रथम पंचोपचार पूजन में देवी देवताओ का गंध यानि चन्दन के द्वारा पूजन कर चन्दन लेपन किया जाता है।

पुष्प-

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥
पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि

देवी देवताओ को चन्दन के बाद पुष्प अर्पण किया जाता है।

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

इसी क्रम में पुष्प अर्पण करने के बाद भगवान को धूप अर्पण किया जाता है।

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

धूप देने के बाद देवी देवताओं को दीप दिखाया जाता है।

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

इसी क्रम में दीप के बाद देवताओं को अनेक प्रकार के पकवानों के द्वारा भोग लगाया जाता है।

2.8 वैदिक मंत्रो के द्वारा समाधान

गन्ध-

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

भगवान का पूजन अनेकानेक वैदिक तथा पोराणिक मंत्रो के द्वारा किया जाता है। इन सभी वैदिक मंत्रो में भगवान की प्रार्थना की गयी है। पंचोपचार पूजन में पाच वस्तुओ के द्वारा परमात्मा का विधि विधान से पूजन अर्चन किया जाता है। जिससे की मनुष्य सुख प्राप्त कर सके। पंचोपचार में यह वैदिक मंत्र शुक्लयजुर्वेद से लिया गया है। जिसमे कहा गया है कि –

सृष्टिसाधन-योग्य या देवताओं और सनक आदि ऋषियों ने मानस याग की सम्पन्नता के लिये सृष्टि के पूर्व उत्पन्न उस यज्ञ साधन भूत विराट् पुरुष का प्रोक्षण किया और उसी विराट् पुरुषसे ही इस यज्ञ को सम्पादित किया।

पुष्प-

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥

इसी प्रकार से पंचोपचार पूजन में परमात्मा का पुष्प के द्वारा ध्यान तथा पुष्प को परमात्मा के चरणों में अर्पित किया जाता है। शुक्लयजुर्वेद के पुरूसुक्त में इस मंत्र के द्वारा परमात्मा यानि विराट पुरुष का ध्यान किया गया है। जब यज्ञसाधन भूत इस विराट् पुरुष की महानारायण से प्रेरित महत्, अहंकार आदि की प्रक्रिया से उत्पत्ति हुई, तब उसके कितने प्रकारों की परिकल्पना की गयी ? उस विराट पुरुष के मुँह, भुजा, जंघा और चरणोंका क्या स्वरूप क्या है इनका ध्यान किया गया है।

धूपं -

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्याः गुं शूद्रो अजायत ॥

पंचोपचार पूजन में परमात्मा का धूप के द्वारा इस वैदिक मंत्र से पूजन किया जाता हैं। इस मंत्र में विराट पुरूष के मुख से ही सभी वर्णों की उत्पति हुयी हैं। ब्राह्मण उस यज्ञोत्पन्न विराट् पुरुषका

मुखस्थानीय होनेके कारण उसके मुखसे उत्पन्न हुआ, क्षत्रिय उसकी भुजाओंसे उत्पन्न हुआ, वैश्य उसकी जाँघोंसे उत्पन्न हुआ तथा शूद्र उसके चरणोंसे उत्पन्न हुआ

दीपं-

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

जब भगवान का पंचोपचार पूजन में दीप के द्वारा पूजन किया जाता हैं तो इस मंत्र के माध्यम से देवताओं की उत्पति केसे हुयी इन सभी का ध्यान किया गया हैं। विराट् पुरुषके मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, नेत्र से सूर्य उत्पन्न हुआ, कानसे वायु और प्राण उत्पन्न हुए तथा मुखसे अग्नि उत्पन्न हुई हैं।

नैवेद्य-

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीष्णोद्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

पंचोपचार पूजन में अंतिम वस्तु के रूप में भगवान को भोग लगाया जाता है। निम्न मंत्र में विराट पुरूष का ध्यान करते हुवे उस विराट् पुरुषकी नाभिसे अन्तरिक्ष उत्पन्न हुआ और सिरसे स्वर्ग प्रकट हुआ। इसी तरहसे चरणोंसे भूमि और कानोंसे दिशाओंकी उत्पत्ति हुई। इसी प्रकार देवताओं ने उस विराट् पुरुषके विभिन्न अवयवों से अन्य लोकों की कल्पना की हैं।

2.9 सारांश

इस ईकाई मैं हम उपचारों के माध्यम से समस्या का निदान कैसे कर सकते हैं, इसका विस्तृत वर्णन किया गया है। उपचार का अर्थ किसी भी समस्या को दूर करने के लिए किया जाता है। यदि व्यक्ति विशेष को शारीरिक समस्या, मानसिक समस्या, या पारिवारिक समस्या हो तो हम अध्यात्म तथा ज्योतिष शास्त्र का सहयोग लेकर उस समस्या का निदान कर सकते हैं। जैसे किसी व्यक्ति को ग्रहजनित समस्या है दशाओं के द्वारा तो उस व्यक्ति को गोचर कुंडली, जन्म कुंडली के द्वारा उस व्यक्ति की समस्या का निदान कैसे हो उसके लिए पौरोहित्य, कर्मकांड, पूजा-पाठ, (अनुष्ठान) के माध्यम से उस समस्या का वैदिक मंत्रों के द्वारा या पौराणिक मंत्रों के द्वारा, जप, यज्ञ करें उस समस्या से मुक्ति पा सकते यहां पर यह भी ध्यान देना आवश्यक हैं कि यदि इन पौरोहित्य कर्म के द्वारा कितना लाभ प्राप्त होगा ओर कितना नहीं होगा इसका भी विचार किया जाना चाहिए। वस्तुत: हमने अनुसंधान के माध्यम से देखा है कि उस व्यक्ति की समस्या केवल पौरोहित्य कर्मकांड शास्त्र के द्वारा पूर्ण रूप से नहीं होता हैं। कुछ समस्या ऐसी होती है कि उस व्यक्ति को भोगना ही पड़ता हैं क्योंकि उसे अपने

प्रारब्ध मैं लिखे सभी समस्या से आगे बढना होता हैं। इसलिए जितना हो सके उस कष्ट को दूर करनें के लिए उपचार की आवश्यक पड़ती हैं। उपचार के द्वारा समस्या का निदान करके वह सुखी हो सकता हैं। यदि कोई व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित हैं तो वह औषधियों के द्वारा भी उसका उपचार कर सकता हैं परंतु यहां पर उपचार का अर्थ प्रायः एक ही मालूम पड़ता हैं दैविक समस्या हो तो कर्मकांड के द्वारा उपचार किया जा सकता हैं। षोडशोपचार,या पंचोपचार पूजन के द्वारा उस व्यक्ति का उपचार करना चाहिए।

2.10 पारिभाषिक शब्दावली

मंगलाचरण	-	शुभ कार्यों की सफलता के लिए
संकल्प	-	प्रतिज्ञा
मांगलिक द्रव्य	-	सभी शुभ वस्तु
उपचार	-	समस्याओं का निदान
अनुष्ठान	-	पूजा पाठ ,शुभ कार्य
औषधि	-	दवाई
पंचोपचार .	-	पांच प्रकार से पू जन मैं उपचार,
पौरोहित्य	-	पुर,(नगर) का हित
पीड़ित	-	दुःखी

2.11 अभ्यास प्रश्न

1. उपचार किसे कहते हैं - पदार्थ या प्रक्रियाओं को
2 . मंगलाचरण का अर्थ - शुभ कार्य मै मंगल हो
3. संकल्प क्यो करते - मनोकामनाओं को पूर्ण करनें के लिए या किसी कार्य की इच्छा का मूल संकल्प कहलाताl
4. आचमन तीन बार ही क्यों करते हैं - क्योंकि मनुष्यों के तीन शरीर होते हैं।
5. उपचार के कितने प्रकार होते हैं - 6 प्रकार।
6. मुख्य उपचार कोन सा हैं - षोडशोपचार।
7. भगवान विष्णु की पूजा किस उपचार के द्वारा किया जाता है - षोडशोपचार के द्वारा।
8. तन्मेमन: शिवसंकल्पमस्तु कहां से लिया गया हैं - रुद्राष्टाध्यायी ।

9. आध्यात्मिक उपचार मैं
क्या करना चाहिए - षोडशोपचार पंचोपचार,

10 .मानसिक तनाव मै कोन सा
उपचार करना चाहिए - औषधीय उपचार।

11 . उपचार किस विधि से करना चाहिए - शास्त्रीय विधि से।

2.12 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्म पूजाप्रकाश,
कर्मकांड भास्कर,
रुद्राष्टाध्यायी,

2.13 निबंधात्मक प्रश्न

1.मंगलाचरण किसे कहते इसका वाचन पहले क्यों किया जाता हैं इसका वर्णन कीजिए।
2.संकल्प से आप क्या समझते हैं श्लोक सहित इसका विस्तृत विवरण दीजिए।
3.उपचार के कितने प्रकार हैं इनमें से प्रमुख उपचार का वर्णन कीजिए।
4.आध्यात्मिक उपचार से आप क्या समझते हैं।
5. उपचार का शाब्दिक अर्थ क्या है इसका प्रयोग कहां किया जाता है वर्णन कीजिए।

इकाई - 3 उपचार के भेद

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 उपचार की परिभाषा

3.4 पूजन में उपचार की भूमिका

3.5 उपचार के भेद

3.6 उपचार के द्वारा समस्या का निदान

3.7 मुख्य प्रकार के उपचार

3.8 वैदिक मंत्रो के द्वारा पंचोपचार पूजन में उपचार विधान

3.9 वैदिक मंत्रो के द्वारा षोडशोपचार पूजन में उपचार विधान

3.10 सारांश

3.11 पारिभाषिक शब्दावली

3.12 अभ्यास प्रश्न

3.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

3.14 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

3.15 निबंधात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत ईकाई वैदिक कर्मकाण्ड में डिप्लोमा BAKA(N)121 से संबंधित है। जिसकी ईकाई का शीर्षक है – 'उपचार के भेद'। वस्तुत: देखा जाए तो बिना उपचार के किसी भी कार्य की पूर्णता नहीं होती हैं। किसी भी समस्या का निदान ही उपचार हैं परंतु उपचार के कितने प्रकार है, किस उपचार के द्वारा किस समस्या का निदान हो सकता हैं इन सभी उपचारों के प्रकारों के माध्यम से इनका निवारण किया जा सकता हैं। उपचार का सम्बन्ध समाधान से है,यानि पूजन कार्य मैं वैदिक, लौकिक मंत्रों से जब हम पूजन करते हैं तो उस समय षोडशोपचार, पंचोपचार, शतशोपचार, दशोपचार, इन सभी उपचारों के द्वारा उस समस्या का निदान शास्त्रीय पद्धति से किया जाता हैं। इस इकाई मैं हम उपचारों के कितने भेद है किस उपचार को करनें से किस फल की प्राप्ति होती हैं इन सभी बिन्दुओं का हम अध्ययन करेंगे।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप लोग निम्नलिखित विषय का अध्ययन करेंगे-

- ❖ उपचार की परिभाषा को जानेंगे।
- ❖ उपचार के कितने भेद हैं इन सभी भेदों को समझ सकेंगे।
- ❖ कर्मकांड मैं उपचार की क्या भूमिका हैं इस विषय को जानेंगे।
- ❖ मुख्य उपचार कौन-कौन से हैं उनके बारे मैं समझ सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार, पंचोपचार, उपचार को मंत्र सहित जान पायेंगे।
- ❖ वैदिक मंत्रों के द्वारा उपचार कैसे किया जाता हैं इस विषय की जानकारी प्राप्त करेंगे।

3.3 उपचार की परिभाषा

सभी पदार्थों या प्रक्रियाओं को उपचार कहते हैं। किसी भी समस्या का समाधान आध्यात्मिक रूप मैं हो सके जैसै किसी व्यक्ति को मानसिक तनाव रहता है तो वह कर्मकांड के माध्यम से यज्ञ के द्वारा पूजन पाठ द्वारा अपनी मानसिक समस्या का समाधान कर सकते हैं। क्योंकि मानसिक समस्या को दूर करने के लिए अन्य उपचारों का सहारा भी ले सकते हैं। मानसिक समस्या के लिए कर्मकांड के साथ साथ योगशास्त्र का भी सहयोग लेकर इस समस्या से छुटकारा पा सकते हैं, षोडशोपचार, पंचोपचार मुख्य उपचार कहे गये हैं जिसके द्वारा सारी समस्याओं का निदान किया जा सकता हैं।

3.4 पूजन मैं उपचार की भूमिका

प्राय हम सभी देखते हैं कि कर्मकांड करते समय उपचार कि आवश्यकता होती हैं जो कर्मकांड को सम्पन्न करता हैं वह ब्रह्मा कहलाता हैं ब्रह्मा का कार्य पूजन मैं क्रिया करना जैसें हाथ के द्वारा भगवान को पाद्य अर्घ्य धूप, दीप, दिया जाता है वह उपचार कहलाता हैं। यदि केवल आचार्य मंत्रों के पढ़े परन्तु हस्तक्रिया न हो तो वह मंत्र निष्फल हो जाता हैं। इसलिए मंत्रों के साथ साथ हस्तक्रिया का होना आवश्यक होता हैं जिससे उस पूजन मैं किए गये उपचार का फल हमें प्राप्त हो सके। बिना उपचार का कोई भी पूजन नहीं हो सकता हैं जिस प्रकार हमारे शरीर मैं मुख का स्थान है उसी प्रकार पूजन मैं उपचार का स्थान होता हैं जिससे कि शास्त्रीय पद्धति से मंत्रों के द्वारा उपचार की भूमिका विशेष मानी जाती है।

3.5 उपचार के भेद

मुख्यतः उपचार छह प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित इस प्रकार से हैं।

1.पंचोपचार

2.दशोपचार

3.षोडशोपचार

4.द्वात्रिंशोपचार

5.च:तुषष्ट्योपचार

6.एकोनद्वात्रिंशो पचार

पंचोपचार- इस पंचोपचार पूजन मैं पांच उपचारों के द्वारा सभी देवी देवताओं का पूजन किया जाता हैं, जो इस प्रकार से हैं।

1.गन्ध

2.पुष्प

3.धूप

4.दीप

5.नैवेद्य

देवी देवताओं के पूजन करने मैं यदि समय का अभाव हो तो इस स्थिति मैं पंचोपचार विधि के द्वारा देवताओं का पूजन करना चाहिए।

1.गन्ध – देवताओं का पूजन करते समय चन्दन अर्पित करना चाहिए।

2.पुष्प – गन्ध चढ़ानें के बाद पुष्पं समर्पयामि पुष्प को चढ़ाना चाहिए।

3.धूप -गन्ध अर्पित करनें के बाद धूप की सुगंध देवताओं को अर्पित करें।

4.दीप – धूप अर्पित करके देवताओ को दीप का दर्शन करना चाहिए।

5.नैवेद्य -सभी वस्तुएं भगवान को अर्पण कर नैवेद्य चढ़ाना चाहिए।

इसके बाद आचमन देकर प्रार्थना पूर्वक पुष्पांजलि करें यही भगवान् के पंचोपचार पूजन का विधान शास्त्रों मैं कहां गया हैं।

दशोपचार - इस दशोपचार पूजन मैं देवी देवताओं का दश प्रकार के उपचार के द्वारा पूजन करनें का विधान हैं। जैसे

1.पाद्यं
2.अर्घ्यं
3.आचमनं
4.स्नानीय जलं
5.वस्त्रं
6.गन्धं
7.पुष्पं
8.धूपं
9.दीपं
10.नैवेद्यं

षोडशोपचार - इस षोडशोपचार पूजन विधान मैं देवी देवताओं का सोलह प्रकार के उपचारों से पूजन करना चाहिए। जो इस प्रकार से हैं।

1.पाद्यं
2.अर्घ्यं
3.आचमनं
4.स्नानीय जलं
5.वस्त्र

6.आभूषणं

7.गन्धं

8.पुष्पं

9.धूपं

10.दीपं

11.नैवेद्यं

12.आचमनं

13.ताम्बूलं

14.स्तवपाठ

15.तर्पण

16.नमस्कारं

द्वात्रिंशोपचार – इस पूजन मैं देवताओं का 32 उपचारों के माध्यम से पूजन अर्चन किया जाता हैं।

1.ध्यानं	11.मधु स्नानं	20. पुष्पं	29. दक्षिणां
2.आवाहनं	12. शर्करा स्नानं	21.दूर्वाड़कुरं	30.आरार्तिक्यं
3.आसनं	13. पंचामृत स्नानं	22.आभूषणं	31.पुष्पांजलिं
4.पाद्यं	14.गन्धोधक स्नानं	23.सुगंधित तैलं	32.ताम्बूलं
5.अर्ध्यं	15.शुद्धोदक स्नानं	24.धूपं	
6.आचमनं	16. वस्त्रं	25.दीपं	
7.स्नानं	17. उपवस्त्र-	26 नैवेद्यं	
8.पय स्नानं	18.गन्धं	27.करोत्वर्तनं	
9.दधि स्नानं	19.अक्षतं	28.अखण्ड ऋतु फलं	
10.घृत स्नान			

.

3.6 उपचार के द्वारा समस्या का निदान –

जब इन सभी उपचारों के माध्यम से देवी देवताओं का पूजन अर्चन किया जाता हैं तो वह व्यक्ति जिस समस्या से ग्रसित हैं उस व्यक्ति की समस्या दूर हो जाती हैं। परन्तु किसको कोन सी समस्या है इसकी जानकारी का होना आवश्यक हैं यदि जानकारी का अभाव हैं तो समस्या का निदान असंभव होता हैं, यदि किसी व्यक्ति का पढ़ाई मैं मन नही लगता है तो उस व्यक्ति के लिए गणेश जी का षोडशोपचार से पूजन अर्चन करना चाहिए। वैदिक मंत्रों के द्वारा , षोडशोपचार से गणपति का पूजन कर इस समस्या का निदान संभव हैं।

3.7 मुख्य प्रकार के उपचार

मुख्य रुप से उपचारों के अलग अलग प्रकार होते हैं।परंतु शास्त्रों मैं षोडशोपचार,तथा पंचोपचार को मुख्य रुप से स्वीकार किया गया हैं। षोडशोपचार पूजन मैं सोलह प्रकार की वस्तुओं से पूजन किया जाता हैं जो इस प्रकार से हैं।

1. पाद्यं – सबसे पहले देवताओं का जल के द्वारा पैरों का प्रक्षालन किया जाता हैं।
2. अर्ध्यं – जल के द्वारा हस्तों का प्रक्षालन किया जाता हैं।
3. आचमनं – शुद्ध जल के द्वारा देवताओं के मुख का प्रक्षालन किया जाता हैं।
4. स्नीयजलं – जल के द्वारा देवताओं का स्नान किया जाता हैं।
5. वस्त्र - देवताओं को नवीन वस्त्र दिया जाता हैं।
6. आभूषणं- वस्त्र के बाद देवताओं को आभूषण का श्रृंगार करते हैं।
7. गन्धं - देवताओं को गन्ध यानि चन्दन लगाया जाता हैं।
8. पुष्पं - देवताओं को पुष्पमाला धारण कराते हैं।
9. धूपं - पुष्प माला के बाद देवताओं को धूप चढ़ाया जाता हैं।
10. दीपं - इसके पश्चात् देवताओं को दीप का दर्शन कराते हैं।
11. नैवेद्य - देवताओं को अर्पण किया जाता हैं।
12. आचमनं - नैवेद्य के बाद आचमन जल दिया जाता हैं।

13. ताम्बूल - इसके पश्चात् देवताओं ताम्बूल फल दिया जाता हैं।

14. स्तवपाठ - यह सब देवताओं को अर्पण करनें के बाद प्रार्थना करते हैं।

15. तर्पण - प्रार्थना के बाद देवताओं को तर्पण दिया जाता हैं।

16. नमस्कारं - अन्त मैं देवताओं को सब कुछ अर्पण कर नमस्कार करना चाहिए।

इसी प्रकार से देवताओं को षोडशोपचार पूजन कर देवताओं को प्रसन्न करना चाहिए। यह षोडशोपचार पूजन ही मुख्य उपचार कहलाता हैं।

3.8 वैदिक मंत्रो के द्वारा पंचोपचार पूजन में उपचार विधान

पंचोपचार पूजन में इन पांच उपचारों के द्वारा पूजन किया जाता है 1

गन्धं -

त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।

पुष्पं -

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ।।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयन्धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितम सस्नितमं पप्रितम जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

दीपम्

ॐ अग्निज्योंतिज्योंतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

नैवेद्यम्-

नैवेद्य को प्रोक्षित कर गन्ध पुष्प से आच्छादित करें। तदन्तर जल चतुष्कोण का घेरा लगाकर भगवान के सम्मुख भोग लगाये l

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीष्णोद्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

3.9 वैदिक मंत्रो के द्वारा षोडशोपचार पूजन में उपचार विधान

पाद्यं

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि . ॥
आचमन लेकर भगवान के पेरो में जल अर्पण करे

अर्घ्यं - ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥ हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि अर्घ्य का जल छोड़े।)

आचमनं

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी आचमनके लिये जल समर्पित करे ।)

स्नानीय जलं

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥
स्नानीयं जलं समर्पयामि

वस्त्र

ॐ युवा सुवासा परिवीत आगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः ।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो 3 मनसा देवयन्तः ॥

आभूषण

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥
अलङ्करणार्थ आभूषणानि समर्पयामि

चन्दन-

त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ।।

पुष्प-

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।
ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ।।
पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयन्धूर्वामः ।
देवानामसि वह्नितम : सस्नितमं पप्रितम जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वच ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।। ज्योतिःसूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ।।

नैवेद्यम्-

नैवेद्य को प्रोक्षित कर गन्ध पुष्प से आच्छादित करें। तदन्तर जल चतुष्कोण घेरा लगाकर भगवान को नेवेद्य का भोग लगाये

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा। ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

आचमनं –

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी।

ताम्बूल –

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।

वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शब्द्धविः ॥ .

एलालवङ्गपूगीफलयुतं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लवंग तथा पूगीफलयुक्त ताम्बूल अर्पित करे।)

स्तवपाठ-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

तर्पणं – भगवान की स्तुति के बाद जल के द्वारा तर्पण करना चाहिये l

नमस्कारः –

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

नमस्कारान् समर्पयामि ।

3.10 सारांश

इस ईकाई मैं उपचार के कितने भेद है इन सभी उपचार के माध्यम से पूजन क्रम को सम्पन्न किया जाता हैं। पंचोपचार मैं पांच उपचारों के द्वारा, षोडशोपचार मैं सोलह उपचारों के द्वारा, दशोपचार मैं दश उपचारों के द्वारा, बत्तीस प्रकार के उपचारों के माध्यम से इस पूजन विधान को सम्पन्न किया जाता हैं। जिससे की पूजन उपचार के द्वारा सभी व्यक्तियों को लाभ प्राप्त हो सकें भारतीय संस्कृति मैं समस्या का निदान कैसे हो,सुख की प्राप्ति कैसे मिल सके अनेकानेक आदि व्याधियों से कैसे सुरक्षित हो सके। इन सभी के लिए ज्योतिष शास्त्र तथा कर्मकांड का सहयोग लेकर के अनुसंधान करके इन सभी आधि व्याधियों का , समस्याओं का, रोगों का निवारण कर्मकांड के माध्यम से उपचार के द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। प्राचीन काल से यह सृष्टि प्रक्रिया चली आ रही हैं, उस काल मैं भी जीवों के ऊपर अनेकानेक कष्ट तथा आधि व्याधि ,जरा रोग ,यह सब शरीर को कष्ट देते थे। परन्तु उस काल मैं उस कष्ट को कैसे दूर किया जाय इस पर हमारे प्राचीन ऋषियों ने गहनतम चिन्तन के साथ साथ शास्त्रों का भी विधि विधान से स्वाध्याय कर इन सभी कष्टों को दूर करनें के लिए काल शास्त्र को

आधार मानकर ज्योतिषीय गणना के साथ समस्या का मूल कारण क्या हैं उन सबका पता लगाया तथा आध्यात्मिक दृष्टि से कर्मकांड के द्वारा इन सभी का उपचार किया गया l जिससे की उस उपचार का निदान संभव हो सका इसी प्रकार से आयुर्वेद उपचारों के द्वारा भी ऋषियों ने औषधि का निर्माण किया तथा उस औषधि से जीवों के कष्ट का ज्वर का समाधान हो पाया, इसलिए उपचार के भेद नामक ईकाई मैं आप सभी उपचार के बारे मैं तथा उपचार के भेद के विषय मैं इसके द्वारा समस्या का समाधान कैसे हो सके इन सभी को जान गये होंगे।

3.11 पारिभाषिक शब्दावली

उपचार	समस्या का निदान
पंचोपचार	पांच प्रकार के उपचार
वैदिक	वैदिक मंत्रों से उपचार
प्रकार	उपचार के भेद
अर्पण	न्योछावर प्रभु को वस्तु का अर्पण
अर्ध्यं	प्रभु को पात्र के द्वारा जल अर्पित करना
आचमनं	जल के द्वारा मुख प्रक्षालन
दशोपचार	दश प्रकार के उपचार
स्तवपाठ	भगवान की स्तुति करना
षोडशोपचार	सोलह प्रकार के उपचार
ताम्बूलं	इलायंची,लवगं, सुपारी सहित
मांगलिक	शुभ कार्य मैं कार्य की सम्पन्नता
आभूषण	स्वर्ण, चांदी से युक्त वस्तु
तर्पण	जल के द्वारा तर्पण प्रभु को अर्पण करना
द्वात्रिंशोपचार	32प्रकार के उपचार
नैवेद्यं	प्रभु को भोज्य पदार्थ का भोग लगाना
एकोनद्वात्रिंशोपचार	32प्रकार के उपचार
निष्फल	व्यर्थ

3.12 अभ्यास प्रश्न

1.उपचार किसे कहते हैं।

2.आचमन का क्या तात्पर्य हैं

3.मुख्य उपचार कोन कोन से हैं

4.आध्यात्मिक उपचार के लिए कोन सा विधान सही है

5.उपचारों का विधान कहां पर किया जाता हैं

6.पंचोपचार किसे कहते हैं

7.दशोपचार का क्या विधान हैं

8.उपचार के कितने भेद हैं

9.द्वात्रिंशोपचार पूजन मैं कितने उपचार आते हैं

10.षोडशोपचार मैं अन्तिम उपचार क्या हैं

11 .दशोपचार मैं पहला उपचार क्या हैं

3.13 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.पदार्थ या प्रक्रियाओं के निदान को

2.आचमन के द्वारा मुख की शुद्धि होती हैं।

3.षोडशोपचार, पंचोपचार को मुख्य उपचार कहते हैं।

4. कर्मकांड के द्वारा पूजनका विधान करना।

5.जहां पर शारीरिक समस्या आती रहती है ।

6.गन्ध, पुष्प,धूप,दीप, नैवेद्य।

7.दश प्रकार के उपचार को दशोपचार कहते हैं।

8.उपचार के 6भेद होते हैं।

9. बतीस उपचार आते हैं

10.नमस्कार अन्तिम उपचार हैं

11.पाद्यं

3.14 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्म पूजा प्रकाश

कर्मकांड भास्कर

3.15 निबंधात्मक प्रश्न

1. उपचार किसे कहते हैं इसके कितने प्रकार है क्रमानुसार वर्णन कीजिए।

2. उपचार मैं पूजन की क्या भूमिका हैं विस्तार पूर्वक स्पष्ट कीजिए।

3. मुख्य प्रकार के उपचारों का मंत्र सहित वर्णन कीजिए।

4. पंचोपचार पूजन का वैदिक मंत्र सहित स्पष्ट उल्लेख कीजिए।

5. षोडशोपचार पूजन का लौकिक मंत्रों के द्वारा विस्तार से वर्णन कीजिए।

6. द्वात्रिंशोपचार (32) प्रकार के उपचारों का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।

इकाई - 4 प्रमुख उपचार

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 उपचार की परिभाषा

4.4 उपचार का महत्व

4.5 उपचार के प्रकार

4.6 प्रमुख उपचार

4.5 प्रमुख उपचार के प्रकार

4.7 प्रमुख उपचार के द्वारा पंचोपचार पूजन में उपचार की भूमिका

4.8 प्रमुख उपचार के द्वारा षोडशोपचार पूजन में उपचार का विधान

4.9 सारांश

4.10 पारिभाषिक शब्दावली

4.11 अभ्यास प्रश्न

4.12 अभ्यास प्रश्नों का उत्तर

4.13 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

4.14 निबंधात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत ईकाई वैदिक कर्मकाण्ड डिप्लोमा BAKA(N)-121 की ईकाई संख्या 4 (उपचार के भेद शीर्षक के रुप मैं सम्बन्धित दिखाई पड़ता हैं। प्राय: देखने में आता है की उपचार के द्वारा किसी भी वस्तु का समाधान नही हो सकता है। किसी भी समस्या का समाधान होना ही उपचार कहलाता है। किन्तु यह इस बात का ध्यान रखना आवश्य है की किस प्रकार की समस्या में कोन सा उपचार करना चाहिए l इन सभी उपचारों के माध्यम से समस्या का निवारण किया जा सकता हैं। उपचार का सम्बन्ध समाधान से है,यानि पूजन कार्य मैं वैदिक, लौकिक मंत्रों के द्वारा जब हम आध्यात्मिक दृष्टिकोण से पूजन करते हैं तो उस समय षोडशोपचार, पंचोपचार, शतशोपचार, दशोपचार, इन सभी उपचारों के द्वारा उस समस्या का निदान शास्त्रीय आधार से किया जाता हैं। जिससे सही उपचार हो सके l इस इकाई मैं हम उपचारों के कितने प्रकार है तथा किस उपचार को करनें से किस फल की प्राप्ति होती हैं इन सभी बिन्दुओं का हम ध्यान पूर्वक अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्देश्य

- ❖ इस ईकाई के अध्ययन के पश्चात् आपलोग निम्नलिखित विषय का ध्यान पूर्वक अध्ययन करेंगे।
- ❖ उपचार की परिभाषा क्या है इस विषय को जानने में समर्थ हो सकेंगे l
- ❖ कितने प्रकार के उपचार है l इन सभी उपचारों को समझ सकेंगे।
- ❖ प्रमुख उपचार कोन कोन से है इन सभी उपचारों को जानेंगे।
- ❖ पंचोंपचार पूजन में उपचार की क्या भूमिका है समझ सकेंगे
- ❖ प्रमुख षोडशोपचार, उपचार को मंत्र सहित जान सकेंगे।
- ❖ प्रमख उपचारों के महत्व को जान पाएँगे।

4.3 उपचार की परिभाषा

सभी पदार्थों या प्रक्रियाओं के द्वारा जो उपाय किया जाय उसे उपचार कहते हैं। किसी भी समस्या का समाधान आध्यात्मिक दृष्टिकोण से हो सके जैसै किसी व्यक्ति को मानसिक तनाव के साथ साथ शारीरिक पीड़ा भी रहती है तो वह कर्मकांड के माध्यम से अनुष्ठान के द्वारा वह ब्यक्ति अपनी मानसिक तथा शारीरिक समस्या को दूर करने के लिए समाधान कर सकते हैं। आध्यत्मिक के साथ साथ मानसिक समस्या को दूर करने के लिए अन्य उपचारों का सहयोग भी ले सकते हैं। जेसे

मानसिक समस्या के लिए कर्मकांड के साथ साथ योगशास्त्र के माध्यम से आसन,प्राणायाम,मुद्राओं का प्रयोग कर समस्या से मुक्त हो सकते हैं, उपचारों में षोडशोपचार, पंचोपचार मुख्य उपचार कहे गये हैं जिसके द्वारा सारी समस्याओं का निदान किया जा सकता हैं।

4.4 उपचार का महत्व

हम सभी देखते हैं कि कर्मकांड के द्वारा जब हम समस्या के समाधान को दूर करने का प्रयत्न करते है तो उस समय उपचार कि आवश्यकता होती हैं, जो कर्मकांड के सभी पोरोहित्य हस्त क्रिया को सम्पन्न करता हैं। वह ब्रह्मा के नाम से जाना जाता हैं क्योंकि ब्रह्मा का कार्य पौरोहित्य विधि के माध्यम से संपन करना होता है। ब्रह्मा का कार्य पूजन मैं क्रिया करना है जैसें हाथ के द्वारा भगवान को पाद्य, अर्घ्य धूप, दीप, के द्वारा पूजन करना ही 'उपचार' कहलाता हैं। आचार्य मंत्रों को पढ़े परन्तु हस्त क्रिया न हो तो वह मंत्र निष्फल हो जाता हैं। इसलिए आचार्य के साथ साथ ब्रह्मा का होना आवश्यकता होता है। जिससे मंत्र और क्रिया सिद्ध हो सके। मंत्रों के साथ साथ हस्तक्रिया का होना आवश्यक होता हैं जिससे उस पूजन मैं किए गये उपचार का फल हमें प्राप्त हो सके। बिना उपचार का कोई भी पूजन नहीं हो सकता हैं किसी भी समस्या को दूर करने के लिए उस समस्या का समाधान करना ही उपचार का महत्व कहलाता है।जिससे कि शास्त्रीय विधि से मंत्र और क्रिया के द्वारा कार्य की सफलता प्राप्त हो सके।

4.5 उपचार के प्रकार

मुख्य रूप से उपचार 6 प्रकार के होते हैं इन सभी उपकारों के द्वारा समस्या का निदान सभव है ,जो निम्नलिखित इस प्रकार हैं।

1.पंचोपचार
2.दशोपचार
3.षोडशोपचार
4.द्वात्रिंशोपचार
5.च:तुषष्ट्योपचार
6.एकोनद्वात्रिंशो पचार

4.6 प्रमुख उपचार

सोलह संस्कार को कर्मकांड के द्वारा संपन किया जाता है ।कर्मकांड को भी अलग अलग उपचारों के माध्यम से विधि पूर्वक किया जाता है।जेसे पंचोपचार , षोडशोपचार, द्वात्रिंशोपचार, इन

प्रमुख उपचारों का शास्त्रीय विधि से पूजन किया जाता है । यही प्रमुख उपचार कहलाते है ।जो निम्नलिखित है

पंचोपचार- कर्मकांड में पंचोपचार पूजन को मुख्य रूप से ग्रहण किया गया है ।पंचोपचार पूजन मैं पांच उपचारो के द्वारा इन सभी का विधान विधि पूर्वक किया जाता है

1.गन्ध

2.पुष्प

3.धूप

4.दीप

5.नैवेद्य

भारतीय संस्कृति में अपने आराध्य अपने देवी देवताओं के पूजन करने मैं यदि समय का अभाव हो तो इस स्थिति मैं पंचोपचार विधि के द्वारा देवी देवताओं का पूजन करना चाहिए। जो इस प्रकार है |

1.गन्ध – देवताओं का पूजन करते समय गन्धं अर्पित करना चाहिए।

2.पुष्प – गन्ध चढ़ानें के बाद देवताओं को पुष्पं समर्पयामि पुष्प चढ़ाना चाहिए।

3.धूप -गन्ध अर्पित करनें के बाद धूप की सुगंध देवताओं को अर्पित काना चाहिये ।

4.दीप – धूप अर्पित करके देवताओ को दीप का दर्शन कराना चाहिए।

5.नैवेद्य -सभी वस्तुएं भगवान को अर्पण कर नैवेद्य चढ़ाना चाहिए।

इसके बाद आचमन देकर प्रार्थना पूर्वक पुष्पांजलि करें यही भगवान् के पंचोपचार पूजन का विधान शास्त्रों मैं कहां गया हैं।

4.7 प्रमुख उपचार के द्वारा पंचोपचार पूजन में उपचार की भूमिका

गन्ध

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

पुष्प

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

पुष्पं पुष्पमालां च समर्पयामि

धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।

आघ्रयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीप

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।

दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।

त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्य

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

षोडशोपचार - षोडशोपचार पूजन मैं देवी देवताओं का सोलह प्रकार के उपचारों से पूजन करने का विधान है जो इस प्रकार से हैं।

(1) पाद्यं (2) अर्घ्यं (3) आचमनं (4) स्नानीय जलं (5) वस्त्र, (6) आभूषण, (7) गन्ध, (8) पुष्पं, (9) धूपं, (10) दीपं, (11) नैवेद्यं, (12) आचमनं, (13) (ताम्बूलं) (14) स्तवपाठ (15) तर्पण (16) नमस्कारं

4.8 प्रमुख उपचार के द्वारा षोडशोपचार पूजन में उपचार विधान

पाद्यं

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम् ॥
पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (आचमन जल छोड़े।)

अर्घ्यं

गङ्गोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं प्रसन्नो वरदो भव ॥
हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि अर्घ्य का जल छोड़े

आचमनं

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी आचमनके लिये जल समर्पित करे ।)

स्नानीय जलं

मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम् ।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

स्नानीयं जलं समर्पयामि

वस्त्र-

शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम् ।
देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।

आभूषणं -

वज्रमाणिक्यवैदूर्यमुक्ताविद्रुममण्डितम् ।
पुष्परागसमायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥

अलङ्करणार्थ आभूषणानि समर्पयामि

गन्धं

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

पुष्पं

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

धूपं

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आत्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।।

दीपं

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

नैवेद्यं

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

आचमनं

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामी आचमनके लिये जल समर्पित करे ।

ताम्बूलं

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ।।

स्तवपाठ

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।

नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय

गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या

विश्वस्य बीजं परमासि माया ।

सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्

त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥

तर्पण

स्तुति पाठ के बाद जल के द्वारा तर्पण देने का विधान है l

नमस्कारं

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधारहेतवे ।

साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः ॥

नमस्कारान् समर्पयामि l

4.9 सारांश

इस ईकाई मैं उपचार का विधान तथा विधि क्या है ,तथा प्रमुख उपचार कोन कोन से इन सभी विषयों का वर्णन इस इकाई में किया गया है तथा इन उपायों से किस समस्या का निदान हो सकता है इन सभी विषयों को आप समझ गये होंगे , किसी समस्या का निदान ही उपचार कहलाता है पंचोपचार मैं पांच उपचारों के द्वारा, षोडशोपचार मैं सोलह उपचारों के द्वारा, दशोपचार मैं दश उपचारों के द्वारा, तथा बत्तीस प्रकार के उपचारों के माध्यम से पूजन को विधिवत सम्पन्न किया जाता हैं। जिससे की पूजन उपचार के माध्यम से सभी व्यक्तियों को सुख प्राप्त हो सकें भारतीय संस्कृति मैं समस्या का निदान कैसे हो,सुख की प्राप्ति कैसे हो इन सभी व्याधियों से कैसे सुरक्षित हो सके। इन सभी के लिए ज्योतिष शास्त्र तथा कर्मकांड का सहयोग लेकर के अनुसंधान करके इन सभी आधि व्याधियों का , समस्याओं का, रोगों का निवारण कर्मकांड उपचार के द्वारा सम्पन्न किया जाता हैं। प्राचीन काल से यह सृष्टि प्रक्रिया चली आ रही हैं, उस काल मैं भी जीवों के ऊपर अनेकानेक कष्ट तथा आधि व्याधि ,जरा रोग ,यह सब शरीर को कष्ट देते थे। परन्तु उस काल मैं उस कष्ट को कैसे दूर किया जाय इस पर हमारे प्राचीन ऋषियों ने गहनतम चिन्तन के साथ साथ शास्त्रों का भी विधि विधान से स्वाध्याय कर इन सभी कष्टों को दूर करनें के लिए काल शास्त्र को आधार मानकर ज्योतिषीय गणना के साथ समस्या का मूल कारण क्या हैं उन सबका पता लगाया तथा आध्यात्मिक दृष्टि से कर्मकांड के द्वारा इन सभी का उपचार किया गया l जिससे की उस उपचार का समाधान हो सके प्रमुख उपचार के भेद नामक

ईकाई मैं आप सभी उपचार के बारे मैं तथा उपचार के भेद के विषय मैं इसके द्वारा समस्या का समाधान कैसे हो सके इन सभी को जान गये होंगे।

4.10 पारिभाषिक शब्दावली

आचमन -	शरीर शुधि के लिए
मुखे आचमन-	मुख की शुधि
आसनं	कुशासन या कम्बल का आसन
पंचामृत	दूध.दही घी .शहद .शकर
नमस्कार	झुकना अभिवादन करना
पंचोपचार	पांच प्रकार से उपचार
षोडश	16 प्रकार से उपचार

4.11 अभ्यास प्रश्न

1. प्रमुख उपचार के कितने भेद हैं

2.द्वात्रिंशोपचार पूजन मैं उपचार की संख्या हैं

3.षोडशोपचार मैं 10 वा उपचार क्या हैं

4.दशोपचार मैं 6 उपचार क्या हैं

5.आचमन क्या है

6.आसन किसे कहते है

7.प्रमुख उपचार में कोन कोन उपचार आते है

4.12 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

1.6 भेद होते है

2. (32) संख्या

3. प्रभु को दीप दिखाना

4. गंध

5. शरीर की शुधि के लिए

6. पंचोपचार .षोडशोपचार, द्वात्रिंशोपचार

4.13 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

नित्यकर्म पूजा प्रकाश

कर्मकांड भास्कर

कर्मकांड प्रदीप

4.14 निबंधात्मक प्रश्न

1. प्रमुख उपचार के कितने प्रकार है विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये|
2. लोकिक मंत्रो के द्वारा प्रमुख उपचारों का सविधि वर्णन कीजिये।
3. उपचार से आप क्या समझते है इसके महत्व पर प्रकाश डालिए |
4. पंचोंपचार , षोडशोपचार, का मंत्र सहित उल्लेख कीजिये।
5. प्रमुख उपचारों में द्वात्रिंशोपचार का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिय।

द्वितीय खण्ड

पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन

इकाई -1 पंचोपचार पूजन

इकाई की संरचना

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 पूजन का प्रयोजन एवं महत्व
1.4 पूजन के प्रकार
1.5 पंचोपचार
1.6 पंचोपचार में शामिल होने वाले पाँच प्रमुख उपचारों का विवरण।
1.7 सांराश
1.8 पारिभाषिक शब्दावली
1.9 बोध प्रश्न
1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर
1.11 सन्दर्भ ग्रन्थसूची
1.12 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत खण्ड की प्रथम इकाई पंचोपचार पूजन से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाइयों में हमने पूजन से सम्बन्धित विशेषताओं का अध्ययन कर लिया है। इस इकाई में हम पंचोपचार पूजन के उपकरणों के बारे में विस्तार से जानेगें।

धर्म शास्त्रों में पूजन की अनेक विधियों का वर्णन प्राप्त होता है। जिसमें पंचोपचार पूजा को प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन भी कर सकता है क्योंकि इस विधि में अधिक समय व धन की अवश्यकता भी नहीं होती है तथा इस पूजन के पांच उपचार गंन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य आसानी से प्राप्त हो जाते हैं।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान लेंगे –

- ❖ पूजन का प्रयोजन और महत्व
- ❖ पूजन के प्रकार
- ❖ पंचोपचार क्या है।
- ❖ पंचोपचार में प्रयोग होने वाले उपचारों का महत्वा।
- ❖ गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवद्य का प्रयोजन

1.3 पूजन का प्रयोजन एवं महत्व

पूजन भक्ति और आध्यात्मिक उन्नति का साधन है, विश्वभर में अनगिनत संस्कृतियों और धर्मों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सामाजिक, आध्यात्मिक, और चिंतन की प्रक्रिया के माध्यम से मानव जीवन को संरचित करने में मदद करता है।

पूजन का प्रमुख उद्देश्य है ईश्वर और आत्मा के बीच एक साकार और निराकार सम्बन्ध स्थापित करना। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जो मन, वचन, और क्रिया के माध्यम से व्यक्ति को आत्मा के साथ मिलाती है। पूजन, जो आध्यात्मिक और धार्मिक अनुष्ठान का महत्वपूर्ण हिस्सा है, मानव जीवन को एक ऊँचाई और सांत्वना की दिशा में प्रवृत्त करता है।

पूजा का अर्थ है ईश्वर की उपासना करना, जिसमें भक्त अपने मन, वचन, और क्रिया से दिव्यता की अनुभूति करता है। इसका महत्व विभिन्न पहलुओं में होता है:

आत्मा का सम्बंध

पूजा आत्मा का आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत करती है। भक्त, अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ एक मानवीय और दिव्य संबंध में महसूस करता है। पूजन से मन में दिव्यता, पवित्रता और अर्पण की भावना आती है जिससे धीरे धीरे आत्मा परमात्मा में लीन होने लगती है।

ईश्वर की उपासना

पूजा का मुख्य उद्देश्य ईश्वर की उपासना है। भक्त, भगवान के सामीप्य और समर्थन में अपने जीवन को दीक्षित करता है।

धार्मिक सद्गुणों की प्रोत्साहन

पूजा सद्गुणों को प्रोत्साहन करती है जैसे कि त्याग, दया, क्षमा, और सत्य। यह व्यक्ति को धार्मिक मूल्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

शांति और सांत्वना

पूजा व्यक्ति को शांति और सांत्वना की अद्भुत अनुभूति कराती है। यह मानव जीवन को सकारात्मकता और सहारा प्रदान करती है।

सामाजिक सहानुभूति

पूजा सामाजिक सहानुभूति और सामरस्य की भावना को बढ़ावा देती है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति अपने समाज में सहयोग, प्रेम, और समरसता का संदेश फैलाता है।

आत्म-निरीक्षण और सुधार

पूजा का अभ्यास करने से व्यक्ति अपनी भूलों और कमियों को पहचानकर सुधार करने की प्रक्रिया में रूचि लेता है।

आत्मिक शक्ति और स्थैर्य (धैर्यता)

पूजा से भक्ति व्यक्ति को आत्मिक शक्ति और स्थैर्य प्रदान करती है, जिससे वह जीवन के चुनौतीपूर्ण पहलुओं का सामना कर सकता है।

पूजन मानव जीवन को एक उच्च स्तर पर उत्थान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और व्यक्ति को आध्यात्मिक और सामाजिक सांत्वना प्रदान करता है ।

1.4 पूजन के प्रकार

हमारे शास्त्रों में पूजा करने के कुछ अनिवार्य अंग बताए गए हैं जिन्हें 'पंचोपचार','दशोपचार' व 'षोडषोपचार' पूजन कहा जाता है। आइए जानते हैं कि इन उपचार पूजनों के अंतर्गत क्या अनिवार्य हैं।

पंचोपचार पूजन-

1. गन्ध 2. पुष्प 3. धूप 4. दीप 5. नैवेद्य

दशोपचार-

1. पाद्य 2. अर्घ्य 3. आचमन 4. स्नान 5. वस्त्र 6. गंध 7. पुष्प 8. धूप 9. दीप 10. नैवेद्य

षोडशोपचार-

1. पाद्य

2. अर्घ्य

3. आचमन

4. स्नान

5. वस्त्र

6. आभूषण

7. गन्ध

8. पुष्प

9. धूप

10. दीप

11. नैवेद्य

12. ताम्बूल

13. दक्षिणा

14. स्तवन पाठ

15. तर्पण

16. नमस्कार

शास्त्रों में पूजन के प्रकार :-

1. पंचोपचार (05)

2. दशोपचार (10)

3. षोडशोपचार(16)

4. राजोपचार द्वात्रिशोपचार (32)

5. चतुषष्टीपोचार (64)

6. एकोद्वात्रिंशोपचार (132)

7. यथा लब्ध उपचार

पंचोपचार:– गन्ध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य द्वारा पूजन करने को पंचोपचार पूजन कहते हैं।

दशोपचार :– पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गंध, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य द्वारा पूजन करने को दशोपचार पूजन कहते हैं।

षोडशोपचार:–पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, अलंकार, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा, तर्पण, स्तवपाठ द्वारा पूजन करने की विधि को षोडषोपचार पूजन कहते हैं।

राजोपचार पूजन:– राजोपचार पूजन में षोडशोपचार पूजन के अतिरिक्त छत्र, चमर, पादुका, रत्न व आभूषण आदि विविध सामग्रियों व सज्जा से की गयी पूजा राजोपचार पूजन कहलाती है ।राजोपचार अर्थात राजसी ठाठ-बाठ के साथ पूजन होता है, पूजन तो नियमत ही होता है परन्तु पूजन कराने वाले के सामर्थ्य के अनुसार जितना दिव्य और राजसी सामग्रियों से सजावट और चढ़ावा होता है उसे ही राजोपचार पूजन कहते हैं।

परन्तु सामन्य जन पंचोपचार, दशोपचार, षोडशोपचार और यथा लब्धोपचार के माध्यम से ही पूजन करने में सामर्थ्य हो पाता है। तथा समय का आभाव होने पर भक्त पंचोपचार पूजन के माध्यम से ही भक्त अपनी भावनाओं को प्रकट कर देता है।

1.5 पंचोपचार

पंचोपचार पूजा एक अद्भुत और संबंधपूर्ण पूजा पद्धति है जो आदिकाल से चली आ रही है। इस पूजा का स्वरूप उन पाँच अभिष्टों या उपचारों पर आधारित है जो भक्त अपने ईश्वर या उपास्य देवता के सामने प्रस्तुत करता है। यह उपचार धार्मिक एवं आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च।

अखंडफलमासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम्॥

अर्थात् देव पूजन में गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य इन पांच चीजों का प्रयोग किया जाता है।

पंचोपचार का अर्थ ही है पांच उपचार अथवा पांच उपकरण जिसके द्वारा भक्त अपने इष्ट की आराधना और पूजा करता है।

1.6 पंचोपचार में शामिल होने वाले पाँच प्रमुख उपचारों का विवरण।

1. गंध

प्रथम उपचार है गंध, जिसमें भक्त आराध्य देवता के लिए सुगंधित और आत्मिकता को संरक्षित करने वाले सुगंधित पदार्थों से बने, कुमकुम आदि तिलक को प्रदान करता है। यह आत्मा की शुद्धता का प्रतीक है। गंध का इस्तेमाल तिलक के रूप में मानव जीवन की अद्वितीयता को दर्शाता है। यह सुगंधित तिलक भक्त के मस्तक पर अपने आराध्य देवता के साथ एकाग्रता और समर्पण की भावना को सुझाता है। इसके माध्यम से भक्ति की ऊँचाइयों की दिशा में एक पथ प्रदर्शित होता है।

भगवान के मस्तक पर तिलक लगाना, यह हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण आदर्शिता और आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक है। इस क्रिया का महत्व विभिन्न पहलुओं में होता है:

1.समर्पण और आदर्शिता = तिलक लगाना एक व्यक्ति का आदर्शिता और समर्पण का प्रतीक है। यह व्यक्ति को दिखाता है कि वह अपने आराध्य देवता के प्रति समर्पित है और उसके आदर्शों का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

2.आत्मनिवेदन = तिलक लगाना व्यक्ति को आत्मनिवेदन की भावना से युक्त करता है। यह उसे यह याद दिलाता है कि वह आत्मा का अद्वितीय अंश है और उसे आदर्श और पवित्रता की दिशा में अग्रसर करना चाहिए।

3.आध्यात्मिक संबंध = भक्ति और आध्यात्मिक संबंध को बढ़ावा देने के लिए तिलक एक महत्वपूर्ण क्रिया है। यह व्यक्ति को दिव्य और अद्वितीय सत्य के साथ जोड़ता है और उसे आध्यात्मिक साक्षात्कार की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

4.पूजा की प्रक्रिया में सहारा = तिलक एक पूजा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भक्त को अपने आराध्य देवता के साथ संबंध स्थापित करने में सहारा प्रदान करता है।

5.पौराणिक महत्व = कई पौराणिक कथाएं बताती हैं कि तिलक को लगाने से व्यक्ति को भगवान की कृपा मिलती है और उसका आत्मा परमात्मा के साथ एक हो जाता है।

6.धार्मिक समर्थन = तिलक लगाना धार्मिक समर्थन की भावना को साझा करता है और धार्मिक समृद्धि के माध्यम से समाज में एकता बनाए रखने में मदद करता है।

इस प्रकार, भगवान के मस्तक पर तिलक लगाने से व्यक्ति को आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक संरचना में सहारा मिलता है और उसे अपने आराध्य देवता के साथ साक्षात्कार में साहस मिलता है।

2. पुष्प (Flowers)

- दूसरा उपचार है पुष्प, जिसमें भक्त अपनी भक्ति और प्रेम का अभिव्यक्ति देवता के सामने रखता है। यह सौंदर्य और प्रेम की भावना को प्रकट करता है ।पुष्प, या फूल, पंचोपचार पूजा में एक महत्वपूर्ण उपचार है । पुष्पों का उपयोग पूजा में भगवान की अराधना के लिए किया जाता है और इससे भक्त की आत्मा में एक साकारात्मक बदलाव आता है। फूलों की सुगंध और सौंदर्य भक्त को भगवान के प्रति भक्ति और आदर्श भावना से भर देते हैं। प्रत्येक देवता के लिए विशेष पुष्प का चयन किया जाता है क्योंकि फूलों का सौंदर्य और सुगंध विकसित करने में इनकी विशेषता होती है ।

पुष्पों का चयन धार्मिक परंपरा में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये सात्विक गुणों का प्रतीक होते हैं और भक्त को शुद्धता और पवित्रता की अनुभूति कराते हैं।

पुष्पों का अर्पण न केवल दिव्यता की ऊँचाइयों की ओर एक कदम होता है, बल्कि यह भक्त को समर्पण और प्रेम की भावना में ले जाता है। पुष्पों की आराधना के माध्यम से भक्त अपने आराध्य

देवता के साथ एक अद्वितीय और साकारात्मक संबंध में स्थापित होता है, जो एक पूर्ण और सुखमय जीवन की दिशा में मदद करता है।

पुष्प का प्रयोग भगवान की सुंदरता और पवित्रता की आराधना में किया जाता है। यह भक्ति और प्रेम की भावना को सुंदरता के साथ भगवान के सामने प्रस्तुत करने का एक अद्वितीय माध्यम है, जिससे आराधक अपने इष्टदेवता के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति का अभिव्यक्ति करता है।

पुष्पों की सुंदरता और महक से यह साबित होता है कि भगवान के समक्ष भक्त का मन पवित्र भावना से भरा होता है। यह सिर्फ एक फूल नहीं होता, बल्कि इसके माध्यम से भक्त अपने हृदय की सबसे गहरी भावनाओं को भगवान के सामने प्रस्तुत करता है।

पुष्प का अर्थ भी यहां बहुतात्विक होता है। यह न केवल फिजिकल सुंदरता का प्रतीक है, बल्कि इसमें प्रकृति की सुंदरता, जीवन की असीम रूपरेखा और सृष्टि के आदि का संकेत होता है। इस प्रकार, पुष्प द्वारा भक्त भगवान के सामने अपनी समर्पण भावना और अद्भुतता की भावना को प्रकट करता है।

इसके साथ ही, भगवान को पुष्पों की विशेषता और सुंदरता के माध्यम से सजीवन का स्रोत मिलता है, जो भक्त को आत्मिक ऊर्जा और शक्ति प्रदान करता है। यह आत्मा के उद्दीपन का संकेत होता है और भक्त को आत्मा के प्रकाश से जोड़ने का एक साधन प्रदान करता है।

इस प्रकार, पुष्प भगवान के सामने भक्ति और समर्पण का प्रतीक होता है, जो भक्त को आत्मिक समृद्धि और आत्मा के पवित्रता की अनुभूति कराता है।

3. धूप (Incense)

- तीसरा उपचार है धूप, जिससे सुगन्ध, पवित्रता, और आत्मा के साथ संयोजन होता है। धूप के धुआं से वातावरण को पवित्रित करने का उद्देश्य होता है।

धूप का महत्वपूर्ण स्थान पूजा में है, जिससे भक्त अपनी आराध्य देवता के सामने पवित्रता की भावना को व्यक्त करता है। धूप आराधना का समय पूजा के शुरूआती अवस्था में किया जाता है और यह धूप मिलने वाली महक से भक्त को आनंदित करता है।

धूप का अर्थ है देवता के सामने आत्मा की शुद्धि का प्रतीक बनाना और व्यक्ति को आत्मिक स्थिति में लाना। धूप से उत्पन्न होने वाली महक आत्मा को पवित्र बनाती है और उसे देवता के साथ संबंधित करती है।

विभिन्न प्रकार के धूपों का उपयोग किया जाता है, जैसे गोबर, कपूर, चन्दन, अगरबत्ती, और वनस्पति धूप आदि। इनमें विशेष गुणस्तर होता है जो पूजा में उपयोग के लिए उपयुक्त होता है।

धूप से उत्पन्न होने वाली धुप का अर्थ है आत्मा की ऊँचाई को स्वीकार करना और देवता के सामने विनम्रता से स्थित होना। यह आत्मा को आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरित करता है और उसे साकार और निराकार ब्रह्म के साथ एकात्मता में ले जाता है।

धूप आराधना का अन्य एक महत्वपूर्ण पहलु यह है कि यह आत्मा को अज्ञानता से मुक्ति की ओर अग्रसर करता है और उसे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है। धूप की महक आत्मा को सच्ची स्वतंत्रता की भावना प्रदान करती है और उसे दिव्यता की ओर एक पथ प्रदान करता है ।

4. दीप (Lamp)

- चौथा उपचार है दीप, जो प्रकाश की स्थायिता, ज्ञान, और दिव्यता का प्रतीक है। यह आत्मा की अज्ञानता को हराने की क्रिया को दर्शाता है।

दीप, भक्ति और पूजन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिससे आत्मज्योति की प्राप्ति होती है और व्यक्ति भगवान के साथ अद्वितीय संबंध में आत्मा की स्थिति में पहुंचता है।

दीप पूजन का महत्व सात्विक और आध्यात्मिक सांस्कृतिकता में हमेशा से अद्भुत माना गया है। यह पूजा में विधिवत जलाए जाने वाले दीप के माध्यम से भक्त अपनी आत्मा को दिव्यता की ओर प्रवृत्त करता है। **" तमसो मा ज्योतिर्गमया"** जिसका अर्थ भी यही है अंधकार से प्रकास की ओर जाना ।

दीप पूजा में उपयोग किए जाने वाले तेल, घी से जलता हुआ दीप समृद्धि और आत्मा को प्रकाशित करता है, जिससे भक्त आत्मज्योति की प्राप्ति में समर्थ होता है। यह आत्मा को ब्रह्मज्योति से जोड़कर उसे अद्वितीय ब्रह्म के साथ एक करता है।

दीप का जलना आत्मा के अंधकार को हराकर ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है। दीप पूजा में समर्पित किया जाने वाला यह उपचार भक्त को अद्वितीयता की अनुभूति कराता है और उसे आत्मा के अद्वितीय स्वरूप का अनुभव करने में सहायक होता है।

दीप पूजन विधि से आत्मा का साक्षात्कार होता है और भक्त अपनी आत्मा को प्रकाशमय बनाकर उसे देवता के साथ समर्थित करता है। यह पूजा में समर्पित किए जाने वाले दीप से ज्ञान, शांति, और आत्मिक समृद्धि की प्राप्ति होती है।

5. नैवेद्य (Offerings)

पंचोपचार में आखिरी उपचार है नैवेद्य, जिसमें भक्त आराध्य देवता के लिए आत्मिक भोगों की प्रस्तुति करता है। यह श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है और भक्ति में सामर्थ्य की उदाहरणीय भावना प्रदान करता है।

पंचोपचार पूजा का यह स्वरूप भक्ति और साधना का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो आत्मा के उन्नति और ईश्वर के साथ एकात्मता की दिशा में मदद करता है।

नैवेद्य, पूजा के एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्से को सूचित करता है जहाँ भक्त आराध्य देवता को अन्न, फल, और अन्य भोजन सामग्री के रूप में समर्पित करता है। यह क्रिया भक्ति में समर्पण और प्रेम की भावना को प्रकट करती है।

नैवेद्य का अर्थ और महत्व

भगवान को लागाए जाने वाले भोग को नैवेद्य कहते हैं । भोग में मिठाई, खीर, भोजन आदि को भगवान को अर्पित किया जाता है जिसे बाद में प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

1. **भगवान को समर्पण** = नैवेद्य के माध्यम से भक्त अपने आराध्य देवता को अपने जीवन का हिस्सा मानता है और ईश्वर को अपने में तथा अपने को ईश्वर में देखता है पहले वह भगवान को भोजन अर्पण करता है तथा उसके बाद उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करता अर्थात् भक्त के जीवन का केन्द्र मात्र ईश्वर होता है किसी भी कार्य को करने से पूर्व भगवान को स्मरण करना तथा कार्य होने के पश्चात उन्हें अर्पित कर देता है जिससे कि उस कार्य के फल में होने वाले दोषों को नहीं भोगना पडता इसी प्रकार से भगवान के प्रसाद को ग्रहण करने से भोजन में सात्विकता तथा तमोगुणादि दोषों का निराकरण हो जाता है । भोजन जीवन का महत्व पूर्ण अंग है उसे भगवान को अर्पित कर हृदय से धन्यवाद के साथअपने संपूर्ण जीवन को शरणागति के साथ चरणों में समर्पित की भावना करते हैं है।

2. संयम और शुद्धि = नैवेद्य में संयम और शुद्धि की भावना होती है। भक्त अपने आहार की शुद्धता का ध्यान रखता है और उसे देवता के सामने प्रस्तुत करता है जिससे वह आत्मा को भी पवित्र मानता है।

3. आत्मिक शक्ति = नैवेद्य की एक विशेषता यह है कि यह भक्ति में आत्मिक शक्ति की भावना को बढ़ाता है। भक्त अपनी आत्मा को भगवान के साथ जोड़ने का प्रयास करता है और नैवेद्य को अर्पण करने के पश्चात प्रसाद के रूप में ग्रहण करने से उस प्रसाद के रस से शरीर में आराध्य के गुण तथा आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा यही बल साधना में सहायक होता है।

4. भगवान का प्रतीक = नैवेद्य पूजा में भगवान को भोग अर्पण करने का समय होता है जिससे यह प्रतिष्ठान मिलता है कि सभी भोजन को भगवान की अर्पणा के रूप में किया जा रहा है और उसे श्रद्धा भाव से आत्मिक भूक्ति का आनंद होता है।

5. सामर्थ्य और सहानुभूति = नैवेद्य के माध्यम से भक्त भगवान के साथ एक सामर्थ्य और सहानुभूति की भावना का अनुभव करता है। यह भक्ति में भगवान के साथ एक संबंध बनाए रखने का साधन है और भक्त को अनुभूति होती है कि भगवान उसके साथ हैं और उसका सहारा करते हैं।

नैवेद्य का अर्थ भगवान के सामने हमारी भक्ति, समर्पण, और सहानुभूति का प्रतीक है और इसके माध्यम से हम भगवान के साथ एक सांगत्य महसूस करते हैं। यह नहीं केवल भोजन की चीज होती है, बल्कि नैवेद्य भगवान के सामने सच्ची भावना और समर्पण की अद्वितीयता को दर्शाता है।

1.7 **सारांश**

पूजन के अनेक प्रकार की होती है परन्तु समय के आभाव एवं पूजन सामग्री के आभाव होने पर भक्त पंचोपचार पूजा के माध्यम से भगवान का पूजन करता है । जो कि भारतीय संस्कृति में भगवान की आराधना का एक प्रमुख तरीका है, जिसमें पाँच मुख्य उपायों का संयोजन होता है। इस पूजा का आदान-प्रदान वेद, पुराण और धार्मिक ग्रंथों में मिलता है और इसे भक्ति मार्ग का एक साधना माना जाता है।

पंचोपचार पूजा भक्ति और समर्पण का प्रतीक है जो भक्त को आत्मा के माध्यम से दिव्यता का अनुभव करने में मदद करती है। इस पूजा से भक्त भगवान के साथ एकीकृत महसूस करता है और अपने जीवन को उद्दीपन और मार्गदर्शन की दिशा में बदलता है।

पंचोपचार पूजा की विधि में भक्त गंध, पुष्प, धूप, दीप, और नैवेद्य से दिव्यता की भावना से भरा होता है। इसमें सादगी और समर्पण की भावना होती है, जो भक्त को आत्मिक समृद्धि की दिशा में प्रेरित करती है।

1.8 पारिभाषिक शब्दावली

पंचोपचार = पंच + उपचार (पांच उपकरण) गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य

षोडशोपचार = सोलह प्रकार के उपकरण आवाहनादि

उपचार = उपकरण

द्वात्रिशोपचार = बत्तीस प्रकार के उपचार

नैवेद्य = भगवान को अर्पित किया जाने वाली मिष्ठान अथवा भोजन

गंध = चन्दन आदि सुगन्धित तिलक

तमस = अंधकार

उपासना = समीप बैठना

अर्पित = अर्पण करना

उद्दीपन = प्रेरित करना

मार्गदर्शन = मार्ग (रास्ता), दर्शन (दिखाना) ऐसा ज्ञान जो व्यक्ति को अपने जीवन या पथ में विवेक पूर्ण निर्णय लेने में एक बिंदु और दिशा देने की शक्ति विकसित करने में सहायता करता है।

दिव्यता = अलौकिक आनन्द

1.9 बोध प्रश्न

- ❖ पंचोपचार के पांच उपकरण कौन कौन से हैं।
- ❖ पंचोपचार का सन्धि विच्छेद करो और सन्धि का नाम भी लिखो।
- ❖ पंचोपचार के क्रम में तीसरा उपचार कौन सा आता है ?
- ❖ आत्मा के अंधकार को हराकर ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है।
- ❖ सुगन्ध, पवित्रता, और आत्मा के साथ संयोजन करने की भावना किस उपचार से की जाती है ?

1.10 बोध प्रश्नो के उत्तर

- गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य
- पंच + उपचार / गुण सन्धि
- धूप
- दीप
- धूप

1.11 सन्दर्भ ग्रन्थसूची

- कर्मकाण्ड भास्कर
- कर्मकाण्ड चन्द्रिका
- कर्मकाण्ड प्रदीप
- नित्यकर्म- पूजाप्रकाश

1.12 निबन्धात्मक प्रश्न

1. पंचोपचार पूजन से आप क्या समझते हैं ?
2. पूजन के महत्व को प्रतिपादित कीजिए।

इकाई -2 पंचोपचार पूजन विधि

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 पूजन परिचय
2.4 पूजन क्रम एवं मन्त्र
2.5 पंचोपचार
2.6 पंचोपचार पूजन एवं आरम्भिक तैयारी
2.7 गंध आरोपण
2.8 पुष्प समर्पण
2.9 धूप आराधना
2.10 दीप
2.11 नैवेद्य समर्पण
2.12 आरती
2.13 मन्त्र पुष्पाञ्जली
2.14 पंचोपचार पूजा के लाभ
2.15 सारांश
2.16 पारिभाषिक शब्दावली
2.17 बोध प्रश्न
2.18 सन्दर्भ ग्रन्थसूची
2.19 निबन्धात्मक प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत खण्ड की दूसरी इकाई पंचोपचार पूजन विधि से सम्बन्धित है। इससे पूर्व की इकाई पंचोपचार पूजन में हमने जान लिया है कि पंचोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य) क्या है और पूजा में इन का प्रयोग क्यों किया जाता है। यहाँ अब इस इकाई में पंचोपचार पूजन विधि के बारे में अध्ययन करेंगे।

भारतीय सनातन परम्परा में पूजन को एक धार्मिक क्रिया माना गया है। पूजन की अनेक विधियां हैं उनमें से लोकाचार में मुख्य दो विधियां पंचोपचार एवं षोडशोपचार बहुत अधिक प्रचलित एवं प्रयोग में लिया जाता है । इस इकाई में मुख्य रूप से पंचोपचार विधि का उल्लेख किया जा रहा है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान लेंगे –

- ❖ पूजन का क्रम
- ❖ पंचोपचार पूजन प्रक्रिया
- ❖ पंचोपचार पूजन की विधि।
- ❖ पंचोपचार के वैदिक एवं लौकिक मंत्र
- ❖ पंचोपचार प्रयोग

2.3 पूजन परिचय

पूजन एक सनातन और धार्मिक क्रिया है ।पूजन, संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "प्रार्थना" या "आराधना"। यह एक धार्मिक अभ्यास है जिसमें व्यक्ति अपने ईश्वर, देवता, या अन्य आध्यात्मिक उद्देश्यों की पूजा और प्रशंसा करता है। पूजन का उद्देश्य आत्मा के आध्यात्मिक विकास और दिव्यता का अनुभव करना होता है।

2.4 पूजन क्रम एवं मन्त्र

स्वच्छ एवं पवित्र स्थान पर बैठकर ध्यान, प्रणायम, मन्त्रों आदि प्रक्रिया के द्वारा स्वयं एवं पूजन सामग्रियों को पवित्र करने के पश्चात् सकाम अथवा निष्काम कल्याण परक संकल्प लिया जाता है तथा इसके बाद गणेशादि देवताओं का पूजन किया जाता है । इस पूजन प्रक्रिया में जिस देवता की पूजा

करनी है उस देवता का मन्त्र द्वारा आवाहन और प्राण पतिष्ठा करनी चाहिए। तत्पश्चात क्रम निम्न लिखित है।

1. आवाहन
2. प्रतिष्ठा
3. आसन
4. पाद्य
5. अर्घ्य
6. आचमन
7. स्नान
8. पंचामृत स्नान
9. शुद्धोदक स्नान
10. वस्त्र
11. उपवस्त्र
12. यज्ञोपवीत
13. गन्ध
14. अक्षत
15. पुष्प, पुष्पमाला
16. धूप
17. दीप
18. नैवेद्य
19. ऋतुफल
20. ताम्बूल
21. दक्षिणा
22. आरती
23. पुष्पांजली
24. परिक्रमा
25. ध्यान और प्रार्थना
26. क्षमा प्रार्थना

आवाहन का मन्त्र

आगच्छन्तु सुरश्रेष्ठा भवन्त्वत्र स्थिराः समे।

यावत् पूजां करिष्यामि तावत् तिष्ठन्तु सन्निधौ ॥ (जिस देवता का पूजन किया जा रहा है उसका ध्यान करते हुए आवाहन करना चाहिए)

आसन का मन्त्र –

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम् ।
कार्तस्वरमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

पाद्य का मन्त्र –

गंगादिसर्वतीर्थेभ्य आनीतं तोयमुत्तमम् ।
पाद्यार्थं सम्प्रदास्यामि गृह्णनतु परमेश्वराः ॥

अर्घ्य का मन्त्र –

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्थ्यं सम्पादितं मया ।
गृह्णन्त्वर्ज्य महादेवाः प्रसन्नाश्च भवन्तु मे ॥

आचमन –

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं गृह्णन्तु परमेश्वराः ॥

स्नान –

मन्दाकिन्याः समानीतैःकर्पूरागुरूवासितैः ।
स्नानं कुर्वन्तु देवेशा जलैरेभिः सुगन्धिभिः ॥

पंचामृत स्नान –

पयो दधि घृतं चैव मधु च शर्करान्वितम् ।
पञ्चामृतं मयाऽऽनीतंस्नानार्थं प्रतिगृह्यातम् ॥

शुद्धोद्धक स्नान –

मलयाचलसम्भूतचन्दनेन विमिश्रतम् ।
इदं गन्धोदकं स्नानं कुकुमाक्तं नु गृह्यताम् ॥

वस्त्र – उपवस्त्र का मन्त्र –

शीतवातोष्णसंत्राणे लोकलज्जानिवारणे ।
देहालंकरणे वसे भवदभ्यो वाससी शुभे ॥

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृह्णन्तु परमेश्वराः ।।

चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ।।

पुष्प, पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्तितः ।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

धूप –

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आप्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यातम् ।।

दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निा योजितं मया ।
दीपं गृह्णन्तु देवेशास्त्रैलोक्यतिमिरापहम् ।।

नैवेद्य –

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ।।

ऋतुफल –

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।

ताम्बूल –

पूगीफलं महद् दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ।
एलालवंगसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृहयताम् ।।

दक्षिणा –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ।

अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ।।

आरती –

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम् ।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मां वरदो भव ।।

पुष्पांजलि –

श्रद्धया सिक्तया भक्तया हार्दप्रेम्णा समर्पितः ।
मन्त्रपुष्पांजलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम् ।।

प्रार्थना –

नमोऽस्वनन्ताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे ।
सहस्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्रकोटीयुगधारिणे नमः ।।

1. पंचोपचार

शास्त्रों के अनुसार षोडशोपचार या दशोपचार में से वे पांच सामग्रियां जिनके द्वारा भक्त अपनी भक्ति और भावना के द्वारा ईश्वर या अपने आराध्य की सेवा व सम्मान करता है।

उपर्युक्त पूजन क्रम में से आवहन, प्राणप्रतिष्ठा, आसन के पश्चात इष्ट देवता को समय अथवा धन के अभाव में केवल ये पांच चीजें गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पित करने से भी पूजा का पूर्ण फल प्राप्त होता है।

2.6 पंचोपचार पूजन एवं आरम्भिक तैयारी

पूजा से पहले पात्रों को यथास्थान रखना चाहिए ।पूजनकी किस वस्तुको किस स्थान पर रखना चाहिए उसका भी शास्त्रों ने निर्देश दिया है –

"**सुवासित जलैः पूर्णं सव्ये कुम्भं**" अर्थात् सुवासित जलसे भरा उदकुम्भ (जलपात्र) बायीं ओर रखना चाहिए।

"**घण्टां वामदिशि स्थिताम्**" वाम दिशा में घंटी की स्थापना करनी चाहिए।

"वामतस्तु तथा धूपमग्रे नापि न दक्षिणे" अर्थात् वाम भाग में धूपदानी को रखें सामने व दायीं ओर नहीं रखना चाहिए।

" घृतदीपो दक्षिणतस्तैलदीपस्तु वामतः" अर्थात् घी के दीपक को दक्षिण व तेल के दीपक को बायीं ओर रखना चाहिए।

" शङ्खमद्भिः पूरयित्वा प्रणवेन च दक्षिणे" सुवासित जल से भरा शङ्ख दायीं तरफ रखना चाहिए।

" द्रवीभूतं घृतं चैव द्रवीभूतं च चन्दनम् । नार्पयेन्मम तुष्ट्यर्थं घनीभूतं तदर्पयेत् ॥" अर्थात् गाढा घिसा हुआ चन्दन सम्मुख में रखना चाहिए।

" हस्ते धृतानि पुष्पाणि ताम्रपात्रे च चन्दनम् । गङ्गोदकं चर्मपात्रे निषिद्धं सर्व कर्मसु ॥" अर्थात् हाथों में पुष्प, चन्दन ताम्र पात्र में रखना चाहिए, गंगा जल को कभी चर्म पात्र में नहिं रखना चाहिए इस प्रकार से रखे जल का सभी शुभ कार्यों में निषेध माना गया है।

भगवान व अपने आराध्य के सामने चौकोर जल का घेरा बनाकर नैवेद्यकी वस्तु अर्थात भगवान की भोग की वस्तु रखना चाहिए।

पात्रों को यथा स्थान रखने के पश्चात पूर्व दिशा या उत्तर दिशाकी तरफ मुख करके आसन पर बैठकर आचमन, शुद्धि आदि प्रक्रिया करने के पश्चात हाथ में अक्षत-पुष्प को लेकर वैदिक तथा लौकिक स्वस्तिवाचन का पाठ करना चाहिए जो निम्न प्रकार से है।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवाना गूं रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना गूं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः। अदितिद्यौँ- रदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः

शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ सुशान्तिर्भवतु ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये ! शिवे ! सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके ! गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं देवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्भुवा नीतिर्मतिर्मम ॥

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥

स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥

सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥

विश्वेशं माधवं दुण्ठिं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥

वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्यसमप्रभ । निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमा- महेश्वराभ्यां नमः । वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । शचीपुरन्दराभ्यां नमः । मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः । ग्रामदेवताभ्यो नमः । वास्तुदेवताभ्यो नमः । स्थानदेवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ सिद्धि बुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः ।

इत्यादि पूर्ण होने के पश्चात हाथ के अक्षत पुष्पों को भगवान के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए।

उपर्युक्त स्वस्ति वाचन के पश्चात् दाहिने हाथ में जल-अक्षत- सुपारि- द्रव्य आदि लेकर सकाम अथवा निष्काम सकल्प करना चाहिए

संकल्प के पश्चात गायत्री मंत्र अथवा पुरुष सूक्त या अपने इष्ट का ध्यान करते हुए अंग न्यास करना चाहिए। शास्त्रों में कहा है कि पूजन आदि कार्यों में अङ्गन्यास, करन्यास आदि करना चाहिए क्योकि न्याससे मनुष्य में देवत्वा का आधान होता है।

यथा देवे तथा देहे न्यासं कुर्याद् विधानतः। (बृहत्पाराशरस्मृति 4 /135)

इसके पश्चात गणेश, गौरी आदि देवताओं का क्रम से पूजन करना चाहिए सर्वप्रथम ध्यान, आवाहन, आसन भगवान को अर्पण करना चाहिए इसके बाद पंचोपचार (गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य) से भगवान का पूजन करना चाहिए पूजन के बाद भगवान की बड़े प्रेम से आरती, पुष्पाञ्जलि, प्रदक्षिणा, ध्यान/ प्रार्थना आदि करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप गणेश गौरी पूजनम –

भगवान गणेश गौरी जी का ध्यान –

भगवान गणेश जी का ध्यान -

भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्॥

भगवती गौरी जी का ध्यान –

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहन – भगवान गणेश जी का

वैदिक मंत्र –

ॐ गणानां त्वा गणपति गूं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति गूं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति गूं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

लौकिक मंत्र -

ॐ एह्येहि हेरम्ब महेशपुत्र समस्त विघ्नौघविनाशदक्ष।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च

आवाहन - भगवती गौरी जी का

वैदिक मंत्र –

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥

लौकिक मंत्र –

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरी मावाहयाम्यहम्॥

ॐ भूर्भवः स्वः गौर्यै नमः, गोरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

प्रतिष्ठा –

वैदिक – ॐ मनो जूतिर्जुषतामा ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गूं समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ॥

लौकिक - अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके ! सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे पुष्पाणि अक्षतान् वा समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। भगवान को आसन के लिए पुष्पों अथवा अक्षत को समर्पित करे।

2.7 गन्ध आरोपण

गन्ध (चन्दनादि तिलक)

1. **वैदिक मंत्र**

ऊँ त्वांगन्धर्वाऽअखनँस्तवामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा व्विद्वान्न्यक्षमादमुच्यत॥

2. **लौकिक मंत्र**

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि कहकर भगवान को चन्दन अर्पित कर दें।

2.8 पुष्प समर्पण

पुष्पाणि (फूल एवं माला) –

1. **वैदिक मंत्र**

ऊँ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।

2. **लौकिक मंत्र**

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।

ॐ भूभुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पं पुष्पमालां वा समर्पयामि कहकर भगवान को पुष्प अथवा पुष्पमाला को समर्पित कर दें।

"नैवेद्यं पुरतः संस्थाप्य धूप-दीपौ च देयौ"

2.9 धूप आराधना

धूप –

1. **वैदिक मंत्र**

ऊँ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरुतदस्ययद्वैष्यः पद्भ्यां शूद्रोऽअजायत।।

2. **लौकिक मंत्र**

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूभुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि कहकर भगवान को धूप दिखाये।

2.10 दीप

दीप –

1. **वैदिक मंत्र**

ॐ चन्द्रमामनसो जातष्चक्षोः सूय्योऽअजायत। श्रोत्राद्वायुष्च प्राणष्चमुखादग्निरजायत ॥

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्नि र्व्वच्चो ज्योतिर्व्वर्चः स्वाहा सूर्यो र्व्वच्चो ज्योति र्व्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

2. **लौकिक मंत्र**

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद्घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

ॐ भूभुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि कहकर भगवान को दीप दिखाये।

2.11 नैवेद्य (भोग) समर्पण

भगवान को दीप दर्शन अथवा आरती के पश्चात हस्त प्रक्षालन करके बड़े प्रेम और भाव के साथ नैवेद्यार्पण करना चाहिए। नैवेद्य को प्रोक्षित कर पुष्प के द्वारा आच्छादित कर लेना चाहिए तथा भगवान के सम्मुख जल से चतुष्कोण घेरा बनाकर उस पर भगवान के आगे भोग रखना चाहिए तथा भावना करनी चाहिए की भगवान बडे प्रेम से नैवेद्य को ग्रहण कर रहे हैं।

1. **वैदिक मंत्र**

ऊँ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षं शीर्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ2ऽअकल्पयन्॥

2. **लोकिक मंत्र**

नैवेद्यं गृह्यतां देव! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।
इप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्य-भोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्कराखण्डखाद्यानि दधि क्षीरघृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ प्राणाय स्वाहा

ॐ अपानाय स्वाहा

ॐ समानाय स्वाहा

ॐ उदानाय स्वाहा

ॐ व्यानाय स्वाहा

ॐ भूभुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि कहकर भगवान को नैवेद्य अर्पित कर दें। नैवेद्य देने के बाद भगवानका ध्यान करे की मानो भगवान भोग ग्रहण कर रहे हों **तथा** नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि यह कहकर भगवान को जल समर्पित कर दें।

इसके बाद पूजन समाप्ति के लिए भगवान की आरती करें –

2.12 आरती

वैदिक -ॐ इद गूं हविः प्रजननं में अस्तु दशवीर गूं सर्वगण गूं स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्नि: प्रजां बहुलां में करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त॥

ॐ आ रात्रि पार्थिव गूं रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा गूं सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

लौकिक – कपलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपि

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि।

2.13 मंत्र पुष्पाञ्जलि –

वैदिक -ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिनानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।

लौकिक - नाना सुगंधिपुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।

पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः , पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि कहकर भगवान को पुष्पाञ्जलि समर्पित कर दें।

2.14 पंचोपचार पूजा के लाभ

पंचोपचार पूजा का आद्यतन लाभ आत्मिक और भौतिक दृष्टिकोण से होता है। इस पूजा के विशेष उपचारों से होने वाले लाभों को समझने के लिए, हमें इस पूजा के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए।

आत्मिक और भौतिक लाभ = पंचोपचार पूजा आत्मा के शुद्धिकरण और आध्यात्मिक समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह आत्मा को दिव्यता की ओर मुख करने में मदद करती है और व्यक्ति को आत्मनिर्भरता का अनुभव कराती है।

भौतिक लाभ = पंचोपचार पूजा भौतिक स्वास्थ्य, मानव समृद्धि, और परिवार के सुख-शांति में भी मदद करती है। धूप, दीप, और नैवेद्य के माध्यम से एक प्रकार की शुद्धि होती है जो भौतिक और आत्मिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करती है। पंचोपचार पूजा के प्रति विशेष उपचारों से व्यक्ति में शांति, प्रेम, और सुख का अनुभव होता है। पूजा में धूप का आराधना करने से आसपास में एक सकारात्मक वातावरण बनता है ।

इस प्रकार, पंचोपचार पूजा न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि इससे होने वाले आत्मिक और भौतिक लाभों का भी अभ्यंतरीण अनुभव होता है। यह साधना व्यक्ति को आत्मा के माध्यम से परमात्मा के साथ एकीकृति की अनुभूति में ले जाती है और उसे जीवन की सार्थकता का अनुभव होता है।

2.15 सांराश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जाना है कि पूजन एक धर्मिक प्रक्रिया है जिसका एक वेज्ञानिक क्रम है । पंचोपचार पूजन का सनातन परम्परा में महत्व पूर्ण योगदान है । यह पूजन की एक सबसे सरल एवं संक्षिप्त पद्धति है ।

किसी भी पूजन को करने के लिए सबसे पहले शुभ मुहूर्त का चयन किया जाता है तथा पूजन के लिए सम्बन्धित सामग्रीयों को एकत्र करके पवित्र व उचित स्थान पर रख देना चाहिए एवं पूजन के समय में सम्बन्धित वस्तु को शास्त्र में बताए स्थान पर सुव्यवस्थित स्थापना कर देनी चाहिए ।

देवों को भी चौकी पर यथा स्थान स्थापना कर देनी चाहिए पूजन प्रारम्भ से पहले स्वयं को आचमान, प्रणायम आदि करके एकाग्र व पवित्र कर लेना चाहिए ततपश्चात् शास्त्र के अनुसार बताए गए पंचोपचार पूजन क्रम से भगवान का पूजन करना चाहिए |

2.16 पारिभाषिक शब्दावली

पूजन = प्रार्थना /आराधना

पाद्य = पादार्थमुदकम् (पाद के लिए जल)

अर्घ्य = सम्मान के लिए हाथ में जल देना

पंचामृत = दूध, दही, घी, शहद, शक्कर का समाहार

स्वस्तिवाचन = स्वस्ति (कल्याण), वाचन (बोलना / कहना) अर्थात् कल्याण करने वाले शब्दों को कहना

वैदिक = वेद से सम्बन्धित

लौकिक = लोक से सम्बन्धित

2.17 बोध प्रश्न

1. पूजन में घण्टी की स्थापना करनी चाहिए।
2. **"ऊँ ओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः । अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः ॥"** इस वैदिक मंत्र से भगवान को क्या अर्पण किया जाता है ?
3. पंचोपचार में पांच मुख्य वस्तु कौन सी है ?
4. पंचोपचार में पांच वस्तुओं को चढाने का सही क्रम क्या है ?

पंचोपचार पूजा का आद्यतन लाभ.....दृष्टिकोण से होता है।

2.18 सन्दर्भ ग्रन्थसूची

कर्मकाण्ड भास्कर

कर्मकाण्ड चन्द्रिका

कर्मकाण्ड प्रदीप

नित्यकर्म- पूजाप्रकाश

2.19 निबन्धात्मक प्रश्न

1.पंचोपचार पूजन विधि से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

2. पंचोपचार पूजन एवं आरम्भिक तैयारी का उल्लेख कीजिए।

इकाई - 3 पंचोपचार पूजन में विशेष

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पंचोपचार पद्धति की मुद्राएं

3.4 गंध मुद्रा

3.5 पुष्प मुद्रा

3.5.1 गणपति के लिये विहित पत्र-पुष्प

3.5.2 भगवती के लिए विहित पत्र -पुष्प

3.5.3 शिव पूजन के लिये विहित पत्र- पुष्प

3.5.4 विष्णु पूजन के लिये विहित पत्र-पुष्प

3.5..5 सूर्य के लिए विहित और निषिध पत्र पुष्प

3.6 धूप मुद्रा

3.7 दीप मुद्रा

3.8 नेवेद्य मुद्रा

3.9 सारांश

3.10 बोध प्रश्न

3.11 शब्दावली

3.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

3.14 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत खण्ड की तीसरी इकाई पंचोपचार पूजन विशेष से सम्बधित है। इससे पूर्व की इकाई से पंचोपचार क्या है,पंचोपचार पूजन क्रम व पंचोपचार से सम्बन्धित मन्त्रों आदि को हमने जान लिया है।

अब इस इकाई में हम पंचोपचार से सम्बन्धित विशेष को जानेगें। जैसे पंचोपचार की मुद्राएं, पुष्पोचार में देवों के विहित व निषिध पत्र पुष्प आदि। जिससे की पंचोपचार पूजन का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो सके अतः इस इकाई में मुख्य रूप से पंचोपचार विशेष का उल्लेख किया जा रहा है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान लेगें -

- ❖ पंचोपचार पूजन में होने वाले विशेष प्रयोग
- ❖ पंचोपचार मुद्राओं
- ❖ पूजा में प्रयोग किये जाने वाले विहित निषिद्ध पत्र- पुष्पों को
- ❖ भगवान विष्णु के पूजन में तुलसी का महत्व

3.3 पंचोपचार पद्धति की मुद्राएं

पंचोपचार पूजन में मुद्राएं आत्मा को बह्म तत्त्व के साथ जोड़ने में सहायता करती हैं। मुद्राएं भक्ति और साधना की ऊर्जा को सुधारने में सहारा प्रदान करती हैं, जिससे पूजा भगवान के द्वारा स्वीकृत हो सकती हैं। इन मुद्राओं से मन को शान्ति मिलती है और भक्ति में सहायक होने के कारण पूजा को भगवान ग्रहण करते हैं

शास्त्रों में पंचोपचार पद्धति की पांच मुद्रांए हैं - गंध मुद्रा, पुष्प मुद्रा, धूप मुद्रा, दीप मुद्रा तथा नैवेद्य मुद्रा। इन मुद्राओं के द्वारा ही देवी देवता मुद्रा से सम्बन्धित पूजन सामग्री को ग्रहण करते हैं। अतः पंचोपचार पूजन में इन मुद्राओं को भी जान लेना आवश्यक है। मुद्राएं बनाने के लिए हाथों की अंगुलियों और अंगूठे का प्रयोग किया जाता है।

3.4 गन्ध मुद्रा

भगवान को गन्ध, गन्ध मुद्रा के द्वारा अर्पित करना चाहिए। गन्ध मुद्रा के लिए हाथ के अंगूठे और

अनामिका अङ्गुलि का प्रयोग किया जाता है। अंगूठा तथा अनामिका अंगुली को एक साथ मिला देने से गंध मुद्रा प्रदर्शित की जाती है। अतः सर्वप्रथम अपने आराध्य को अनामिका से चन्दन लगाने के पश्चात दाएं हाथ के अंगूठे और अनामिका के बीच चुटकीभर कर गंध ले और अपने आराध्य के चरणों में अर्पित कर देना चाहिए।

3.5 पुष्प मुद्रा

पुष्प मुद्रा में भगवान को पुष्प चढाने के पश्चात इस मुद्रा को बनाया जाता है इस मुद्रा में दांये हाथ का अंगूठा और तर्जनी अंङ्गुलि का प्रयोग किया जाता है। इस मुद्रा को बनाने के लिए अंगूठे की जड़ में तर्जनी को लगाने पर पुष्प मुद्रा बनती है। अपने आराध्य देवता को उनके प्रिय पुष्प चढाने के पश्चात इस मुद्रा को दिखाना चाहिए। पुष्प देवता के सिर पर न चढाकर उनके चरणों में अर्पित करना चाहिए। देवताओं से सम्बन्धित प्रिय पुष्प भी भिन्न भिन्न है यथा गणेश जी को दूर्वा, शिवजी को विल्व पत्र, आदि अतः पंचोपचार पूजन में ही नहीं बल्की सभी पूजन में हमें देवताओं से सम्बन्धित विहित और निषिध पुष्पों का ज्ञान होना चाहिए। इसलिए नीचे देवताओं से सम्बधित कौन कौन से पुष्प पत्र हैं उनका नीचे उल्लेख किया है।

3.5.1 गणपति के लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान गणेश जी को सभी पत्र मौर पुष्प चढाये जा सकते हैं। उसमें भी गणपति जी को दुर्वा अधिक प्रिया है अतः सभी पूजा में गणेश जी को सफेद या हरी दूर्वा अवश्य चढानी चाहिए। दूर्वा में भी कम से कम तीन या पांच पत्तियां होनी चाहिए। गणेश पुराण में लिखा है -

हरिताः श्वेतवर्णा वा पञ्चत्रिपत्रसंयुताः।
दूर्वाङ्कुरा मया दत्ता एकविंशति सम्मिताः॥

गणेश जी को भूलकर भी तुलसी कभी नहीं चढानी चाहिए " न तुलस्या गणाधिपम्" अर्थात् गणेश जी की पूजा तुलसी से नहीं करनी चाहिए। आचार भूषण में भी कहा है -

तुलसीं वर्जयित्वा सर्वाण्यपि पत्र पुष्पाणि गणपति प्रियाणि।

अर्थात् भगवान गणेश जी को तुलसी से पूजा वर्जित है तथा इसके अतरिक्त सभी पत्र पुष्प गणेश जी को प्रिया है। अन्य देवी देवता पर चढाये जाने वाले पत्र पुष्पों से भगवान गणेश जी का पूजन किया सकता है।

कार्तिक माहात्म्य में भी " गणेशं तुलसीपत्रैर्दुर्गां नैव तु दूर्वया" अर्थात् गणेश जी की तुलसी के द्वारा और मां दुर्गा जी का दूर्वा से कभी भी पूजा नहीं करना चाहिए। नैवेद्य में लड्डु गणेश जी को सर्वाधिक प्रिया है (गणेशो लड्डुकप्रियः)।

3.5.2 भगवती के लिए विहित पत्र

माता गौरी को वे सभी पुष्प अर्पित किये जा सकते हैं जो भगवान शिव को चढाये जाते हैं।

यनि पुष्पाणि चोक्तानि शङ्करस्यार्चने पुरा।
तानि गौर्या: प्रशस्तानि त्वपामार्गो विशेषत: ॥
शिवार्चने निषिद्धानि पत्रपुष्प फलानि च।
तानि देव्या: प्रशस्तानि अनुक्तानि विशेषत: ॥
नित्यं गौर्या: प्रशस्तानि रक्तपुष्पाणि सर्वदा।
शुक्लान्यपि च सर्वाणि गन्धवन्ति स्मृतनि वै ॥

अर्थात् जितने भी पुष्प भगवान शिव की अर्चना में उपयोग किये जाते हैं वे सभी पुष्प भगवति को अधिक प्रिया हैं। उन में भी अपामार्ग विशेष प्रिय है। तथा जिन फूलों का शंकर जी पर चढ़ाना निषेध है उन फूलों से भी भगवती का पूजन किया जा सकता है।

भगवती गौरी को नित्य ही सभी लाल पुष्प प्रशस्त हैं तथा सुगन्धित समस्त श्वेत पुष्प भी भगवती को प्रिया हैं।

ऋतुकालोद्भवै: पुष्पैर्मल्लिकाजातिकुङ्कुमै:।
सितरक्तैश्च कुसुमैस्तथा पद्मैश्च पाण्डुरै: ॥
किंशुकैस्तगरैश्चैव किंकिरातै: सचम्पकै:।
बकुलैश्चैव मन्दारै: कुन्दपुष्पैस्तिरीटकै: ॥
करवीरार्कपुष्पैश्च शिंशपैश्चापराजितै: ॥ (आचारभूषण)

मल्लिकामुत्पलं पुष्पं शमीं पुन्नागचम्पकम्।
अशोकं कर्णिकारं च द्रोणपुष्पं विशेषत: ॥

धत्तूरकातिरक्तैश्च बन्धूकागस्तिसम्भवै:।
मदनै: सिन्दुवारैश्च सुरभीभिर्बकैस्तथा लताभिर्ब्रह्मवृक्षस्य दूर्वाङ्करै: सुकोमलै: ॥
मञ्जरीभि: कुशानां च बिल्वपत्रै: सुशोभनै:।
केतकीं चातिमुक्तं च बन्धूकं बहुलान्यपि।
कर्णिकार: कदम्बश्च सिन्दुवार: समृद्धये।
पुन्नागश्चम्पकश्चैव यूथिका वनमल्लिका ॥

तगरार्जुनमल्ली च बृहती शतपत्रिका ॥

बेला

चमेली
केसर
श्वेत और लाल पुष्प
कमल
पलाश
तगर
अशोक
चम्पा
मौलसिरी
मदार
कुन्द
लोध
कनेर
आक
शीशम
अपराजित
शमी
अशोक
कर्णिकार
गूमा
दोपहरिया
अगस्य
मुदन
सिन्दुवार
शल्लकी
माधवी
कुशकी मंजरियां
बिल्वपत्र
केवड़ा
कदम्ब
कमल

इन उपर्युक्त सभी पुष्पों से भगवती का पूजन किया जा सकता है परन्तु इन पुष्पों में कुछ आचार्यों ने आक और मदार इन दो पुष्पों का भी निषेध किया है। अतः अन्य पुष्पों के प्राप्त होने पर ही इन दो पुष्पों से भगवती का पूजन करना चाहिए अन्य पुष्पों की उपस्थिति में इन दो पुष्पों का निषेध ही समझना चाहिए।

अर्कपुष्पविधानं तु विहितालाभे द्रष्टव्यम् देवीनामर्कमन्दाराविति निषेधात्।

किन्तु कुछ आचार्यों ने लिखा है कि इन दो पुष्पों को भगवति दुर्गा से भिन्न देवियों पर नहीं चढाना चाहिए। दुर्गा जी की पूजा में इन दो पुष्पों का भी उपयोग किया जा सकता है "अर्कमन्दारनिषेधो दुर्गेतरदेवीविषयः। दुर्गापूजाधिकारे तयोः पाठात्"।

तिलकं मालती वाणस्तुलसी भृङ्गराजकम्।
तमालं शिवदुर्गार्थं निषिद्ध विहितं भवेत्॥ (भविष्यपुराण)

अर्थात् आक और मदार की तरह दूर्वा, तिलक, मालती, तुलसी, भंगरैया और तमाल ये विहित और निषिद्ध हैं अर्थात् देवी के पूजा में जब विहित पुष्प प्राप्त न होने पर विहित निषिद्ध फूलोंसे पूजा कर लेनी चाहिये।

3.5.3 शिव पूजन के लिये विहित पत्र- पुष्प

शिव पूजन का जितना अधिक महत्व है उतना ही अधिक महत्व यह भी है कि कौन कौन से पत्र- पुष्प भगवान शिव को चढाया जा सकता है इनकी जानकारी भी होना अति आवश्यक है। क्योंकि कहा भी है - सौ स्वर्ण के दान के जितना फल भगवान पर सौ पुष्प चढ़ाने मात्र से प्राप्त हो जाता है **"तपः शीलगुणोपेते विप्रे वेदस्य पारगे। हत्त्वा सुवर्णस्य शतं तत्फलं कुसुमस्य च॥ "** अत**:** शास्त्रों के अनुसार भगवान शिव के विहित और निषिध पुष्प कौन कौन से हैं इसकी जानकारी प्राप्त करते हैं।

भगवान शिव को विष्णु भगवान अधिक प्रिया हैं अतः जो जो पुष्प भगवन विष्णु की पूजा में उपयोग किया जा सकता है वे सभी पुष्प भगवान शिव की पूजा में भी उपयोग किया जा सकता है परन्त केवल केतकी पुष्प को छोड़कर।

विष्णोर्यानीह चोक्तानि पुष्पाणि च पत्रिकाः।
केतकी पुष्पमेकं तु विना तान्यखिलान्यपि।
शस्तान्येव सुरश्रेष्ठ शंकराराधनाय हि॥ (नारद पुराण)

सभी पुष्पों में नील कमल सबसे बढकर माना गया है जैसे

- दस सुवर्ण मापके बराबर सुवर्ण दानका फल एक आकके फूलको चढाने से प्राप्त हो जाता है।
- हजार आकके फूलों की अपेक्षा एक कनेर का पुष्प
- हजार कनेर के फूलों को चढाने से जो फल प्राप्त होता है वह एक विल्व पत्र से
- हजार बिल्व पत्र चढाने से जो फल प्राप्त होता है वह एक गुमाफूल (द्रोण पुष्प से
- हजार गूमा के फूलों की अपेक्षा एक अपामार्ग से
- हजार अपामार्गों से बढकर एक कुशका फूल
- हजार कुश पुष्पों को चढाने से जो फल प्राप्त होता है वह एक शमीका पत्ता चढाने से प्राप्त हो जाता है।
- हजार शमीके पत्तों से बढकर एक नील कमल
- हजारों नील कमलों के फल के बराबर एक धतूरा चढाने से प्राप्त हो जाता है
- हजार धतूरा चढाने पर जो फल प्राप्त होता है वह एक शमी का फूल चढ़ाने पर प्राप्त हो जाता है।

भगवान व्यास ने

कनेर के तुल्य चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेतकमल, शमी के फूलों को रखा है अर्थात् शिव की पूजा में कनेर के पुष्प को चढ़ाने से जो फल प्राप्त होता है वही चमेली आदि के चढाने पर मिलता है तथा धतूरे की कोटि में नागचम्पा और पुंनाग को माना है।

करवीरसमा ज्ञेया जातीबकुलपाटलाः ।
श्वेतमन्दारकुसुमं सितपद्म च तत्सममम् ॥
शमीपुष्पं बृहत्याश्च कुसुमं तुल्यमुच्यते ।
नागचम्पकपुन्नागौर धत्तूरकसमौ स्मृतौ ॥

मौलसिरा के पुष्पों का भी शिव पुजा में अधिक महत्वा दिया है -

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं शिवं स्पृष्ट्वेदमुच्यते ।
बकपुष्पेण चैकेन शैवमर्चनमुत्तमम् ॥

शंकर जी पर चढाये जाने अन्य योग्य पुष्प -

करवीर (कनेर)
मौलसिर
धतूरा
गुलाब
कुरैया
कास
मन्दार
अपराजिता
शमीका फूल
कुब्जक
शंखपुष्पी
अपामार्ग
कमल
चमेली
नागचम्पा
चम्पा
खस
तगर
नागकेसर
किंकिरात
गूमा
शीशम
गूलर
जयन्ती
बेला
पलाश
बेल पत्र
कुसुम्भ पुष्प
कुङ्कुम (केसर)
नील कमल
लाल कमल

शिव पूजा में निषिद्ध पत्र- पुष्प

कदम्बं फल्गुपुष्पं च केतकं च शिरीषकम् ।
तिन्तिणी बकुलं कोष्ठं कपित्थं गृञ्जनं तथा ॥
बिभीतकं च कार्पासं श्रीपर्णी पत्रकण्टकम्।
शाल्मली दाडिमीवर्ज्य धातकी शंकरार्चने ॥
केतकी चातिमुक्तं च कुन्दो यूथी मदन्तिका ।
शिरीषसर्जबन्धूककुसुमानि विवर्जयेत् ॥

अर्थात् निम्न लिखित पुष्पों को भगवान शिव जी पर नहीं चढाने चाहिए -

कदम्ब	पत्रकण्टक
सारहीन फूल	सेमल
केवडा (केतक)	अनार
शिरीष	धव
तिन्तिणी	केतकी
बकुल (मौलसिरी)	कुंद
कोष्ठ	जूही
कैथ	मदन्ती
गाजर	शिरीष
बहेड़ा	सर्ज
कपास	बन्धूक
गंभारी	

गंन्ध से हीन व मुरझाए पुष्प को भी भगवान पर नहीं चढाना चाहिए

विशेष -

कदम्ब पुष्प के विषय में = देवी पुराण में लिखा हुआ है कि **" कदम्बैश्चम्पकैरेवं नभस्ये सर्वकामदा"** अर्थात् भाद्रपदमास में कदम्ब और चम्पा से शिवकी पूजा करने से सभी इच्छाएं पूरी होती हैं।

कुन्द पुष्प के विषय में = कुन्द पुष्प के विषय में भी कहा है कि **" कुन्द पुष्पस्य निषेधेऽपि माघे निषेधाभावः "** अर्थात् कुन्द के पुष्प से शिव की पूजा करने का निषेध कहा है परन्तु माघ मास में कुन्द के पुष्प से भगवान शंकर की पूजा कर सकते हैं।

3.5.4 विष्णु पूजन के लिये विहित पत्र-पुष्प

भगवान विष्णु के पूजन में तुलसी का महत्वा सर्वाधिक है तथा सभी वस्तुओं में तुलसी विष्णु जी को सर्वाधिक प्रिया है पद्मपुराण में "अत्यन्त वल्लभा सा हि शाल ग्रामाभिधे हरौ"I यदि कोई व्यक्ति स्वर्ण, रत्न, मणि, बहुत सारे पुष्प चढायें और कोई केवल तुलसी मात्र चढाए तो भगवान को उन सभी में तुलसी ही प्रिया होगी। यहां तक की स्वर्ण , मणि आदि अंश मात्र भी तुलसी की समता नहीं कर सकते।

स्कन्द पुराण में -

मणिकाञ्चनपुष्पाणि तथा मुक्तामयानि च।
तुलसीदलमात्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्॥

पद्मपुराण में

तावद्गर्जन्ति भूतानि कौस्तुभादीनि भूतले।
यावन्न प्राप्यते कृष्णा तुलसी विष्णुवल्लभा॥

अर्थात् भगवान विष्णु को कौस्तुभ भी उतना प्रिया नहीं है जो कि सदैव भगवान के पास ही रहता है जितनी कि तुलसी पत्र मञ्जरी है।

श्यामापि तुलसी विष्णोः प्रिया गौरी विशेषतः।

अर्थात् विष्णु जी को श्याम (काली) तुलसी तो प्रिया है ही किन्तु गौरी तुलसी तो और भी अधिक प्रिया है।

स्कन्द पुराण में

करवीरप्रसूनं वा मल्लिका वाथ चम्पकम्।
उत्पलं शतपत्रं वा पुष्पे चान्यतमं तु वा॥
सुवर्णेन कृतं पुष्पं राजतं रत्नमेव वा।
मम पादाब्जपूजायामनर्हं भवति ध्रुवम्॥

अर्थात् तुलसी दल न होने पर भगवान की प्रिया से प्रिया वस्तु कनेर , वेला, चम्पा, कमल, पुष्प, सुवर्ण, रत्न आदि से निर्मित पुष्प भी निश्चित रूप से मुझे नही सुहावते हैं।

शास्त्रों में यहां तक लिखा हुआ है कि तुलसी से पूजित शिवलिङ्ग अथवा विष्णु भगवान की प्रतिमा के दर्शन मात्र से बड़े से बड़े पाप से मुक्त हो जाता है।

ब्राह्मपुराण -

लिङ्गमभ्यर्चितं दृष्ट्वा प्रतिमां केशवस्य च।
तुलसीपत्रनिकरैमुच्यते ब्रह्म हत्यया॥

यदि तुलसी प्राप्त न हो तो पुराने दिन की रखी हुई तुलसी से भी पूजन करने से भी भगवान प्रसन्न हो जाते हैं भगवान स्वयं कहते हैं कि एक तरफ ताजी मालती आदि पुष्पों की मालाएं हों और दूसरी तरफ बासी या सूखी हुई तुलसी हो तो भी भगवान बासी सूखी तुलसी को ही अपनायेंगे पद्म पुराण में **"त्यक्त्वा तु मालती पुष्प पुष्पा ण्यन्यानि च प्रभुः। गृह्णाति तुलसीं शुष्कामपि पर्युषितां प्रभुः"।**

अतः उपर्युक्त शास्त्र आदि वचनों से भी स्पष्ट है कि भगवान को तुलसी कितनी अधिक प्रिय है इसलिए भगवान विष्णु जी की पूजा में तुलसी का उपयोग अवश्यय करना चाहिए।

भगवान विष्णु पर चढाये जाने वाले पुष्प नरसिंहपुराण के अनुसार -

द्रोणपुष्पे तथैकस्मिन् माधवाय निवेदिते।
दत्त्वा दश सुवर्णानि यत्फलं तदवाप्नुयात्॥
द्रोणपुष्पसहस्त्रेभ्यः खादिरं वै प्रशस्यते।
खादिरपुष्पसहस्त्रेभ्यः शमीपुष्प विशिष्यते॥
शमीपुष्पसहस्त्रेभ्यो बकपुष्पं विशिष्यते।
बकपुष्पसहस्राद्धि नन्द्यावर्तो विशिष्यते॥
नन्द्यावर्तसहस्राद्धि करवीरं विशिष्यते।
करवीरस्य पुष्पाद्धि श्वेतं तत्पुष्पमुत्तमम्॥
कुशपुष्पसहस्त्राद्धि वनमल्ली विशिष्यते
वनमल्लीसहस्त्राद्धि चाम्पकं पुष्पमुत्तमम्॥
चाम्पकात् पुष्पसाहस्रादशोकं पुष्पमुत्तमम्।
अशोकपुष्पसाहस्त्राद् वासन्तीपुष्पमुत्तमम्।
वासन्तीपुष्पसाहस्राद् गोजटापुष्पमुत्तमम्॥

गोजटापुष्पसाहस्रान्मालतीपुष्पमुत्तमम् ।
मालतीपुष्पसाहस्रात् त्रिसंध्यं रक्तमुत्तमम् ॥
त्रिसंध्यरक्तसाहस्रात् त्रिसंध्यश्वेतकं वरम् ।
त्रिसंध्यश्वेतकसाहस्रात् कुन्दपुष्पं विशिष्यते ॥
कुन्दपुष्पसहस्राद्धि शतपत्रं विशिष्यते ।
शतपत्रसहस्राद्धि मल्लिकापुष्पमुत्तमम् ॥
मल्लिकापुष्पसाहस्राद् जातीपुष्पं विशिष्यते ॥

अर्थात् नरसिंहपुराणमें फूलोंका तारतम्य बतलाया गया है। कहा गया है कि दस स्वर्ण-सुमनोंका दान करनेसे जो फल प्राप्त होता है, वह एक गूमाके फूल चढ़ानेसे प्राप्त हो जाता है। इसके बाद उन फूलोंके नाम गिनाये गये हैं, जिनमें पहलेकी अपेक्षा अगला उत्तरोत्तर हजार गुना अधिक फलप्रद होता जाता है, जैसे- गूमाके फूलसे हजार गुना बढ़कर एक खैर, हजारों खैरके फूलोंसे बढ़कर एक शमीका फूल, हजारों शमीके फूलोंसे बढ़कर एक मौलसिरीका फूल, हजारों मौलसिरी पुष्पोंसे बढ़कर एक नन्द्यावर्त, हजारों नन्द्यावर्तोंसे बढ़कर एक कनेर, हजारों कनेरके फूलोंसे बढ़कर एक सफेद कनेर, हजारों सफेद कनेरसे बढ़कर कुशका फूल, हजारों कुशके फूलोंसे बढ़कर वनवेला, हजारों वनवेलाके फूलोंसे एक चम्पा, हजारों चम्पाओंसे बढ़कर एक अशोक, हजारों अशोकके पुष्पोंसे बढ़कर एक माधवी, हजारों वासन्तियोंसे बढ़कर एक गोजटा, हजारों गोजटाओंके फूलोंसे बढ़कर एक मालती, हजारों मालती फूलोंसे बढ़कर एक लाल त्रिसंधि (फगुनिया), हजारों लाल त्रिसंधि फूलोंसे बढ़कर एक सफेद त्रिसंधि, हजारों सफेद त्रिसंधि फूलोंसे बढ़कर एक कुन्दका फूल, हजारों कुन्द-पुष्पोंसे बढ़कर एक कमल-फूल, हजारों कमल-पुष्पोंसे बढ़कर एक बेला और हजारों बेला-फूलोंसे बढ़कर एक चमेलीका फूल होता है ।

शास्त्रों में उल्लेखित जिन पुष्पों से भगवान विष्णु की पूजा की जा सकती है जो पुष्प उन्हें लक्ष्मी की तरह प्रिय हैं -

मालतीबकुलाशोकशेफालीनवमल्लिकाः ।
आम्राततगरास्फोता मल्लिकामधुमल्लिकाः ॥
यूथिकाष्टपदं स्कन्दं कदम्बं मधुपिङ्गलम् ।
पाटला चम्पकं हृद्यं लवङ्गमतिमुक्तकम् ॥
केतकं कुरबं बिल्वं कहारं वासकं द्विजाः ।
पञ्चविंशतिपुष्पाणि लक्ष्मीतुल्यप्रियाणि मे ॥

मालती	अशोक
मौलसिरी	नवमल्लिका

जूही	पाटला
तगर	चम्पा
बेल	लवंग
अष्टपद	माधवी (अति मुक्तक)
स्कन्द	केवड़ा
कदम्ब	श्वेत कमल

और भी जो पुराणों में वर्णित है

स्कन्द पुराण में आया है अगस्त्य वृक्ष के पुष्प से भगवान विष्णु का पूजन करने से परं पद की प्राप्ति होती है"**अगस्त्यवृक्षसम्भूतैः कुसुमैरसितैः सितैः । येऽर्चयन्ति हि देवेशं तैः प्राप्तं परमं पदम् ॥**"

अग्नि पुराण में -

मालती मल्लिका चैव यूथिका चातिमुक्तकः । पाटला करवीरं जया च यावन्तिरेव च ॥ कुब्जकस्तगरश्चैव कर्णिकारः करण्टकः ।चम्पको धातकः कुन्दो वाणो बर्बरमल्लिका ॥ अशोकस्तिलकश्चम्पस्तथा चैवाऽऽरूषकः । अमी पुष्पाकराः सर्वे शस्ता केशवपूजने ॥

अर्थात् मालती, मल्लिका, अतिमुक्तक, पाटला, जया, यावन्ति, कुब्जई, तगर, कर्णिका, करण्टक (पीली कटसरैया), चम्पक, धातक, कुन्द, वाण, बर्बर मल्लिका (बेल का भेद) अशोक, चम्पा, अडूसा आदि से से केशव भगवान का पूजन किया जा सकता है।

विष्णुधर्मोत्तर के अनुसार तीसी, भूचम्पक, पुरन्ध्रि, गोकर्ण और नागकर्ण से भी विष्णु जी की पूजा की जा सकती है।

भगवान विष्णु जी की पूजा में निषिद्ध पुष्प

आक	चिचिड़ा (कोशातकी)
धतूरा	कैथ
कांची	लाङ्गुली
अपराजिता	सहिजन
भटकटैया	कचनार
कुरैया	बरगद
सेमल	गूलर
शिरीष	पाकर

पीपर	अमड़ा

3.5.5 सूर्य के लिए विहित और निषिध पत्र पुष्प

भविष्य पुराण के अनुसार भगवान सूर्य को पस सोने के सिक्के चढाने का जितना फल मिलता है उतना एक आक का फूल अर्पण करने से प्राप्त हो जाता है**"करवीरे नृपैकस्मिन्नकार्यं विनिवेदिते। दत्त्वा दशसुवर्णस्य निष्कस्य लभते फलम् ॥"** तथा फूलों का उत्तरोत्तर हजार फूल के बराबर एक फूल चढाने का फल -

जपापुष्पसहस्त्रेभ्यः करवीरं विशिष्यते।
करवीरसहस्त्रेभ्यो बिल्वपत्रं विशिष्यते॥
बिल्वपत्रसहस्त्रेभ्यः पद्ममेकं विशिष्यते।
वीर पद्मसहस्रेभ्यो वकपुष्पं विशिष्यते॥
वकपुष्पसहस्त्रेभ्यः कुशपुष्पं विशिष्यते।
कुशपुष्पसहस्त्रेभ्यः शमीपुष्पं विशिष्यते॥
शमीपुष्पसहस्त्रेभ्यो नृप नीलोत्पलं वरम्।
रक्तोत्पलसहस्रेण नीलोत्पलशतेन च।
रक्तैश्च करवीरैश्च यस्तु पूजयते रविम् ॥

अर्थात् हजार अड़हुलके फूलोंसे बढ़कर एक कनेर का फूल होता है, हजार कनेर के फूलों से बढ़कर एक बिल्वपत्र, हजार बिल्वपत्रों से बढ़कर एक 'पद्म' (सफेद रंगसे भिन्न रंगवाला), हजारों रंगीन पद्म-पुष्पों से बढ़कर एक मौलसिरी, हजारों मौलसिरियों से बढ़कर एक कुशका फूल, हजार कुशके फूलोंसे बढ़कर एक शमीका फूल, हजार शमीके फूलोंसे बढ़कर एक नीलकमल, हजारों नील एवं रक्त कमलोंसे बढ़कर 'केसर' और लाल कनेर' का फूल होता है।

भगवान सूर्य पर चढाने योग्य पुष्प

बेला	जपा
मालती	यावन्ति
काश	कुब्जक
माधवी	कर्णिकार
पाटला	चम्पा
कनेर	कुन्द

बाण

बर्बर मल्लिका

अशोक

तिलक

कमल मौलसिरी

अगस्त्य

पलाश के पुष्प

दूर्वा

मल्लिका मालती चैव दूर्वा काशोऽतिमुक्तकः ।
पाटला करवीरश्च जपा यावन्तिरेव च॥ (भविष्य पुराण)

3.6 धूप मुद्रा

धूप मुद्रा के लिए दायें हाथ की तर्जनी की जड़ में अंगूठा लगाने से धूप मुद्रा का निर्माण होता है घूप मुद्रा के पश्चात अपने आराध्य की धूप से आरती करती चाहिए धूप दिखाते समय हाथ को नहीं फेलाते हैं तथा धूप दिखाने के पश्चात भी धूप मुद्रा प्रदर्शित करनी चाहिए ।

3.7 दीप मुद्रा

दाएं हाथा के अंगूठे से मध्यमा का मूल भाग स्पर्श करने से दीप मुद्रा का निर्माण होता है। अतः भगवान को मुद्रा दिखाने के पश्चात आरती करनी चाहिए।

दीप जलाते समय इन बातों का भी ध्यान रखना चाहिए -

- कभी भी तेल और घी का दीप जला रहे हैं तो कभी भी तेल के दीप से घी का दीप नहीं जलाना चाहिए।

3.8 नैवेद्य मुद्रा

दाएं हाथ की अनामिका अंगुली की जड़ में अंगूठा मिलाने से नैवेद्य मुद्रा बन जाती है। नेवेद्य मुद्रा दिखाने के पश्चात भगवान को नैवेद्य अर्पण करना चाहिए। नैवेद्य को निवेदित करने से पूर्व अन्न को ढक कर रखना चाहिए। तथा देवता के लिए नैवेद्य अर्पण करते समय पंच प्राणों की संतुष्टि के लिए पंच ग्रास अवश्य ही देना चाहिए।

3.9 सारांश

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आपने जान लिया है कि पंचोपचार पूजन पद्धति की पांच मुंद्राए भी होती हैं गंध मुद्रा, पुष्प मुद्रा, धूप मुद्रा, दीप मुद्रा और नैवेद्य मुद्रा। इन मुद्रा का नाम इन की वस्तु के नाम पर ही रखा गया है। इसमें हाथों की अङ्गुलियों की विशेष स्थिति बनाकार भगवान को दिखाया जाता है तथा इन मुद्राओं के द्वारा ही देवी देवता मुद्रा से सम्बन्धित पूजन सामग्री को ग्रहण करते हैं।

इस इकाई में हमने ये भी जाना की किस देवता को कौन से पुष्प सर्वाधिक प्रिया है जिससे उन देवता से सम्बन्धित पुष्प चढाने से उस देवता की कृपा हमें प्राप्त हो सके एवं किस पुष्प को किन देवताओं पर नहीं चढाना चाहिए ये भी हमने जान लिया है जैस भगवान गणेश जी को तुलसी को छोड़कर सभी पत्र पुष्प प्रिय है।

3. 10 बोध प्रश्न

1. दायें हाथ की किन किन उगलियों से गन्ध मुद्रा बनती है ?
2. किस देवता को तुलसी अत्यधिक प्रिया है ?
3. भावान शिव पर हजार शमीके पत्तों से बढकर एक..... है।
4. दाएं हाथा के अंगूठे से मध्यमा का मूल भाग स्पर्श करने से किस मुद्रा का निर्माण होता है ?
5. कुन्दपुष्पसहस्राद्धि ..... विशिष्यते।

3.11 शब्दावली

- **अनामिका** = कनिष्ठका और मध्यमिका के बीच में आने वाली अङ्गुली
- **शतं** = सौ
- **मुद्रा** = हाथ आदि की विशेष स्थिति
- **कनिष्ठका** = हाथ की सबसे छोटी अंङ्गुली
- **एकविंशति** = इक्कीस (21)
- **नैवेद्य** = भगवान को लगाए जाने वाले भोग (अन्न , मिठाई आदि) को नैवेद्य कहते हैं।
- **वर्जयेत्** = निषेध करना चाहिए (वृज् धातु का विधि लिंङ् प्रथम पुरुष एक वचन का रूप)
- **विहित** = ग्राह्य भाव

3.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. हाथ के अंगूठे और अनामिका अङ्गुलि
2. विष्णु भगवान को
3. एक नील कमल

4. दीप मुद्रा
5. शतपत्रं

3.13 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- पद्म पुराण
- स्कन्दपुराण
- ब्रह्म पुराण
- अग्नि पुराण
- भविष्य पुराण

3.14 निबन्धात्मक प्रश्न

3 पंचोपचार पद्धति मुद्राओं से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

4 देवताओं से सम्बधित विहित और निषेध पुष्पों का उल्लेख कीजिए।

इकाई - 4 षोडशोपचार पूजन

इकाई की संरचना –

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 षोडशोपचार परिचय
4.4 षोडशोपचार पूजन के प्रकार
4.4.1 १आवाहन, २आसन, ३पाद्य, ४अघ्र्य,
4.4.2 ५आचमन, ६स्नान, ७ वस्त्र, ८ यज्ञोपवीत,
4.4.3 ९ गंध १०पुष्प ११ धूप १२ दीप
4.4.4 १३ नैवेद्य १४ ताम्बूल १५दक्षिणा १६ प्रदक्षिण
4.5 सारांश
4.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
4.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
4.8 निबन्धात्मक प्रश्न

4.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई द्वितीय खण्ड के 4 इकाई षोडशोपचार पूजन नामक शीर्षक से सम्बंधित है। इस इकाई के माध्यम से हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि षोडशोपचार पूजन क्या है। और इसे करने का क्या विधान है। इसके बारे में हम इस इकाई में विस्तृत रूप से जानने व समझने का प्रयास करेंगे। प्रस्तुत इकाई में षोडशोपचार विधि का क्या-क्या क्रम व किन-किन पदार्थो के द्वारा पूजन किया जाता है। इस विधि को किस प्रकार से किया जाता है। उसे हम इस इकाई के माध्यम से समझने के प्रयास करेंगे।

4.2 उद्देश्य

- ❖ षोडशोपचार क्या है इसके बारे में आप जान सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन को समझ सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार का क्या क्रम है उसे जानने में आप सफल हो सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन में कौन-कौन सी सामग्रियों का प्रयोग होता है उसे जान सकेंगे।

4.3 षोडशोपचार परिचय

षोडशोपचार का भारतीय वैदिक वांग्मय में बड़ा ही महत्त्व माना गया है। किसी भी देवी-देवताओं के पूजन में इसे विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया जाता है। पूजन कि अनेकानेक विधियों में से षोडशोपचार पूजन विधि भी एक है षोडश का अर्थ है सोलह अर्थात वे सोलह तरीके, जिनसे देवी-देवताओं का पूजन-यजन किया जाता है। देव पूजन की प्रविधि सामान्यतया अतिथि सत्कार की पुरातन परंपरा के समान है। इसके अंतर्गत हम भगवान का आवाहन करते हुए विभिन्न सामग्री से उनकी सेवा सत्कार की भावना से पूजन करते हैं। पूजन विधि के लिए कोई एक समान प्रक्रिया निर्धारित नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रत्येक अवसरों व देवी-देवतओं के अनुसार प्रक्रिया परिवर्तित होती रहती है। विद्वानों का मतैक्य भी संभव नहीं और भक्ति के भाव का जो विधान है। वह भी देश काल परिस्थिति व परम्पराओं के अनुसार भिन्न-भिन्न है। फिर भी जनसामान्य के पूजन-अर्चन विधि के लिए पूजा पद्धति की एक सामान्य रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है। इसके साथ ही कुछ सामान्य दिशानिर्देश भी बनाए जा सकते हैं, जैसे-

किसी भी पूजा में शुभ मुहूर्त आदि का विचार किया जाना आवश्यक है। दैनिक पूजा को छोडकर।

प्रत्येक पूजारंभ के पूर्व आत्मशुद्धि, आसन शुद्धि, पवित्री धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, दीप पूजन, शंख पूजन, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन आदि अवश्य करने चाहिये। भूमि, वस्त्र आसन आदि स्वच्छ व शुद्ध हों। आवश्यकतानुसार चौक, रंगोली, मंडप बना लिया जाये। यजमान पूर्वाभिमुख होकर बैठे, और पुरोहित उत्तराभिमुख होकर बैठे। वाहित यजमान की पत्नी पति के साथ ग्रंथिबन्धन कर पति (जहाँ-जहाँ यह लोक व्यवहार पद्यति हो) की वामंगिनी के रूप में बैठे। पूजन के समय आवश्यकतानुसार अंगन्यास, करन्यास, मुद्रा आदि को भी किया जा सकता है।

षोडशोपचार पूजन में निम्न सोलह तरीके से विधिपूर्वक पूजन किया जाता है। वह सोलह प्रकार कोन-कोन से हैं।

१. षोडशोपचारास्तु कर्मप्रदीपे –

'आवाहना-ऽऽसने पाद्यमर्घ्यमांचमनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात् ॥१॥

धूपं दीपं च नैवेद्य ताम्बूलं च प्रदक्षिणा। पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश ॥२॥

"फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात्।" इति।

१आवाहन, २आसन, ३पाद्य, ४अघ्र्य, ५आचमन, ६स्नान, ७ वस्त्र, ८ यज्ञोपवीत, ९ गंध १०पुष्प ११ धूप १२ दीप १३ नैवेद्य १४ ताम्बूल १५दक्षिणा १६ प्रदक्षिण

4.4 षोडशोपचार पूजन

गणेशाम्बिका पूजन

यजमान तिलक-

पुनः ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुंकुम तिलक करें।
ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकान्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।

स्वस्तिवाचन

उसके बाद यजमान आचार्य एवं अन्य ऋत्विजों वैदिक ब्राह्मणों के साथ हाथ में पुष्पाक्षत लेकर स्वस्त्ययन पढ़े।
ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ परीतास उद्भिदः।

देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रामदितिं दक्षमश्रिधम्।
अर्यमणं वरुणँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।
तन्नो व्वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रसो यत्रा पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्राः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरू। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुब्भ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

हाथ में लिए पुष्प और अक्षत गणेश एवं गौरी पर चढ़ा दें। पुनः हाथ में पुष्प अक्षत आदि लेकर मंगल श्लोक पढ़े।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्योनमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।

वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।। 1।।

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ।। 2।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।। 3।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। 4।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।

सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। 5।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।। 6।।
अभीप्सितार्थ-सिद्धiर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।। 7।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! ।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।। 8।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।

येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ।। 9।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।

विद्यावलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। 10।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।। 11।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥12॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ 13॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।

पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ 14॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ 15॥

हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दें।

गौरी का ध्यान -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

1. **आवाहन -**

गणेशाम्बिका-पूजन-आवाहन - दाहिने हाथ में अक्षत लेकर 'एकदन्तं शूर्पकर्णं' से 'पूजां यागं च रक्ष में पर्यन्त श्लोक तथा 'ॐ गणानां त्वा०' से 'स्थापयामि' पयन्त पढ़कर गणेशजी पर अक्षत और पुष्प छोड़े।

हस्तेऽनतान् गृहीत्वा, गणपतिमावाहयेत् 'षोडशोपचारैः पूजयेच्च । तद्यथा

एकदन्तं शूर्पकरणं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ॥१॥
ध्यायेद् गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम् ।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम् ॥ २॥
दन्ताक्षमालापरशुं पूर्णमोदकधारिणम् ।
मोदकासक्तशुण्डाग्रमेकदन्तं विनायकम् ॥३॥
(वा) हे हेरम्ब त्वमेह्यो हि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज ! |

सिद्धिबुद्धिपते ध्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥१॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् ।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥२॥
आवाहयामि पूजार्थ रक्षार्थं च ममक्रतोः ।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ॥३॥

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।
एह्यो हिहेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष !।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

हाथ के अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें।
पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

गौरी का आवाहन –

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो। क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

1 प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। !

2 आसन

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम् ।

स्वर्णसिंहासनं चारू: गृह्णीष्व सुरपूजित॥

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम् । उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नम: आसनं समर्पयामि।

आसन - विचित्ररत्नखचितं से आसनं सपर्पयामि पयन्त पढकर आसन प्रदान करे या अक्षत छोडो ।

3 पद्य

सर्वतीर्थसमुदभूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।

विघ्नराज गृहाणेमं भगवन् भक्तवत्सलः॥
एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमःपाद्यं समर्पयामि।

पाद्य- सर्वतीर्थ से पाद्यं समर्पयामि तक का पाठ कर गणेशाम्किा पर एक आचमनी जल प्रदान करें ।

4 अर्ध्य

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तू गृहाणा करूणाकर ।

अर्घ्यं च फल संयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि ।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमःअध समर्पयामि।

अर्घ्य - गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तू से नमःअध समर्पयामि तक पढकर गणेश- गौरी को अर्घ्य दे।

5 आचमन

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।

गंगोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि।

चाचमन- विनायक नमस्तुभ्यं से आचमनं समर्पयामि तक पढकर एक आचमनी जल छोड दें।

6 स्नान

दुग्धस्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।

पावनं यज्ञहेतुश्च पय: स्नानार्थपर्तिम्।
ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

पयस्नान – कामधेनुसमुद्भूतं से पय:स्नानं समर्पयामि पर्यन्त मन्त्र श्लोक पढकर गोरी- गणेश को दूध से स्नान करें।

दधिस्नान -

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्।

दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू षि तारिषत्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

दधिस्नान- पयसस्तु समुद्भूतं से दधिस्नानं समपर्यामि तक कहकर दही से स्नान कराये।

घृत स्नान –

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।

अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

घृत- स्नान – नवनीत- समुत्पन्नं से धृतस्नानं समर्पयामि पर्यन्त उच्चारण कर गौरी – गणपति को घी से स्नान कराये ।

मधुस्नान -

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥
ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

मधुस्नान- पुष्परेणुसमुद्भूतं से सधुस्नानं समर्पयामि पर्यन्त गौरी – गणेश को मधु से स्नान करावे ।

शर्करास्नान –

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ अपा रसमुद्वयस सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा रसस्य यो रसस्तं वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

शर्करा स्नान- इक्षुरससमुद्भूतां से शर्करास्नानं समर्पयामि तक कहकर गौरी – गणेश को चीनी से नहलावे।

पञ्चामृतस्नान -

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा
सोदेशेऽभवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

7 वस्त्र

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।।
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं वस्त्रां समर्पयामि। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नभ: आचमनं

समर्पयामि (अथवा) ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रोर्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

वस्त्र- ॐ युवा सुवासाःसे लेकर वस्त्रं समर्पयामि पर्यन्त पढकर गौरी- गणपतिको वस्त्र चढावे। और आचमनं समर्पयामि तक कहकर एक आचमनी चल चढावे। अथवा वस्त्रोपवस्त्र के स्थान में रक्षासूत्रं समर्पयामि कहकर चढावे। एवं अलङ्करणार्थेऽक्षतान् समर्पयामि पर्यन्त पढकर अक्षत छोड दें।

8 यज्ञोपवित

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत (जनेऊ) - ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं से यज्ञोपवीतं समर्पयामि पर्यन्त कहकर गणेशजी को यज्ञोपवीत चढावे। और आचमनं समर्पयामि पढकर एक आचमनी जल समर्मित करें।

9 गंध

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ तवां गन्धर्व्वा आखनंस्तवामिन्नद्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्वद्दिवान्नयक्ष्मादमुच्यत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

गन्ध श्री खण्डं चन्दं से गन्धं समर्पयामि तक उच्चारण कर गौरी- गणेश को गन्ध (चन्दन) लगायें।

10 पुष्प

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

पुष्प – माल्यादीनि से पुष्पमालां समर्पयामि पर्यन्त पढकर गौरी गणपति को सुगन्धित फूल की माला चढायें ।

11 धूप

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः। देवानामसि वद्दितम सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

12 दीप

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।। ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वद्दिना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालमनम्।

दीप- 'दीपं समर्पयामि' तक पढकर गौरी- गणेश के आगे दीपक चलायें । और हाथ धो ले ।

13 नैवेद्य

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

नैवेद्य 'वैवेद्यं गृह्यतां देवा' से 'नैवेद्यं समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र – श्लोक पढकर गौरी – गणेश को लड्डू या मिष्ठान्न का भोग लगायें। और 'आचमनीयं मध्ये पढकर चार आचमानी चल चढायें।

14 ताम्बूल

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

ताम्बूल – 'पूगीफलं' मंत्र पढ उच्चारण कर गौरी – गणेश के आगे पान- सोपारी रखे।

15 दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः से द्रव्य- 'दक्षिणाांं समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी – गणेश को यथाशक्ति दक्षिणा चढावे।

16 प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

प्रदक्षिणा- 'यानि कानि च' से 'प्रदक्षिणां समर्ययामि' तक उच्चरण कर गणेशाम्किका की दोनों हाथों से प्रदक्षिणा करें।

प्रार्थना।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गः परिवारः प्रीयताम्।।
श्रीविघ्नराजप्रसादात्कर्तव्यामुककर्मनिर्विघ्नसमाप्तिश्चास्तु।

4.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से हमने यह जानने का प्रयास किया कि षोडशोपचार पूजन विधि को किस प्रकार से किया जाता है। तथा इसके करने का क्या विधान है,और मंत्रों का क्रम किस प्रकार से रहता है। सांथ ही कौन-कौन सी सामग्री के द्वारा इन सोलह प्रकार से पूजन किया जा सकता है। किसी भी मांगलिक कार्य में मुख्यतः इन्ही षोडश मन्त्रो के द्वारा पूजन किया जाता है। इस प्रकार से आप समझ सके होंगे कि षोडशोपचार पूजन क्या है करके।

4.6 बोध प्रश्न

१ षोडश का अर्थ है ?

क १२ ख १४ ग १६ घ १८

२ प्रदक्षिणा कि जाती है

क आरती से पूर्व ख मन्त्र पुष्पांजली के बाद

ग संकल्प के बाद घ विसर्जन के बाद

३ प्रतिष्ठा कि जाती है

क आवाहन के बाद ख आवाहन से पूर्व

ग स्नान के बाद घ तिलक के बाद

४ पूजा में सर्वप्रथम होता है

क आचमन ख शिखाबंधन

ग आसन शुद्धि घ आवाहन

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

१ ग २ ख ३ क ४ क

4.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्म पूजाप्रकाश पं लालविहारी मिश्र गीताप्रेस गोरखपुर
कर्मठ गुरुः पं मुकुन्द बल्लभ मोतीलाल वनारसीदास , वाराणसी
सर्व देव पूजा पद्धति शिव दत्त मिश्र चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

4.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षोडशोपचार पूजन से आप क्या समझते है, उसका वर्णन करें
2. सम्पूर्ण संकल्प विधि को लिखें

इकाई - 5 षोडशोपचार पूजन विधि

इकाई की संरचना –

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 षोडशोपचार परिचय
5.4 षोडशोपचार पूजन के प्रकार
5.5 सारांश
5.6 बोध प्रश्न
5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर
5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

5.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई द्वितीय खण्ड के पांचवीं इकाई षोडशोपचार पूजन नामक शीर्षक से सम्बंधित है। इस इकाई के माध्यम से हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि षोडशोपचार पूजन विधि क्या है और इसे करने का क्या विधान है। इसके बारे में हम इस इकाई में विस्तृत रूप से जानने व समझने का प्रयास करेंगे। प्रस्तुत इकाई में षोडशोपचार विधि का क्या-क्या क्रम व किन-किन पदार्थो के द्वारा पूजन किया जाता है। इस विधि को किस प्रकार से किया जाता है।उसे हम इस इकाई के माध्यम से समझने के प्रयास करेंगे|

5.2 उद्देश्य

- ❖ षोडशोपचार क्या है इसके बारे में आप जान सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन विधि को समझ सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार का क्या क्रम है उसे जानने में आप सफल हो सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन में कौन-कौन सी सामग्रियों का प्रयोग होता है उसे जान सकेंगे।

5.3 षोडशोपचार परिचय

षोडशोपचार का भारतीय वैदिक वांग्मय में बड़ा ही महत्त्व माना गया है। किसी भी देवी-देवताओं के पूजन में इसे विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया जाता है। पूजन कि अनेकानेक विधियों में से षोडशोपचार पूजन विधि भी एक है षोडश का अर्थ है सोलह अर्थात वे सोलह तरीके, जिनसे देवी-देवताओं का पूजन-यजन किया जाता है। देव पूजन की प्रविधि सामान्यतया अतिथि सत्कार की पुरातन परंपरा के समान है। इसके अंतर्गत हम भगवान का आवाहन करते हुए विभिन्न सामग्री से उनकी सेवा सत्कार की भावना से पूजन करते हैं। पूजन विधि के लिए कोई एक समान प्रक्रिया निर्धारित नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रत्येक अवसरों व देवी-देवतओं के अनुसार प्रक्रिया परिवर्तित होती रहती है। विद्वानों का मतैक्य भी संभव नहीं और भक्ति के भाव का जो विधान है ।वह भी देश काल परिस्थिति व परम्पराओं के अनुसार भिन्न-भिन्न है। फिर भी जनसामान्य के पूजन-अर्चन विधि के लिए पूजा पद्धति की एक सामान्य रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है। इसके साथ ही कुछ सामान्य दिशानिर्देश भी बनाए जा सकते हैं, जैसे-

किसी भी पूजा में शुभ मुहूर्त आदि का विचार किया जाना आवश्यक है ।दैनिक पूजा को छोडकर ।

प्रत्येक पूजारंभ के पूर्व आत्मशुद्धि, आसन शुद्धि, पवित्री धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, दीप पूजन, शंख पूजन, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन आदि अवश्य करने चाहिये।
भूमि, वस्त्र आसन आदि स्वच्छ व शुद्ध हों।
आवश्यकतानुसार चौक, रंगोली, मंडप बना लिया जाये।
यजमान पूर्वाभिमुख होकर बैठे, और पुरोहित उत्तराभिमुख होकर बैठे।
विवाहित यजमान की पत्नी पति के साथ ग्रंथिबन्धन कर पति (जहाँ-जहाँ यह लोक व्यवहार पद्यति हो) की वामंगिनी के रूप में बैठे।
पूजन के समय आवश्यकतानुसार अंगन्यास, करन्यास, मुद्रा आदि को भी किया जा सकता है|

षोडशोपचार पूजन में निम्न सोलह तरीके से विधिपूर्वक पूजन किया जाता है।वह सोलह प्रकार कोन-कोन से हैं |१आवाहन, २आसन, ३पाद्य, ४अर्घ्य, ५आचमन, ६स्नान, ७वस्त्र, ८उपवस्त्र अथवा यज्ञोपवीत, ९गंध (चंदन) लगाना, १०पुष्प अर्पित, ११धूप दिखाना, १२दीप-आरती करना, १३नैवेद्य निवेदित करना,१४नमस्कार करना, १५परिक्रमा करना, १६मंत्रपुष्पांजलि

5.4 षोडशोपचार पूजन विधि

गणेशाम्बिका पूजन

आचमन- (आत्म शुद्धि के लिए)

ॐ केशवाय नमः,
ॐ नारायणाय नमः,
ॐ माधवाय नमः।
तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें।
ॐ हृषीकेशाय नमः॥
पुनः बायें हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने ऊपर और पूजा सामग्री पर निम्न श्लोक पढ़ते हुए छिड़कें।
ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥
ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आसन शुद्धि-

नीचे लिखा मंत्र पढ़कर आसन पर जल छिड़के-
ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रां कुरु चासनम्।।

शिखाबन्धन-

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः।
मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।।

कुश धारण-

निम्न मंत्र से बायें हाथ में तीन कुश तथा दाहिने हाथ में दो कुश धारण करें।
ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रोण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।
पुनः दायें हाथ को पृथ्वी पर उलटा रखकर "ॐ पृथिव्यै नमः" इससे भूमि की पञ्चोपचार पूजा का आसन शुद्धि करें।

यजमान तिलक-

पुनः ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुंकुम तिलक करें।
ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकान्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।

स्वस्तिवाचन

उसके बाद यजमान आचार्य एवं अन्य ऋत्विजों वैदिक ब्राह्मणों के साथ हाथ में पुष्पाक्षत लेकर स्वस्त्ययन पढ़े।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ परीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाँ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानाँ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रामदितिं दक्षमश्रिधम्।
अर्यमणं वरुणँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।
तन्नो व्वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रसो यत्रा पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्राः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरू। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुब्भ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।
हाथ में लिए पुष्प और अक्षत गणेश एवं गौरी पर चढ़ा दें। पुनः हाथ में पुष्प अक्षत आदि लेकर मंगल श्लोक पढ़े।
श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्योनमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ 1॥
वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! । निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ 2॥
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ 3॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥ 4॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा । सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ 5॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ 6॥
अभीप्सितार्थ-सिद्धiर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ 7॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! । शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ॥ 8॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ॥ 9॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्यावलं
दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ 10॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥ 11॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥12॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ 13॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ 14॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ 15॥
हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दें।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करे।

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ स्वस्ति श्रीमन्मुकन्दसच्चिदानन्दस्याज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीये परार्धे एकपञ्चाशत्तमे वर्षे प्रथममासे प्रथमपक्षे प्रथमदिवसे द्वात्रिंशत्कल्पानां मध्ये अष्टमे श्रीश्वेतबाराहकल्पे स्वायम्भुवादिमन्वतराणां मध्ये सप्तमे वैवस्वतमन्वन्तरे कृत-त्रोता-द्वापर-कलिसंज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये वर्तमाने अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे तथा पञ्चाशत्कोटियोजनविस्तीर्ण-भूमण्डलान्तर्गतसप्तद्वीपमध्यवर्तिनि जम्बूद्वीपे तत्रापि श्रीगङ्गादिसरिद्भिः पाविते परम-पवित्रे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतकाशी-कुरुक्षेत्र-पुष्कर-प्रयागादि-नाना-तीर्थयुक्त कर्मभूमौ मध्यरेखाया मध्ये अमुक दिग्भागे अमुकक्षेत्रे ब्रह्मावर्तादमुकदिग्भागा- वस्थितेऽमुकजनपदे तज्जनपदान्तर्गते अमुकग्रामे श्रीगङ्गायमुनयोरमुकदिग्भागे श्रीनर्मदाया अमुकप्रदेशे देवब्राह्माणानां सन्निधौ श्रीमन्नृपतिवीरविक्रमादित्य-समयतोऽमुक संख्यापरिमिते प्रवर्तमानवत्सरे प्रभवादिषष्ठिसम्वत्सराणां मध्ये अमुकनाम सम्वत्सरे, अमुकायने, अमुकगोले, अमुकऋतौ, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, यथांशकलग्नमुहूर्तनक्षत्रायोगकरणान्वित.अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये, अमुकराशिस्थिते चन्द्रे, अमुकराशिस्थे देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु, सत्सु एवं ग्रहगुणविशिष्टेऽस्मिन्शुभक्षणे अमुकगोत्रोऽमुकशर्म्मा वर्मा-गुप्त-दास सपत्नीकोऽहं श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थम् अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतस्यामुकमन्त्रपुरश्चरणस्य सङ्गतासिद्धiर्थ- ममुकसंख्यया परिमितजपदशांश-होम-तद्दशांशतर्पण-तद्दशांश-ब्राह्मण-भोजन रूपं कर्म करिष्ये ।

अथवा – ममात्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य द्विपदचतुष्पदसहितस्य सर्वारिष्टनिरसनार्थं सर्वदा शुभफलप्राप्तिमनोभि- लषितसिद्धिपूर्वकम् अमुकदेवताप्रीत्यर्थं होमकर्माहं करिष्ये।

अक्षत सहित जल भूमि पर छोड़ें।

पुनः जल आदि लेकर-

तदङ्गत्वेन निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादिपूजनम् आचार्यादिवरणञ्च करिष्ये।
तत्रादौ दीपशंखघण्टाद्यर्चनं च करिष्ये।

जलपात्र (कर्मपात्र) का पूजन-

इसके बाद कर्मपात्र में थोड़ा गंगाजल छोड़कर गन्धाक्षत, पुष्प से पूजा कर प्रार्थना करें।
ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति!।
नर्म्मदे! सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि नमस्करोमि।
कर्मपात्र का पूजन करके उसके जल से सभी पूजा वस्तुओं पर छिड़कें.

घृतदीप-(ज्योति) पूजन-

"वह्निदैवतायै दीपपात्राय नमः" से पात्र की पूजा कर ईशान दिशा में घी का दीपक जलाकर अक्षत के ऊपर रखकर
ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा,
सूर्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा,
सूर्योव्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।।
ज्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्रा स्थिरो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

शंखपूजन

शंख को चन्दन से लेपकर देवता के वायीं ओर पुष्प पर रखकर शंख मुद्रा करें।
ॐ शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गासरस्वती।।
त्रौलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्जन्य! नमोऽस्तुते।।
पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः
शंखस्थदेवतामावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

घण्टा पूजन-

ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः,
आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।
गरुडमुद्रा दिखाकर घण्टा बजाएं। दीपक के दाहिनी ओर स्थापित कर दें।

धूपपात्र की पूजा-

ॐ गन्धर्वदैवत्याय धूपपात्राय नमः इस प्रकार धूपपात्र की पूजा कर स्थापना कर दें।

गणेश गौरी पूजन

हाथ में अक्षत लेकर-भगवान् गणेश का ध्यान-
गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

गौरी का ध्यान -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

गणेश का आवाहन-

देवता अपने अंग, परिवार, आयुध और शक्तिसहित पधारें तथा मूर्ति में प्रतिष्ठित होकर हमारी पूजा ग्रहण करें', इस हेतु संपूर्ण शरणागतभाव से देवता से प्रार्थना करना, अर्थात् उनका `आवाहन' करना । आवाहन के समय हाथ में चंदन, अक्षत एवं तुलसीदल अथवा पुष्प लें । आवाहन के उपरांत देवता का नाम लेकर अंत में 'नमः' बोलते हुए उन्हें चंदन, अक्षत, तुलसीrदल अथवा पुष्प अर्पित कर हाथ जोडें ।

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे
वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ।।
एह्वे हिहेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष !।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।।"

हाथ के अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें।
पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

गौरी का आवाहन –

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।
ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।।"

प्रतिष्ठा-

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ॥

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन॥

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। !

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

आसान के लिए पुष्प समर्पित करें।

"ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।

आसनञ्च मया दत्त गृहाण परमेश्वर ।

आसनं समर्पयामि ॥"

आचमनी से चरणों को धोने के लिए जलं समर्पित करें।

ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।

पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।

पाद्यं समर्पयामि ॥

गन्ध पुष्प अक्षत युतं जलं तीन बार समर्पित करें।

ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पाक्षतैः सह ।

करुणां कुरु मे देव गृहाणायं नमोऽस्तुते ॥

आचमनीयम्

आचमनी से आचमन के लिये जल समर्पित करें।

ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।

आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।

आचमनीयं समर्पयामि ॥

देवता के आगमन पर उन्हें विराजमान होने के लिए सुंदर आसन दिया है, ऐसी कल्पना कर विशिष्ट देवता को प्रिय पत्रपुष्प आदि (उदा. श्रीगणेशजी को दूर्वा-, शिवजी को बेल, श्रीविष्णु को तुलसी (अथवा अक्षत अर्पित करें। (आसन के लिए अक्षत समर्पित करे ।(देवता को ताम्रपात्र में रखकर उनके चरणों पर आचमनी से जल चढाएं। आचमनी में जल लेकर उसमें चंदन, अक्षत तथा पुष्प डालकर, उसे मूर्ति के हाथ पर चढाएं। आचमनी में कर्पूरमिश्रित जल लेकर-, उसे देवता को अर्पित करने के लिए ताम्रपात्र में छोडें। धातु की मूर्ति, यंत्र, शालग्राम इत्यादि हों, तो उन पर जल चढाएं। पाद्य, अर्घ्य .

आचमनीय, स्नानीय और पुनराचमनीय हेतु जल अर्पण करें.

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।
एतानि पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि समर्पयामि गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

दुग्धस्नान-

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

दधिस्नान -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः।
सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँषि तारिषत्।।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

घृत स्नान -

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।
अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।
नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

मधुस्नान -

ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः।
मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

शर्करास्नान -

ॐ अपा रसमुद्वयस सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा रसस्य यो रसस्तं वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

पञ्चामृतस्नान -

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा
यामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

आचमन -

शुद्धोकदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र-

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।।
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रां समर्पयामि।

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।
वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि॥
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
वस्त्र के बाद आचमन के लिए जल दे।

उपवस्त्र-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः।
वासो अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो॥
यस्याभावेन शास्त्रोक्तं कर्म किञ्चिन्न सिध्यति।
उपवस्त्रं प्रयच्छामि सर्वकर्मापकारकम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।
उपवस्त्र न हो तो रक्त सूत्र अर्पित करे।

आचमन - उपवस्त्र के बाद आचमन के लिये जल दें।

यज्ञोपवीत -

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीततेनोपनह्यामि।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !॥
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।
यज्ञोपवीतं समर्पयामि॥

आचमन -यज्ञोपवीत के बाद आचमन के लिये जल दें।

चन्दन -

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत॥
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षत -

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमाला -

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वा -

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनुसहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

सिन्दूर-

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः।
घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।
सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

अबीर गुलाल आदि नाना परिमल द्रव्य-

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर!।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धिद्रव्य-

ॐ अहिरिव0 इस पूर्वोक्त मंत्र से चढ़ाये
ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः।
हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ँ सं परि पातु विश्वतः।।
दिव्यगन्धसमायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं वै परिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूप-

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वह्नितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीप-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।।
ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि।

हस्तप्रक्षालन -

'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

नैवेद्य-

पुष्प चढ़ाकर बायीं हाथ से पूजित घण्टा बजाते हुए।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।
नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ऋतुफल -
ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ँ हसः।।
इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

जल-
फलान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। जल अर्पित करे।
ॐ मध्ये-मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि हस्तप्रक्षालनं समर्पयामि मुखप्रक्षालनं समर्पयामि।

करोद्वर्तन-
ॐ अ ँ शुना ते अ ँ शुः पृच्यतां परुषा परुः।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।
चन्दनं मलयोद्भुतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।
करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

ताम्बूल -
ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।
पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि।
(इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

विशेषार्घ्य-

ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रखकर अर्घ्यपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें ः-
ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रौलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्ृछतं वाञ्छितार्थद।।
गृहाणाघ्र्यमिमं देव सर्वदेवनमस्कृतम्।
अनेन सफलाघ्र्येण फलदोऽस्तु सदा मम।

आरती-

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः।
दिवः सदा ँ सि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।
कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अरार्तिकं समर्पयामि।
(कर्पूर की आरती करें, आरती के बाद जल गिरा दें।)

मन्त्र पुष्पांजलि-

अंजली में पुष्प लेकर खड़े हो जायें।

ॐ मालतीमल्लिकाजाती- शतपत्रादिसंयुताम्।
पुष्पांजलिं गृहाणेश तव पादयुगार्पितम्।।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्रा पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।
नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। (पुष्पाञ्जलि अर्पित करे।)

प्रदक्षिणा -

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।
तेषा ँ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

प्रार्थना।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गः परिवारः प्रीयताम्।।
श्रीविघ्नराजप्रसादात्कर्तव्यामुककर्मनिर्विघ्नसमाप्तिश्चास्तु।

5.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से हमने यह जानने का प्रयास किया कि षोडशोपचार पूजन विधि को किस प्रकार से किया जाता है।तथा इसके करने का क्या विधान है,और मंत्रों का क्रम किस प्रकार से रहता है।सांथ ही कौन-कौन सी सामग्री के द्वारा इन सोलह प्रकार से पूजन किया जा सकता है।किसी भी मांगलिक कार्य में मुख्यतः इन्ही षोडश मन्त्रो के द्वारा पूजन किया जाता है।इस प्रकार से आप समझ सके होंगे कि षोडशोपचार पूजन क्या है करके|

5.6 बोध प्रश्न

१ षोडश का अर्थ है ?

क १२ ख १४ ग १६ घ १८

२ प्रदक्षिणा कि जाती है

क आरती से पूर्व ख मन्त्र पुष्पांजली के बाद

ग संकल्प के बाद घ विसर्जन के बाद

३ प्रतिष्ठा कि जाती है

क आवाहन के बाद ख आवाहन से पूर्व

ग स्नान के बाद घ तिलक के बाद

४ पूजा में सर्वप्रथम होता है

क आचमन ख शिखाबंधन

ग आसन शुद्धि घ आवाहन

5.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

१ ग २ ख ३ क ४ क

5.7 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्म पूजाप्रकाश पं लालविहारी मिश्र गीताप्रेस गोरखपुर
कर्मठ गुरुः पं मुकुन्द बल्लभ मोतीलाल वनारसीदास , वाराणसी
सर्व देव पूजा पद्धति शिव दत्त मिश्र चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

5.8 निबन्धात्मक प्रश्न

षोडशोपचार पूजन विधि से आप क्या समझते है, उसका वर्णन करें

सम्पूर्ण संकल्प विधि को लिखें

इकाई - 6 षोडशोपचार पूजन में विशेष

इकाई की संरचना –

6.1 प्रस्तावना
6.2 उद्देश्य
6.3 षोडशोपचार परिचय
6.4 षोडशोपचार पूजन में विषेश
6.5 सारांश
6.6 बोध प्रशन
6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
6. 9 निबन्धात्मक प्रश्न

6.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई द्वितीय खण्ड के इकाई 6 षोडशोपचार पूजन में विषेश नामक शीर्षक से सम्बंधित है। इस इकाई के माध्यम से हम यह जानने की कोशिश करेंगे कि षोडशोपचार पूजन में विषश क्या है। और इसे करने का क्या विधान है। इसके बारे में हम इस इकाई में विस्तृत रूप से जानने व समझने का प्रयास करेंगे। प्रस्तुत इकाई में षोडशोपचार पूजन में विषेश क्या है। और किन-किन पदार्थों के द्वारा पूजन किया जाता है। इस विधि को किस प्रकार से किया जाता है। उसे हम इस इकाई के माध्यम से समझने के प्रयास करेंगे।

6.2 उद्देश्य

- ❖ षोडशोपचार क्या विशेष है इसके बारे में आप जान सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन को समझ सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार का क्या क्रम है उसे जानने में आप सफल हो सकेंगे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन में कौन सी सामग्रियों का प्रयोग होता है उसे जान सकेंगे।

6.3 षोडशोपचार परिचय

सनातन धर्म में 'षोडशोपचार' का बहुत महत्व है. किसी भी देवी-देवता की पूजा इस विशेष विधि से ही पूरी की जाती है, तभी देवी-देवता भक्त की पूजा को स्वीकारते हैं. षोडशोपचार का आशय वे सोलह तरीके, जिनसे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है षोडशोपचार पूजन में निम्न सोलह तरीके से विधिपूर्वक पूजन किया जाता है षोडशोपचार का भारतीय वैदिक वांग्मय में बड़ा ही महत्त्व माना गया है। किसी भी देवी-देवताओं के पूजन में इसे विशेष रूप से महत्त्व प्रदान किया जाता है। पूजन कि अनेकानेक विधियों में से षोडशोपचार पूजन विधि भी एक है षोडश का अर्थ है सोलह अर्थात वे सोलह तरीके, जिनसे देवी-देवताओं का पूजन - यजन किया जाता है। देव पूजन की प्रविधि सामान्यतया अतिथि सत्कार की पुरातन परंपरा के समान है। इसके अंतर्गत हम भगवान का आवाहन करते हुए विभिन्न सामग्री से उनकी सेवा सत्कार की भावना से पूजन करते हैं। पूजन विधि के लिए कोई एक समान प्रक्रिया निर्धारित नहीं की जा सकती, क्योंकि प्रत्येक अवसरों व देवी-देवतओं के अनुसार प्रक्रिया परिवर्तित होती रहती है। विद्वानों का मतैक्य भी संभव नहीं और भक्ति के भाव का जो विधान है। वह भी देश काल परिस्थिति व परम्पराओं के अनुसार भिन्न-भिन्न है। फिर भी जनसामान्य के पूजन-अर्चन विधि के लिए पूजा पद्धति की एक सामान्य रूपरेखा निर्धारित की जा सकती है। इसके साथ ही कुछ सामान्य दिशानिर्देश भी बनाए जा सकते हैं, जैसे-

किसी भी पूजा में शुभ मुहूर्त आदि का विचार किया जाना आवश्यक है। दैनिक पूजा को छोडकर। प्रत्येक पूजारंभ के पूर्व आत्मशुद्धि, आसन शुद्धि, पवित्री धारण, पृथ्वी पूजन, संकल्प, दीप पूजन, शंख पूजन, घंटा पूजन, स्वस्तिवाचन आदि अवश्य करने चाहिये। भूमि, वस्त्र आसन आदि स्वच्छ शुद्ध हों। आवश्यकतानुसार चौक, रंगोली, मंडप बना लिया जाये। यजमान पूर्वाभिमुख होकर बैठे,और पुरोहित उत्तराभिमुख होकर बैठे। वाहित यजमान की पत्नी पति के साथ ग्रंथिबन्धन कर पति (जहाँ-जहाँ यह लोक व्यवहार पद्यति हो) की वामंगिनी के रूप में बैठे। पूजन के समय आवश्यकतानुसार अंगन्यास, करन्यास, मुद्रा आदि को भी किया जा सकता है।

षोडशोपचार पूजन में निम्न सोलह तरीके से विधिपूर्वक पूजन किया जाता है। वह सोलह प्रकार कोन कोन से हैं।

१. षोडशोपचारास्तु कर्मप्रदीपे -

'आवाहना-ऽऽसने पाद्यमर्घ्यमांचमनीयकम्। स्नानं वस्त्रोपवीतं च
गन्धमाल्यान्यनुक्रमात् ॥१॥
धूपं दीपं च नैवेद्य ताम्बूलं च प्रदक्षिणा। पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश
॥२॥
"फलेन सफलावाप्तिः साङ्गता दक्षिणार्पणात्।" इति।

१आवाहन, २आसन, ३ पाद्य, ४अघ्य, ५ आचमन, ६स्नान, ७ वस्त्र, ८ यज्ञोपवीत, ९ गंध १० पुष्प ११ धूप १२ दीप १३ नैवेद्य १४ ताम्बूल १५ दक्षिणा १६ प्रदक्षिण

6.4 षोडशोपचार पूजन में विषेश

गणेशाम्बिका पूजन

यजमान तिलक-

पुनः ब्राह्मण यजमान के ललाट पर कुंकुम तिलक करें।
ॐ आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकान्ते प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थसिद्धये।

स्वस्तिवाचन

उसके बाद यजमान आचार्य एवं अन्य ऋत्विजों वैदिक ब्राह्मणों के साथ हाथ में पुष्पाक्षत लेकर स्वस्त्ययन पढ़े।

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासोऽ परीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।।
देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ँ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवाना ँ सख्यमुपसेदिमा व्वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।
तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रामदितिं दक्षमश्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ँ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।
तन्नो व्वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्।।
तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।
स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।
पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।
अग्निर्जिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह।।
भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ँ सस्तनुभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।
शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रसो यत्रा पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।
अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्राः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।
ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वं ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।
यतो यतः समीहसे ततो नोऽअभयं कुरू। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।।

हाथ में लिए पुष्प और अक्षत गणेश एवं गौरी पर चढ़ा दें। पुनः हाथ में पुष्प अक्षत आदि लेकर मंगल श्लोक पढ़े।

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्योनमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः।सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् ।

वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ।। 1।।

वक्रतुण्ड ! महाकाय ! कोटिसूर्यसमप्रभ ! ।

निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्वकार्येषु सर्वदा ।। 2।।
सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।

लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।। 3।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।

द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। 4।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।

सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। 5।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।

प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ।। 6।।
अभीप्सितार्थ-सिद्धiर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः ।

सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ।। 7।।
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ! ।

शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि ! नमोऽस्तु ते ।। 8।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् ।

येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ।। 9।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव ।

विद्यावलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। 10।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः ।

येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ।। 11।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।

तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥12॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।

तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ 13॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते ।

पुरुषं तमजं नित्यं ब्रजामि शरणं हरिम् ॥ 14॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ।

देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ 15॥

हाथ में लिये अक्षत-पुष्प को गणेशाम्बिका पर चढ़ा दें।

गौरी का ध्यान -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।

नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्॥
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ध्यानं समर्पयामि।

2. आवाहन -

गणेशाम्बिका-पूजन-आवाहन - दाहिने हाथ में अक्षत लेकर 'एकदन्तं शूर्पकर्णं' से 'पूजां यागं च रक्ष में पर्यन्त श्लोक तथा 'ॐ गणानां त्वा०' से 'स्थापयामि' पयन्त पढ़कर गणेशजी पर अक्षत और पुष्प छोड़े।

हस्तेऽनतान् गृहीत्वा, गणपतिमावाहयेत् 'षोडशोपचारैः पूजयेच्च । तद्यथा

एकदन्तं शूर्पकरणं गजवक्त्रं चतुर्भुजम् ।
पाशाङ्कुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम् ॥१॥
ध्यायेद् गजाननं देवं तप्तकाञ्चनसन्निभम् ।
चतुर्भुजं महाकायं सर्वाभरणभूषितम् ॥ २॥
दन्ताक्षमालापरशुं पूर्णमोदकधारिणम् ।
मोदकासक्तशुण्डाग्रमेकदन्तं विनायकम् ॥३॥

(वा) हे हेरम्ब त्वमेह्यो हि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मज ! |
सिद्धिबुद्धिपते ध्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः ॥१॥
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम् ।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः ॥२॥
आवाहयामि पूजार्थ रक्षार्थं च ममक्रतोः ।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे ॥३॥

ॐ गणानां त्वा गणपति हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति हवामहे निधीनां त्वा निधिपति हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥
एह्यो हिहेरम्ब महेशपुत्र समस्तविघ्नौघविनाशदक्ष !।
माङ्गल्यपूजाप्रथमप्रधान गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते॥
ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

हाथ के अक्षत को गणेश जी पर चढ़ा दें।
पुनः अक्षत लेकर गणेशजी की दाहिनी ओर गौरी जी का आवाहन करें।

गौरी का आवाहन –

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥
ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो। क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"

1 प्रतिष्ठा

ध्यान अथवा आह्वान कर आमंत्रित करें भगवान को किसी अनुष्ठान के लिए विशेष देवी-देवता को पूजा हेतु घर पर आमंत्रित करने के लिए मंत्रों के द्वारा उनका ध्यान और आह्वान किया जाता है. आह्वान का आशय है अपने घर पर ईश्वर को आमंत्रित करना देवी या देवता विशेष को बुलाने के लिए मंत्र शक्ति एवं विधिवत पूजा विधान सम्पन्न किया जाता है. इस आह्वान के पीछे अर्थ यही है कि ईश्वर हमें आत्मिक बल एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार करे, ताकि हम उनका स्वागत और पूरे विधि विधान से पूजा करने के योग्य बन सकें।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो 3 म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्। !

2 आसन

अपने इष्ट देवता से सम्मान के साथ प्रार्थना करें कि वह हमारे द्वारा दिये आसन पर विराजमान हों. पाद्यं एवं अर्घ्य दोनों ही सम्मान के प्रतीक होते हैं. ईश्वर के आगमन पर उनके चरण रज धुलवा कराते हैं फिर आचमन कराकर स्नान करवाते है.

विचित्ररत्नखचितं दिव्यास्तरणसंयुतम्।

स्वर्णसिंहासनं चारू: गृह्णीष्व सुरपूजित।।

पुरुष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नम: आसनं समर्पयामि।

आसन - विचित्ररत्नखचितं से आसनं सपर्पयामि पयन्त पढकर आसन प्रदान करे या अक्षत छोडो।

3 पद्य

अपने आराध्य देवी अथवा देवता के शुद्ध गंगाजल से चरण धुलवा कर उनके पांव छुना

सर्वतीर्थसमुदभूतं पाद्यं गन्धादिभिर्युतम्।

विघ्नराज गृहाणेमं भगवन् भक्तवत्सलः॥

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमःपाद्यं समर्पयामि।

पाद्य- सर्वतीर्थ से पाद्यं समर्पयामि तक का पाठ कर गणेशाम्का पर एक आचमनी जल प्रदान करें।

4 अर्ध्य

पाद्या और अर्घ्य दोनों ही सम्मान सूचक होते है इश्वर के दिव्य दर्शन देने के पश्चात उनके हाथ पैर धुलवा कर आचमान कराते है बाद में ईश्वर को स्नान कराते है।

गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तू गृहाणा करूणाकर।

अर्घ्यं च फल संयुक्तं गन्धपुष्पाक्षतैर्युतम्॥

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमःअध समर्पयामि।

अर्घ्य - गणाध्यक्ष नमस्तेऽस्तू से नमःअध समर्पयामि तक पढकर गणेश- गौरी को अर्घ्य दे।

5 आचमन

आचमन का आशय है मन, कर्म और वचन से शुद्ध होकर अंजली में जल लेकर पान करना यह मुख्यतया शुद्धि के लिए किया जाता है।

विनायक नमस्तुभ्यं त्रिदशैरभिवन्दित।

गंगोदकेन देवेश कुरुष्वाचमनं प्रभो ॥

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः । स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि।

चाचमन- विनायक नमस्तुभ्यं से आचमनं समर्पयामि तक पढकर एक आचमनी जल छोड दें।

6 स्नान

अपने ईष्ट देवता के पूजा के दरम्यान सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्नान कराया जाता है. इसे ईश्वर के स्वागत की एक प्रक्रिया मानी जाती है. शुद्ध जल अथवा गंगाजल से स्नान कराने के पश्चात ईश्वर को पंचामृत से स्नान करवाया जाता है, और मंडप पर बिठाने से पूर्व उन्हें शुद्ध जल से स्नान कराया जाता है.

दुग्धस्नान-

कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् ।

पावनं यज्ञहेतुश्च पय: स्नानार्थपर्तिम् ।
ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनुसमुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्। पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पयः स्नानं समर्पयामि।

पयस्नान – कामधेनुसमुद्भूतं से पय:स्नानं समर्पयामि पर्यन्त मन्त्र श्लोक पढकर गोरी- गणेश को दूध से स्नान करें ।

दधिस्नान -

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।

दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू षि तारिषत्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

दधिस्नान- पयसस्तु समुद्भूतं से दधिस्नानं समपर्यामि तक कहकर दही से स्नान कराये।

घृत स्नान –

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ।।
ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम।

अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, घृतस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

घृत- स्नान – नवनीत- समुत्पन्नं से धृतस्नानं समर्पयामि पर्यन्त उच्चारण कर गौरी – गणपति को घी से स्नान कराये ।

मधुस्नान -

पुष्परेणुसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्तमुतोषसो
मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँऽ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मधुस्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

मधुस्नान- पुष्परेणुसमुद्भूतं से सधुस्नानं समर्पयामि पर्यन्त गौरी – गणेश को मधु से स्नान करावे ।

शर्करास्नान –

इक्षुरससमुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्।
मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ अपा रसमुद्वयस सूर्ये सन्त समाहितम्। अपा रसस्य यो रसस्तं वो
गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शर्करास्नानं समर्पयामि।
(पुनः जल स्नान करायें।)

शर्करा स्नान- इक्षुरससमुद्भूतां से शर्करास्नानं समर्पयामि तक कहकर गौरी – गणेश को चीनी से नहलावे।

पञ्चामृतस्नान -

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सश्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा
सोदेशेऽभवत्सरित्।।
पञ्चामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नान-

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्तारौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोकस्नानं समर्पयामि।

7 वस्त्र

ईश्वर को स्नान कराने के पश्चात नये वस्त्र चढ़ाए जाते हैं. मन में यही धारणा रहती है कि हम अपने ईष्ट देव को वस्त्र अर्पित कर रहे हैं. लेकिन वस्त्र अर्पण की यह प्रक्रिया केवल देवताओं के लिए की जाती है।

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः।
तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो3 मनसा देवयन्तः।।
शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।
देहालङ्करणं वस्त्रामतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं वस्त्रां समर्पयामि। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नभः आचमनं समर्पयामि (अथवा) ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रोर्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि। अलङ्करणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

वस्त्र- ॐ युवा सुवासाःसे लेकर वस्त्रं समर्पयामि पर्यन्त पढकर गौरी- गणपतिको वस्त्र चढावे। और आचमनं समर्पयामि तक कहकर एक आचमनी चल चढावे। अथवा वस्त्रोपवस्त्र के स्थान में रक्षासूत्रं समर्पयामि कहकर चढावे। एवं अलङ्करणार्थेऽक्षतान् समर्पयामि पर्यन्त पढकर अक्षत छोड दें।

8 यज्ञोपवित

इसका आशय जनेऊ से होता है. जनेऊ भगवान को अर्पित किया जाता है. यह भी देवी के लिए नहीं केवल देवता के लिए अभीष्ठ होता है. जनेऊ हिंदू धर्म की सबसे सम्मानित पहचान होता है.

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रां प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि । ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनं समर्पयामि।

यज्ञोपवीत (जनेऊ) - ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं से यज्ञोपवीतं समर्पयामि पर्यन्त कहकर गणेशजी को यज्ञोपवीत चढावे। और आचमनं समर्पयामि पढकर एक आचमनी जल समर्मित करें।

9 गंध

गंधाक्षत का आशय है अखण्डित चावल, रोली, अबीर-गुलाल एवं चंदन इसे देवताओं की पसंद के अनुरूप चढ़ाया जाता है. जैसे शिव जी को चंदन चढाने का विधान है और विष्णु भगवान को रोली अथवा अबीर गुलाल इत्यादि।

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ तवां गन्धर्व्वा आखनंस्तवामिन्नद्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्वद्दिवान्नयक्ष्मादमुच्यत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

गन्ध श्री खण्डं चन्दं से गन्धं समर्पयामि तक उच्चारण कर गौरी- गणेश को गन्ध (चन्दन) लगायें।

10 पुष्प

देवी देवताओं का पूजन बिना फूल-माला के पूरा नहीं माना जाता है. किस देवी देवता को कौन सा अथवा किस रंग का फूल चढ़ाया जाता है, इसका वर्णन वेदों और पुराणों में भी दिया गया है.

उदाहरण के लिए शिव जी को मदार का सफेद फूल तो लक्ष्मी जी को कमल और हनुमान जी को लाल गुलाब का फूल बहुत प्रिय है।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

पुष्प – माल्यादीनि से पुष्पमालां समर्पयामि पर्यन्त पढकर गौरी गणपति को सुगन्धित फूल की माला चढायें ।

11 धूप

देवी देवता का पूजन करते समय धूप अथवा अगरबत्ती जलाना अनिवार्य होता है विशेषकर हर देवी देवता को अगरबत्ती की तुलना में धूप बत्ती जलाना ज्यादा श्रेयस्कर माना गया है।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः। देवानामसि वह्नितम सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपमाघ्रापयामि।

12 दीप

किसी भी देवी देवता की पूजा अर्चना प्रारंभ करने से पूर्व शुद्ध घी का दीपक जरूर जलाना चाहिए. इसके बाद आरती भी प्रज्ज्वलित घी के दीपक से ही की जाती है अगर शुद्ध घी उपलब्ध नहीं हो तो शुद्ध तिल के तेल का इस्तेमाल करना चाहिए।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।। ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्।।

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालमनम्।

दीप- 'दीपं समर्पयामि' तक पढकर गौरी- गणेश के आगे दीपक चलायें। और हाथ धो ले।

13 नैवेद्य

ईश्वर को अमूमन मिष्ठान का भोग ही लगाया जाता है. इसमें भी अलग-अलग देवी देवता की विभिन्न पसंद होती है. जैसे गणेश जी और हनुमान जी को बेसन के लड्डू पसंद हैं तो लक्ष्मी जी को खोये की मिठाई का भोग लगाया जाता है. शंकर भगवान को धतूरा एवं खोये की मिठाई का भोग लगाया जाता है।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

नैवेद्य 'वैवेद्यं गृह्यतां देवा' से 'नैवेद्यं समर्पयामि' पर्यन्त मन्त्र – श्लोक पढकर गौरी – गणेश को लड्डू या मिष्ठान्न का भोग लगायें। और 'आचमनीयं मध्ये पढकर चार आचमानी चल चढायें।

14 ताम्बूल

तांबुल हरे पान को कहते हैं. फल और मिठाई के पश्चात भगवान को पान अर्पित किया जाता है. पान के पत्ते पर सुपारी, लौंग और इलायची भी रखी जाती है. इसके साथ ही भगवान को मुद्रा अथवा द्रव्य के रूप में सोने चांदी के सिक्के अथवा रुपये आदि रखे जाते हैं. पूजा के अंत में ईश्वर की आरती उतारने का विधान है इसके बिना पूजा अधूरी

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल अर्पित करे।)

ताम्बूल – 'पूगीफलं' मंत्र पढ उच्चारण कर गौरी – गणेश के आगे पान- सोपारी रखे ।

15 दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः सादुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (द्रव्य दक्षिणा समर्पित करे।)

दक्षिणा - ॐ हिरण्यगर्भः से द्रव्य- 'दक्षिणाां समर्पयामि' तक उच्चारण कर गौरी – गणेश को यथाशक्ति दक्षिणा चढावे।

16 प्रदक्षिणा

पूजा की सारी प्रक्रिया पूरी करने के पश्चात अंत में भगवान की परिक्रमा की जाती है. परिक्रमा हमेशा बायें से दांयें दिशा की ओर यानी क्लॉक वाइज करनी चाहिए. परिक्रमा पूरी करने के पश्चात दो मिनट ईश्वर के सामने शांत भाव से खड़े होकर छमा मांगनी चाहिए, कि हे प्रभु, हम अज्ञानी हैं, अगर पूजा-पाठ के विधि-विधान में किसी तरह की कोई त्रुटि हो गयी हो तो छमा करें. सबसे अंत में ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि प्रभु आपका आपकी शैया तैयार है आप कृपा कर विश्राम करें।

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे।।
ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषा सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।
(प्रदक्षिणा करे।)

प्रदक्षिणा- 'यानि कानि च' से 'प्रदक्षिणां समर्ययामि' तक उच्चरण कर गणेशाम्किका की दोनों हाथों से प्रदक्षिणा करें ।

प्रार्थना।।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय। निर्विविघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
अनया पूजया सिद्धि-बुद्धि-सहितः श्रीमहागणपतिः साङ्गः परिवारः प्रीयताम्।।
श्रीविघ्नराजप्रसादात्कर्तव्यामुककर्मनिर्विघ्नसमाप्तिश्चास्तु।

6.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से हमने यह जानने का प्रयास किया कि षोडशोपचार पूजन में विशेष क्या है। तथा इसके करने का क्या विधान है, और मंत्रों का क्रम किस प्रकार से रहता है। सांथ ही कौन-कौन सी सामग्री के द्वारा इन सोलह प्रकार से पूजन किया जा सकता है। किसी भी मांगलिक कार्य में मुख्यतः इन्ही षोडश मन्त्रो के द्वारा पूजन किया जाता है। इस प्रकार से आप समझ सके होंगे कि षोडशोपचार पूजन क्या है करके।

6. 6 बोध प्रश्नों

१ षोडश का अर्थ है ?

क १२ ख १४ ग १६ घ १८

२ प्रदक्षिणा कि जाती है

क आरती से पूर्व ख मन्त्र पुष्पांजली के बाद

ग संकल्प के बाद घ विसर्जन के बाद

३ प्रतिष्ठा कि जाती है

क आवाहन के बाद ख आवाहन से पूर्व

ग स्नान के बाद घ तिलक के बाद

४ पूजा में सर्वप्रथम होता है

क आचमन ख शिखाबंधन

ग आसन शुद्धि घ आवाहन

6.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

१ ग २ ख ३ क ४ क

6.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

नित्यकर्म पूजाप्रकाश पं लालविहारी मिश्र गीताप्रेस गोरखपुर

कर्मठ गुरुः पं मुकुन्द बल्लभ मोतीलाल वनारसीदास , वाराणसी

सर्व देव पूजा पद्धति शिव दत्त मिश्र चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी

6.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षोडशोपचार पूजन के विशेषता का सविस्तार वर्णन कीजिए।
2. सम्पूर्ण संकल्प विधि को लिखें

खण्ड -3
पूजन फल विचार

इकाई -1 पंचोपचार पूजन फल

1.1 प्रस्तावना
1.2 उदेश्य
1.3 पञ्चोपचार पूजन विधि
1.3.1 पञ्चोपचार पूजन में वैदिक मंत्रों का प्रयोग
1.3.2 पञ्चोपचार पूजन में लौकिक मंत्रो का प्रयोग
1.3.3 पञ्चोपचार पूजन से पूर्व फि पिथि
1.4 पञ्चोपचार पूजन का फल
1.4.1 पन्चतत्व से समन्वय (संबंध) पंचोपचार पूजन का
1.4.2 वैदिक पूजन फाल
1.5 सारांश
1.6 पारिभाषिक शब्दावली
1.7 अभ्यास प्रश्नों के उत्तर
1.8 सन्दर्भ अन्य सूची
1.9 सहायक पाठ्य सामग्री
1.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1.1 - प्रस्तावना

इस ईकाई में पंचोपचार पूजन संबंधी प्रविधियों का आप अध्ययन करने जा रहे है। इससे पूर्व का अध्यभन आपने कर लिया होगा। वैदिक परम्परानुसार वेद तीन कांड़ो में विभक्त है। (कर्मकांड, ज्ञानकांड,उपासना कांड) कर्मकांड के अंतर्गत उपासना कांड श्रौत एवं स्मार्त अज्ञी. का विधान है। इन श्रौत - स्मार्त यज्ञों में पंचोपचार पूजन विधि का विशेष महत्व है एवं लौकिक में भी पंचोपचार पूजन का विशेष महत्व है।

वैदिक पौराणिक एवं तांत्रिकपूजन में पंचोपचार पूजा का महत्व है। पंचोपचार पूणन एवं पौराणिक मन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा देवी- देवताओं की पञ्चोपचार मन्त्रो से भी भी पञ्चोपचार पूजा उनके मंत्रों द्वारा भी की जा सकती है। यह पंचोपचार पूजन पञ्च-तत्वों के माध्यम से भी किया जा सकता है।

कर्मकांड में अनुष्ठानादि कि सम्पन्नाता के लिए पंचोपचार पूजन का विधान सर्वविदित है। पंचोपचार का आश्रय वे पांच उपचार है,जिनसे देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है। ये प्राँच उपचार को क्रम निम्नलिखित इस प्रकार

(1) गंध (2) पुष्प (3) धूप (4) दीप 15) नैवेध

यह पाँचो उपचार पञ्च तत्वों से सम्बंधित हैं, जैसे मानव के हात मे पाँच अँगुली है। और यह पृथक तत्त्वों का प्रतीक है। जिसमें पाँच पस्तुएँ शामिल होती है। जैसे कनिष्ठिका अँगुली पृथ्वी तत्प का प्रतीक है। जिससे चंदन का लेप या किसी प्रकार कि गन्ध अपने ईस्ट को अर्पण करते हैं। इसी प्रकार से पुष्प आकाश का प्रतीक हैं। और धूप हवा का प्रतीक हैं। एवं दीप अग्नि का प्रतीक है। तथा नैवेध जल तत्व का प्रतीक है। यह अँगुली का क्रम मानसिक पूजन में प्रयोग होता है।

जब हम अपने शास्त्रों की सलाह के अनुसार पूजा विधि करते हैं। तब हमें अपने सर्वज्ञ ऋषियों के संकल्प शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। शास्त्रो में वर्णित पूजा करते समय परम भक्ति और भाव समान रूप से महत्वपुर्ण है। यदि पूजा विधि करते समय भगवान के प्रति प्रेम और भक्ति की कमी होती है। तो वह उन तक नहीं पहुचता है ,क्योकि भगवान भावना के लिये तरसते है,शास्त्रों में वर्णित विज्ञान के अनुसार और देवता के प्रति आस्था से भरे अंतः करण के साथ किए गए उपदेशों को देवताओ की पूजा कहा जाता है।तभी यह देवतओं की अपेक्षाओं के अनुसार होता है|और इसे सही मायने में सनातन धर्म आधार है। सनातन धर्म के अनुसार सगुण (भौतिक) उपासना देवताओं की पूजा विधि (अनुष्ठानात्मक) पूजा है|

इसी प्रकार शास्त्रों में पंचोपचार पूजन का महत्व सर्वविदित है|

गन्यं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च अखंडफलमासाद्य कैपल्यं लभते ध्रुवम् ।।

1.2 उद्देश्य

- ❖ इस ईकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप पञ्चोपचार पूजन के पूर्व के विधि का उल्लेख कर सकेंगे।
- ❖ पञ्चोपचार पूजन के वैदिक विधि का निरुपण कर सकेंगे।
- ❖ पञ्चोपचार पूजन के लौकिक विधि का उल्लेख कर सकेंगे।
- ❖ पन्चोपचार पूजन के फाल का उल्लेख कर सकेंगे।
- ❖ पञ्चोपचार पूजन सकेंगे। को लोकोपकारक बनाना सकेंगे।

1.3 पञ्चोपचार पूजन विधि

पञ्चोपचार विधि से पूजा करने पर पांच चरणों में पूजन किया जाता है|
वैदिक, पौराणिक एवं तांत्रिक पूजा अनुष्ठानों में पंचोपचार पूजन का अत्यधिक महत्प है।अनुष्ठानों में देवी-देवतओं के पंचोपचार पूजन किया जाता है।जिसका यहाँ वर्णन किया जा रहा है|
पूजन का क्रम जैसे - . गंध , पुष्प ,धूप, दीप, नेवेद्य
पांचों अंगुली के माध्यम से अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा,अनामिका और कनिष्ठिका के सहारे हम अपने इष्ट की पूजा भी कर सकते है|

समय और परिस्थितियों के अनुरूप हमें छोटी और बड़ी दोनू तरह की पूजा की सुविधा है। यदि हम काम समय में अच्छी तरीके से पूजन करना चाहते हैं। तो हम पंचोपचार पूजन विधि का पालन कर सकते है। . इस पंचोपचार पूजन के नियमो का चरण- दर चरण समावेश किया गया है। पंचोपचार पूजन में सबसे पहले, हम अपने आराध्य को हल्दी – कुमकुम, अष्टगंध, चंदन नाना प्रकार के गंध अपने ईस्ट के चरणों में श्रद्धा पूर्वक अर्पित करते हैं। दूसरे चरण में, अपने देवताओ के चरणों में विविध प्रकार के पुष्प - पत्र उनके चरणों में अर्पित करते है।उसके बाद हम देवतओं को धूप दीखते है, फिर चौथे चरण में दीप दिखाते हैं। जिससे हमारा जीवन प्रकाशमान हो सके, तथा अपने ईष्ट देवताओं को नेवध अनेक. ऋतुफल तथा लौंग इलायची इत्यादि अर्पण करना चाहिए। नैवेध सपर्पण में सर्वप्रथम इष्ट देवता से प्रार्थना करना चाहिए, और भूमि पर जल से चौकोर मंडल बनाए तथा उस पर नेवेद्य की थाली रखे। नैवेद्ध निवदित करते समय ऐसा भाव रखे की हमारे द्वारा अर्पित नैषध देवता उसे ग्रहण करें|

131 पञ्चोपचार पूजन में वैदिक मंत्रो का प्रयोग

(1) गंध (2) पुस्प (3) धूप (4) दीप (5) नैवेद्य

पंचोपचार पूजन में वैदिक मंत्र में वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक अर्थ प्रकट होता है।तत्तद वस्तुओं को चडाने का जो वैदिक मन्त्र है, वह विशिष्ठ अर्थ परक है। जो निम्नलिखित है।

गंध- त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।
ॐ भूर्भुव स्व गन्धं समर्पयामि। इस मंत्र से अपने ईष्ट देवताओं को गंध समर्पित करे

पुष्प - ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
इस मंत्र से अपने ईष्ट देवता के चरणों में पुष्प अर्पित करे

धूप- ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्वतं योऽस्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वद्दितम ँ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः धूप सर्पर्पयामि।
इस मंत्र से अपने देवताओं को धूप दिखाए।
दीप-ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्च स्वाहा।।
ज्योर्ति सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दीपं दर्शयामि ।।
इस मंत्र से देवताओं को दीप दिखाए। [हस्तप्रक्षालन]

नैवेद्य- ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्राँत्तथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।
ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।
ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।
ॐ भूर्भुवः स्वः नेवैध निवेश्यामि ।। नेपेषान्ती आचमनीयं जलं समर्पयामि (जल अर्पित करे

अभ्यास प्रश्न

[1] गन्यं पुष्पं तथ धूपं..... नैवद्यमेव च?
(क) गंन्ध (ख) धूप (ग) नैवेद्य (घ) दीप (ङ) पुष्प

(2) निम्नलिखित में पंचोपचार कौन है।

(क) गंन्ध (ख) आचपन (ग) यज्ञोपवीत (घ) अर्घ्य (ङ) वस्त्र

3. पंचोपचार पूजन में प्रथम उपचार कौन है।
(क) धूप (ख) दीप (ग) नैवेद्य (घ) पुष्प (ङ) गन्ध
4. पंचोपचार पूजन में अंतिम उपचार कौन है।
(क) नैवेद्य (ख) दीप (ग) पुष्प (घ) गन्ध (ङ) धूप
5. त्यामोषधे.....राजा विद्वान भक्ष्यापमुच्यत १.
(क) मुनि (ख) ऋषि (ग) सोमो (घ) देवता
6. ओम् औषधीः प्रति मोदध्वं..... प्रसूवरीः।
(क) पुष्पवतीः (ख) मधुपतीः (ग) ईटावती (घ) शेनुवती

1.3.2 पंचोपचार पूजन में लौकिक मंत्रों का प्रयोग

कर्मकाण्ड में अनुष्ठानादि की सम्पन्नता के लिए पंचोपचार का विधान सर्वविदित है। पंचोपचार पूजन का आरम्भ वे पाँच उपचार जिनसे देवी- देवताओं का पूजन किया जाता है। किसी भी देवी-देवता के पूजन में इसे विशेष रूप से महत्व प्रदान किया जाता है। इस ईकाइ में आप पञ्चोपचार पूजन में लौकिक मंत्रो के प्रयोग के बारे में जानेंगे।

गंध - श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः चन्दनं समर्पयामि।। गन्ध चढ़ायें

पुष्प - माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः
(पुष्प अर्पित करे)
धूप - वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः
(धूप दिखाये)

दीप- साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्।।
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः (दीप दिखाए)

नैवैध - शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, (नैवैध अर्पित करे)

अभ्यासार्थ प्रश्न-

1 श्रीखण्ड चंदनं दिलं गन्धाढलं सुमनोहर विलेपन ……..चन्दन प्रतिगृजताम्
(क) सुरश्रेष्ठ (ख) मुनिश्रेस्ठ (ग) दिजश्रेस्ठ (घ) ऋषिश्रेष्ठ
2 माल्यादीनि सुगन्धिनि मालत्यादीनि वै प्रभो ..... प्रतानि पुष्पाणि पूजार्थ प्रतिगृध्यताम्।
(क) मया (ख) त्वया (ग) तुभ्यं (घ) मध्यम्
3 वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाड्यो गन्ध उत्तम. आघ्रेय.....धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
(क) सर्वदेवानां (ख) सर्वमुनिनां (ग) सर्वद्विजानां (घ) सर्वजनानां
4 साज्य च वर्तिसंयुक्तं वाजिना योजितं मया। दीपं गृहाण..... त्रैलोक्न तिमिरापध्म्।
(क) देवेश (ख) महेश (ग) सुरेश (घ) ब्रहमेश
5 शर्कराखण्डखाद्यानि..... क्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
(क) मधु (ख) दुग्ध (ग) दधि (घ) शर्करा
6 सबसे छोटा उपचार कौन है।
(क) पोडशोपचार (ख) पंचोपचार (ग) दशोपचार (घ) राजोपचार
7 पंचोपचार में तीसरा उपचार कौन हैं।
(क) पुष्प (ख) धूप (ग) नैवेद्य (घ) दीप
8 निम्नलिखित में पंचोपचार का सही क्रम कौन हैं।
(क) धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, गंध
(ख) दीप, धूप , पुष्प गंध, नैवेध
(ग) पुष्प, नैवेद्य, धूप, गंध , दीप

(घ) गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेध

पन्चोपचार पूजन से पूर्व कि विधि

देवं भूत्वा देवं भजेत् इति शास्त्रीय वचनानुसारं प्रथमं कृत नित्य क्रियः सपत्नीकोयजमानः शुभ मुहुर्त पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुखं वोपविश्भ रक्षादीप प्रज्पाल्य कर्मपात्रं पूजये

1 अथकर्मपात्र पूजनम्

अंकुरामुद्राजलपात्रे तीर्थमावाह्येत तद्यथा -
ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति!।
नर्म्मदे! सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि नमस्करोमि।
अपांपतये वं वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्याणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ।।

शरीर शुद्धि :-

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सपर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स वाध्याभ्यन्तरः सुचिः ॥
ॐ पुण्डटीकाक्षः पुनातु - 3 इत्यात्मानं पूजन सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्म

आचमनम् -

ॐ केशवाय नमः,
ॐ नारायणाय नमः,
ॐ माधवाय नमः।
तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें।
ॐ हृषीकेशाय नमः।।

पवित्री धारणम् -

ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रोण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।
इति मन्त्रेण पवित्रीधारण

आसन शुद्धिः -

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ रुद्र ऋषिः सुतलं छन्दः कुर्मो देवता आासनोपवेशने विनियोगः ।
ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता॥
त्वं च मां देवि नित्यं पवित्र कुरु चासनम् ॥
इति आसनं सम्प्रोषय निम्नलिखित मंत्रः गन्यपुस्पाक्षतैः पूजयेत्

ॐ ही आधारशक्तये नमः।
ॐ विं. विमलासनाय नमः।
ॐ पं परमा सुरवासनाय नमः ।
ॐ कुर्मभि नमः।
ॐ अनंताय नमः।

शिखा बन्धनम् –
ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥
भस्म धारणं

ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म ॐ जलरिति भस्म, ॐ स्थलमिति भस्म ॐ व्योमरिति भस्म । इति मन्त्रैः भस्म मभिमन्त्रय अधोलिखित मन्त्रैःयथा स्थानं धारयेत ।
ॐ त्रायुषम् जमदग्नेः (ललाटे)
ॐ कश्यपश्य त्रायुषम् (ग्रीवायाम्)
ॐ यद्वैवेषु त्रायुषम् (बाहुमूले)
ॐ तन्नोअस्तु त्रायुषम् (हृदि)

ततो यजमाना अधोलिखित मन्त्रेण तिलकं कुर्यात

मंगल तिलकम्
ॐ स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

घण्टापूजनम्-
ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः,
आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।

कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

10 शंखपूजनम्

ॐ शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गासरस्वती।।
त्रौलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्जन्य! नमोऽस्तुते।।
पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः
। सवोपचारार्थे गन्याक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

11 दीप पूजनम्-

ॐ अग्निज्र्ज्योतिज्र्ज्योतिरग्निः स्वाहा,
सूर्यो ज्र्ज्योतिज्र्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्र्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा,
सूर्योव्वर्चोज्र्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।।
ज्र्ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्र्ज्योतिः स्वाहा।
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्रा स्थिरो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

12 अर्थपञ्चगव्य निर्माण विधिः-

एकस्मिन् ताम्रपाने वा अन्यपाने अधोलिखित मन्त्र पन्चगस्य पक्षिष्य पुशैः आलोडयेत्।
1. गोमूत्रम् –
ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरिति गायत्री मन्त्रेण।

2. गोमयम् –

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहवे श्रीयम् ॥

3 दही -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँषि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

4. घृतम्-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

5. दुग्धं-

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

पंचगव्यप्राशनम् –

ॐ अत्त्वगस्थिगतंपापं देहे तिष्ठति मामके प्राशनात् पञ्चगभल्ल, दहत्वग्निरिवन्धनम् ॥
इति मन्त्रेण वारत्रयं सम्प्राश्नं
पूजन सामग्रीञ्चापि सम्प्रोक्षयेत् ॥
ततः स्वस्तिवाचनं, संकल्पं कुर्यात् इति।

1.4 पन्चोपचार पूजन का फल

कर्मकाण्ड में अनुष्ठानादि कि सम्पन्नता के लिए पंचोपचार पूजन का विधान सर्वविदित है। पंचोपचार का आशय वे पाँच उपचार जिनसे देवी देवताओं का पूजन किया जाता है। किसी भी देवी-देवता के पूजन में इसे विशेष रूप से महत्व प्रदान किया जाता है ।पंचोपचार पूजन का फल निम्मलिखित हैं। - हैं।

गंध-

पंचोपचार पूजनके क्रम में हम सबसे पहले अपने ईष्ट देवताओं को अष्टगंध, हल्दी, अबीर – गुलाल अनेक प्रकार के चंदन इत्यादि अर्पित करते हैं। इसका आश्रय यह होता है कि जिस प्रकार से अबीर –गुलाल हर्ष उल्लास का प्रतीक है उसी प्रकार से हमारे जीवन में खुशिहाली बनी रहे ।

पुष्प-

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर को रंग-बिरंगे पुष्प अर्पित करते हैं। पुष्प को सुमन भी कहा जाता है। इसका आशय यह हैं कि हमारा मन सदैव उत्साह एवं सुंदर विचारों से पूर्ण हों।

धूप-

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर को घूप दिखाते है। जिसका आश्रय यह है, कि जिस प्रकार से धूप का गुण-धर्म सुगन्धित करना है। उसी प्रकार हम अपने इष्ट देवता से यह कामना करते हैं। कि हमारे जीवन को सुखमय करें।

दीपक-

अपने ईष्ट देवताओं क पूजन क्रम में अपने ईष्ट से यही कामना करते हैं, कि जिस प्रकार दीपक अंधकार को मिटाकर प्रकाशमय करता है। उसी प्रकार से ईश्वर हमारे जीवन में अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश को प्रदान करें।

नैवेद्य -

अपने ईस्ट देवताओं की पूजन में हम नैवेद्य नाना प्रकार के फल अर्पित करते हैं। इसका आशय यही कि जिस प्रकार नैवेद्य का गुण-धर्म मिठास है। उसी प्रकार से परमात्मा हमारे जीवन में मीठास भर दे।

1.4.1 पंचोपचार पूजन का पञ्चतत्त्व से संबंध. -

इस ईकार में घ्य पंचोपचार पूजन में आने वाले पाँचो उपचार का पञ्चतत्त्व से क्या संबंध है।इस विषभ चर्चा करेंगे। पन्चोपचार पूजन का हथेली में स्थित पाँचो अंगुलियों के माध्यम से पञ्चतत्वों के द्वारा पन्चोपचार पूजन करते हैं। इसकी एक संक्षिप्त विधि भी पुराणों में वर्णित है। जो नीचे लिखी जा रही है-

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्ध परिकल्पयामि

इस मंत्र के द्वारा हम अपने हथेली में स्थित कनिष्ठिका एवं अंगुष्ठा अंगुली के द्वारा अपने इस्ट को गन्ध अर्पण करते हैं। इसमे मेरा यह आशय है, कि में पृथ्वी रुपी गंध आपको अर्पित करता हूँ।

ॐ हं आकाशात्मक पुष्पं परिकल्पयामि।

इस मंत्र के दअर हम अपने हथेली में स्थित तर्जनी एवं अंगुष्ठा के द्वारा अपने ईष्ट को पुष्प अर्पित करते हैं। हैं। इसमे मेरा आशय यह है कि मैं आकाशरूपी पुष्प आपको अर्पित करता हूँ।

ॐ यं वय्वात्मकम धूपं परिकल्पयामि।

इस मंत्र के द्वारा हम अपने हथेली में स्थित तर्जनी एवं अंगुष्ठ के द्वारा अपने इस्ट को धूप अर्पित करते हैं।। इसमें मेरा आशय यह है, कि मैं वायुरूपी धूप आपको अर्पित करता हूँ।

ॐ रं हन्यात्मकं दीपं दर्शयामि ।

इस मंत्र के द्वारा हम अपने हथेली में स्थित मध्यमा एवं अंगुष्ठा के द्वारा अपने इस्ट को दीप दिखाते । इसमें मेरा आशय यह है कि मैं आपको अग्नि देव के रूप में दीपक प्रदान करता हूँ।

ॐ पं अमृतात्मक नैवेयं निवेदयामि।

इस मंत्र के द्वारा अपने हथेली में स्थित अनामिका एवं अंगुष्ठा के द्वारा अपने इष्ट को नैवेद्य निविदित करते हैं। इसमें मेरा आशय यह हैं कि में अमृत के समान नैवैध आपको निवेदन करता हूँ। वस्तुतः भगवान् को किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। वे तो भाव के भूखे है। (मान मिच्यिन्ते देवता) सार में ऐसे दिव्य पदार्थ उपलब्य नहीं है। जिनसे परमेस्वर की पूजा की जा सके

1.4.2 वैदिक पूजन फलं-

देव पूजन की प्रविधि सामान्यतया अतिथि सत्कार की पुरातन परंपरा के समान है। इसके अन्तर्गत भगवान का आवाहन करते हुए विभिन्न सामग्री से उनकी सेवा सत्कार की भावना करते है। इसी के समानांतर दो अन्य बिंदु भी जुड जाते हैं-

प्रथम स्वयं का शुद्धीकरण या पवित्रीकरण तथा ध्यान प्रार्थना।

द्वितीय - जिस सामग्री, से हम भगवान का पूजन अर्चन करते हैं। उस पूजन सामग्री का भी शुद्धीकरण पवित्रीकरण अतिरिक्त स्वयं व वस्तु दोनों में ही दिव्य भाव के आवाहन हेतु, भी उसके पूजन का विधान करते हैं। कर्मकांड के साथ- साथ सामान्य तौर पर जो मंत्रो के पाठ की प्रक्रिया हैं। उसमें वेदिक एवं लौकिक दोनों तरह के मंत्र पढे जाते हैं। वैदिक मंत्र सामान्यतः दार्शनिक प्रकृति के मंत्र है। जिनका कालांतर में कर्मकांडी उपयोग होने लगा। कर्मकांडीय दृष्टि से पूजन की विभिन्न व विशेष वि परम्पराएँ रही है। मीमांसानुसार वेद का मुख्य प्रतिपाद्ध विषय यज्ञ है। यज्ञ के द्वारा विश्वात्मा प्रभु प्रसन्न होकर सभी प्राणियो का कल्याण करते हैं। यज्ञ के द्वारा परमात्मा विश्व का संरक्षण करता है।अक्षय सुख की प्राप्ति होती हैं। वैदिक पूजन के लिए पंचोपचार पूजन का विधान सर्वविदित है। जिसमे गंध, पुष्प,धूप, दीप, नैवेध यह सब क्रम से अपने ईस्ट दैवताओं को समर्पित करते है।

गन्ध-

गंधवती पृथ्वी के अनुसार वैदिक पूजन में हम गन्ध को पृथ्वी का गुण मानते है|तथा पृथ्ती का एक और गुण है। जो सहन शक्ति है। जब हम गन्ध उपचार को अपने इस्ट को समर्पित करते हैं। तब हम

यह आश्रय करते हैं। कि जिस प्रकार से पृथ्वी अनेक प्रकार के गुणों से युक्त है। उसी प्रकार से परमात्मा पूर्णता प्रदान करें।

पुष्प-

पुष्प का पर्यायवाची शब्द (सुमन) है। जिसका अर्थ होता है। सुंदर मन, गन का संबंध आकाश से है। और आकाशतत्वात्मक उपचार पुष्प है। इसलिए हम अपने ईस्ट को पुष्प चढ़ाते हैं। जिश्का आशय यह है कि हमारा मान शुभ संकल्पवाला हो।

धूप-

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर को घूप दिखाते है। जिसका आश्रय यह है, कि जिस प्रकार से धूप का गुण-धर्म सुगन्धित करना है। उसी प्रकार हम अपने इष्ट देवता से यह कामना करते हैं। कि हमारे जीवन को सुखमय करें।

दीप –

जिस प्रकार दीपक अंधकार को मिटकर प्रकाशयक करता हैं। उसी प्रकार से परमात्मा अज्ञान रुपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रदान करता है, तथा दीप का संबंध अग्नि से है। जिस प्रकार अग्नि तेजोमय है। उसी प्रकार परमात्मा हमें बुद्धि, तेज, और बल को प्रदान करें।

नैवेद्य-

अपने ईस्ट देवताओं की पूजन में हम नैवेद्य नाना प्रकार के फल अर्पित करते हैं। इसका आशय यही कि जिस प्रकार नैवेद्य का गुण-धर्म मिठास है। उसी प्रकार से परमात्मा हमारे जीवन में मीठास भर दे।

1.5 सारांश

इस ईकाई में आपने पंचोपचार पूजन विधि संबंधी पंचोपचार पूजन प्रविधियों का अध्ययन आपने किया।।पंचोपचार पूजन क्रम के ज्ञानाभाव क्रम के कारण मनुष्य यत्र-तत्र बिना क्रम का पूजन करते हैं। जिससे पूजन का सम्पूर्ण फल कि प्राप्ति नहीं हो पाती है। देवी- देवताओं की पंचोपचार पूजन मे वेद मंत्र आगम मंत्र तथा बाद में नाम मन्त्र का का उच्चारण किया जाता है। तथा पंचोपचार पूजन पंचतत्व के माध्यम से भी किया जाता है। यहाँ इसी क्रम काआधार लिया गया है। जो वेद के मंत्रों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते हैं, वो लोकिक मन्त्र के द्वारा अपने इष्ट का पूजन सम्पन्न कर सकते है।तथा एक और प्रक्रिया है,जिससे हम लोग पञ्चतत्व से सम्बन्धित पंचोपचारपूजन विधान के द्वारा अपने इष्ट देवताओं का पूजन कर सकते है।

(1) गंध (2) पुष्प (3) धूप (4) दीप 15) नैवेध

1.6 परिभाषिक शब्दावली

पंचोपचार - पाँच उपचार, नैवेद्य- भोग लगाना, पुष्प- फूल, गुलाल-अधीर दीपक- दीप, प्रकाश सदैव – हमेशा पञ्चतत्व - भूमि जल, वायु, अग्नि, 'आकाश, धूप- सुगंध सम्मुख- सामने, सम्पूर्ण -पूरा, ज्ञानाभाव - ज्ञान की कमी, अग्नि- आग, वायु- हवा , दधि-दही, मधु- शहद, घृत - घी, दुग्धम् – दूध, शर्करा – चीनी प्रविधि – नियम, विभक्त - विभाजित स्तुति - प्रशंसा, स्वस्ति - कल्यांण, घण्टा - घंटी, ज्योति - प्रकाश, भस्म- राख, गोमय-गौबर, गोमूत्र - गायका मूत्र नाना- अनेक, नूतन - नया, अक्षत –अखंडित चावल, आहार - भोजन, दूर्वा – दूभ , मया - मेरे द्वारा

1.7 'अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

पूर्व में दिए गए सभी अभ्यास प्रश्नों के उत्तर यहाँ दिए जा रहे हैं। आप अपने से उन प्रश्नों को हल कर लिए होंगे। अब आप इन उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कर लिजिए यदि गलत हो तो उसने सरी करके पुनःतैयार कर लिजीए। इसमे आप इस प्रकार के समस्त प्रश्नों का उत्तर सही तरीके से दे पाएंगे।

1.3.1 के अभ्यास प्रश्नों के उत्तर -

1 (घ) 2 (क) 3 (ङ) 4 (क) 5 (ग) 6 (क)

1.3.2 के अभ्भास प्रश्नों के उत्तर -

1 (क) 2 (क) 3 (क) 4 (क) 5 (ग) 6 (ख) 7 (ख) 8 (क)

1.8 सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. शुक्लयजुर्वेद संहिता
2 . धर्म सिन्धु
3. पूजा कर्म प्रदीप
4. वर्ष कृत्य
5 . पुराण
6. निर्णय सिन्धु
7. पूजन विधान
8. नित्य कर्म पूजा प्रकाश

9. ग्रह शान्ति
10. यज्ञ फल प्रकाश

1.9 सहायक पाठ्य सामग्री-

पूजन विधान, नित्यकर्मपूजा प्रकाश, यज्ञमीमांसा, अनुष्ठान प्रकाश, स्मार्त प्रकाश

1.10 निबन्धात्मक प्रश्न-

1. पंचोपचार पूजन का परिचय दीजिये
2. पंचोपचार पूजन से पूर्व कि विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन करें
3. पंचोपचार पूजन क्रम सहित उपचार के महत्व का वर्णन करें
4. पवित्री का महत्व लिखिए
5. पंचोपचार पूजन के उदेश्य का वर्णन कीजिए
6. पंचोपचार पूजन के फल का वर्णन करें।

इकाई - 2 षोडशोपचार पूजन फल

इकाई की संरचना

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 षोडशोपचार पूजन विध
2.3.1 षोडशोपचार पूजन से पूर्व की विधि
2.3.2 षोडशोपचार पूजन मे वैदिक मन्त्रों का प्रयोग
2.3.2 षोडशोपचार पूजन में लौकिक पन्त्रों का प्रयोग
2.3 षोडशोपचार पूजन का फल
2.5 सारांश
2.6 परिभाषिक शब्दावली
2.7 अभ्यास प्रशन
2.8 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर
2.9 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
2.10 सहासक पाठय सामग्री
2.11 निबन्धात्क प्रश्न

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में षोडशोपचार पूजन संबंधी प्रविधियों का अध्ययन आप करने जा रहे हैं। इससे पूर्व कि इकाई में पंचोपरचार पूजन के विषय मे आपने अध्ययन कर लिया होगा।

भारतीय संस्कृतौदे- पुराणैषु च यज्ञस्यातीवमहत्वं वर्णितं दृश्यते।

मीमांसानुसारं वेदानां मुख्यप्रतिपादो विषय एव यज्ञोऽस्ति। यज्ञ द्वारा विरवात्मा प्रभु: संतृप्तो भूत्वा समेषां कल्याणां विदधातीति मानवै: आत्मन: कन्ल्याणाम अवश्यमेव यज्ञोऽनुष्ठेय:। परमात्मनो नि:श्वास भूतानांवेदानां मुख्यप्रवृत्तिरेव यज्ञानुष्ठानायास्ति। यज्ञै: समुद्भूत पर्यन्यद्वारा संसारस्य पालनं भवति। अनेन ज्ञायते यत्परमात्मा यज्ञद्वारा एव विश्व संरक्षयति। यज्ञानुष्ठाता अक्षयसूखं प्राप्नोति।

कर्मकाण्ड में अनुष्ठानादि कि सम्पन्नता के लिए षोडशोपचार का आशय पे सोलह उपचार जिनसे देवी – देवताओ का पूजन किया जाता है।

किसी भी देवी- देवता के पूजन मे इसे विशेष रूप से महत्व प्रदान किया जाता है।

निम्नलिखित क्रम इस प्रकार है-

१आवाहन, २आसन, ३ पाद्य, ४अघ्य, ५ आचमन, ६स्नान, ७ वस्त्र, ८ यज्ञोपवीत, ९ गंध १० पुष्प ११ धूप १२ दीप १३ नैवेद्य १४ ताम्बूल १५ दक्षिणा १६ प्रदक्षिण

इस इकाई के अध्ययन से आप षोडशोपचार पूजन इत्यादि के विचार पूजन करने कि विधि का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

2.2 उद्देश्य

- ❖ षोडशोपचार पूजन का अध्ययन करने के पश्चात् आप इसका उद्देश्य भी जान सकते हे।
- ❖ षोडशोपचार पूजन को लोकोपकारक बनाना।
- ❖ षोडशोपचार पूजन के पूर्व के विधि का उलेख कर सकेंगे।
- ❖ समाज में व्याप्त कुरूतियो को दूर कर सकेंगें।

2.2 षोडशोपचार पूजन विधि

षोडशोपचार विधि से पूजा करने पर १६ चरणों में पूजन की जाती है।

1. वैदिक पौराणिक एवं तांत्रिक पूजा अनुष्ठानों में षोडशोपचार पूजा का अत्यधिक महत्व है। अनुष्ठानो में देवी- देवताओ के षोडशोपचार पूजन मंत्र के द्वारा षोडशोचार पूजा की जाती है। जिसका यहां वर्णन किया जा रहा है। षोडशोपचार पूजन में वैदिक एवं पौराणिक मंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा देवी देवताओं के स्तुति मंत्रों द्वारा भी उन देवी देवताओं की षोडशोपचार पूजा की जा सकती है। जैसे

पुरूष सूक्त के षोडश मंत्र और रूद्र सुक्त के (नमस्ते रूद्र मन्यव) आदि १६ मंत्रों से भी षोडशोपचार पूजन किया जा सकता है।

षोडशोपचार पूजन क्रम निम्नलिखित है।

१. आवाहनम् , २ आसनम् , ३ पाद्यम् , ४अर्घ्यम् , ५ आचमनीयम्, ६स्नानम्, ७ यज्ञोपवीतम् , ८ वस्त्रम् , ९ गंध १० अक्षत: ११ पुष्पाणि १२ धूपम् १३ दीपम् १४नैवेद्यं १५ दक्षिणा १६ प्रदक्षिण

2.3.1 षोडशोपचार पूजन से पूर्व की विधि

देवं भूत्वा देवं भजेत् इति शास्त्रीय वचनानुसारं प्रथमं कृत नित्य क्रियः सपत्नीकोयजमानः शुभ मुहुर्त पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुखं वोपविश्भ रक्षादीप प्रज्पाल्य कर्मपात्रं पूजये

1 अथकर्मपात्र पूजनम्

अंकुरामुद्राजलपात्रे तीर्थमावाह्येत तद्यथा -

ॐ गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति!।

नर्म्मदे! सिन्धु कावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

अस्मिन् कलशे सर्वाणि तीर्थान्यावाहयामि नमस्करोमि।

अपांपतये वं वरुणाय नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्याणि समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ।।

शरीर शुद्धि :-

ओम् अपवित्रः पवित्रो वा सपर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत पुण्डरीकाक्षं स वाध्याभ्यन्तरः सुचिः ॥

ॐ पुण्डटीकाक्षः पुनातु - 3 इत्यात्मानं पूजन सामग्रीं च सम्प्रोक्ष्म

आचमनम् -

ॐ केशवाय नमः,

ॐ नारायणाय नमः,

ॐ माधवाय नमः।

तीन बार आचमन कर आगे दिये मंत्र पढ़कर हाथ धो लें।

ॐ हृषीकेशाय नमः॥

पवित्री धारणम् -

ॐ पवित्रोस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रोण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्।

इति मन्त्रेण पवित्रीधारण

आसन शुद्धिः -

पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ रुद्र ऋषिः सुतलं छन्दः कुर्मो देवता आासनोपवेशने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि ! त्वं विष्णुना धृता॥
त्वं च मां देवि नित्यं पवित्र कुरु चासनम् ॥
इति आसनं सम्प्रोषय निम्नलिखित मंत्रः गन्यपुस्पाक्षतैः पूजयेत्

ॐ ही आधारशक्तये नमः।
ॐ विं. विमलासनाय नमः।
ॐ पं परमा सुरवासनाय नमः ।
ॐ कुर्मभि नमः।
ॐ अनंताय नमः।

शिखा बन्धनम् –

ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखाबद्धे तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

भस्म धारणं

ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म ॐ जलरिति भस्म, ॐ स्थलमिति भस्म ॐ व्योमरिति भस्म । इति मन्त्रैः भस्म मभिमन्त्रय अधोलिखित मन्त्रैःयथा स्थानं धारयेत ।

ॐ त्रायुषम् जमदग्नेः (ललाटे)
ॐ कश्यपश्य त्रायुषम् (ग्रीवायाम्)
ॐ यद्वैवेषु त्रायुषम् (बाहुमूले)
ॐ तन्नोअस्तु त्रायुषम् (हृदि)
ततो यजमाना अधोलिखित मन्त्रेण तिलकं कुर्यात

मंगल तिलकम्

ॐ स्वस्ति न: इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

घण्टापूजनम्-

ॐ सर्ववाद्यमयीघण्टायै नमः,
आगमार्थन्तु देवानां गमनार्थन्तु रक्षसाम्।

कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थानसन्निधौ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टास्थाय गरुडाय नमः गरुडमावाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

10 शंखपूजनम्

ॐ शंखं चन्द्रार्कदैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यादग्रे गङ्गासरस्वती।।
त्रौलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शंखे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्।।
त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।
नमितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते।।
पाञ्चजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि तन्नः शंखः प्रचोदयात्।
ॐ भूर्भवः स्वः शंखस्थदेवतायै नमः
। सवोपचारार्थे गन्याक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

11 दीप पूजनम्-

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा,
सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा।
अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा,
सूर्योव्वर्चोर्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा ।।
ज्योतिः सूर्य्यः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।
भो दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावदत्रा स्थिरो भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि।

12 अर्थपञ्चगव्य निर्माण विधिः-

एकस्मिन् ताम्रपाने वा अन्यपाने अधोलिखित मन्त्र पन्चगस्य पक्षिष्य पुशैः आलोडयेत्।

1. गोमूत्रम् - ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुरिति गायत्री मन्त्रेण।

2. गोमयम् –

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम् ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहवे श्रीयम् ।।

3 दही -

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत्प्रण आयू ँषि तारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

4. घृतम्-

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

5. दुग्धं-

ॐ पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः। प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

पंचगव्यप्राशनम् –

ॐ अत्त्वगस्थिगतंपापं देहे तिष्ठति मामके प्राशनात् पञ्चगभल्ल, दहत्वग्निरिवन्धनम्॥
इति मन्त्रेण वारत्रयं सम्प्राश्नं
पूजन सामग्रीञ्चापि सम्प्रोक्षयेत्॥
ततः स्वस्तिवाचनं, संकल्पं कुर्यात् इति।

2.3.2 षोडशोपचार पूजन में वैदिक मंत्रों का प्रयोग-

आवाहन –

ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥

आसन –

ॐ पुरुष एवेद सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥

पाद्यं-

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्चपूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतंदिवि॥

अर्घ्य –

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेअभि॥

आचमनीयं-

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः ।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

स्नानम्-

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

वस्त्र–

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दासि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥

यज्ञोपवीत –

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

गन्ध-

ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

पुष्पमाला –

ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥

धूप-

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत ॥

दीप-

ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ॥

नैवेद्य-

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीष्ण द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँर अकल्पयन् ॥

ताम्बूल- दक्षिणा-

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवायज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म इध्मःशरद्धविः ॥

आरती-

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधःकृताः ।
देवायद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषंपशुम् ॥

पुष्पांजली-
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

2.3.3 षोडशोपचार पूजन में लौकिक मंत्रों का प्रयोग-

आवाहन –
"ॐ आगच्छागच्छ देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहो।
क्रियमाणां मया पूजां गृहाण सुरसत्तम ।
आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ॥"
आसन –
"ॐ रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनञ्च मया दत्त गृहाण परमेश्वर ।
आसनं समर्पयामि ॥"
पाद्यं-
ॐ उष्णोदकं निर्मलञ्च सर्व सौगन्ध्य संयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ।
पाद्यं समर्पयामि ॥
अर्घ्य -
ॐ अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्धपुष्पासतैः सह ।
करुणा कुरु मे देव गृहाणाय नमोस्तुते ॥

आचमनीयं

ॐ सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ।
आचमनीयं समर्पयामि ॥

स्नानम्

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धुकावेरि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

यज्ञोपवीत –

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर !॥

वस्त्र-

ॐ सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ।
वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ॥

गन्ध-

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्॥

अक्षत -

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर॥

पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

धूप-

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

दीप-

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेश त्रौलौक्यतिमिरापहम्॥
भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

नैवेद्य-

शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च।
आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ताम्बूल-

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

दक्षिणा-

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

आरती-

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

12.4.) घोडशोपचार पूजन का फल

1. ध्यान आवाहन

किसी अनुष्ठान में देवी-देवताओं का पूजन हेतु घर पर आमंत्रित के लिए मंत्रों द्वारा उनका ध्यान और आह्वाहन किया जाता है। आह्वाहन का आश्रय है,कि अपने घर पर का ईश्वर को आमंत्रित करना या देवी- देवता विशेष को बुलाने के लिये मन्त्र शक्ति विधिवत पूजन विधान सम्पन्न किया जाता है। इस आवाहन केपीछे उद्देश्य यही है कि ईश्वर हमें आत्मिक बल और 'आध्यात्मिक शक्ति का संचार करे, ताकि उनका स्वागत पूरे विधि विधान से पूजा करने के योग्य बन सके।

2 आसन

अपने इष्ट देवता से सम्मान के साथ प्रार्थना करें कि वह हमारे द्वारा दिए गये आसन पर विराजमान हो, ईश्वर के आगमन पर उनके लिये आसन दिया जाता है

3 पाद्यं-

अपने आराध्य देवी अथवा देवता के शुद्ध गंगाजल से चरण धुलवा कर पांव छुना सम्मान के प्रतीक होते हैं।

4 अर्घ्य

पाद्य और अर्घ्य दोनों ही सम्मान सूचक होते हैं। ईश्वर के दिव्य दर्शन देने पश्चात उनके हाथ - पैर धुलवा कर आचमन कराते हैं।,

5 आचमन

आचमन का आश्रययह है। मन कर्म और वचन से शुद्ध होकर अंजली में जल लेकर पान कराना यह मुख्यतया शुद्धि के लिए किया जाता है||

6 स्नान-

अपने ईष्ट देवता के पूजा के दरम्यान सर्वप्रथम शुद्ध जल से ईश्वर को स्नान कराया जाता है।इसे ईश्वर कि एक प्रक्रिया मानी जाती है। शुद्ध जल अथवा गंगाजल से स्नान कराने के पश्चात ईश्वर को पंचामृत से स्नान करवाया प्राता है।।

7 वस्त्र

ईश्वर को स्नान कराने के पश्चात नये वस्त्र चड़ाये जाते हैं। कि हम अपने ईस्ट देव को वस्त्र अर्पित कर रहे हैं। मन में यही धारणा रहती है।

8 यज्ञोपवीत

इसका आशय जनेऊ से होता है। जनेऊ के वाद देवताओं को अर्पित किया जाता है। जनेऊ सनातन धर्म की सबसे सम्मानित पहचान होता है।

9. गंधाक्षत

गंधाक्षत का आशय है। अखण्डित चावल रोली अबीर गुलाल एवं चंदन इसे देवताओं की पसंद के अनुरूप चढाया जाता है। जिस प्रकार से अक्षत को पूर्णता का सूचक माना है। उसी प्रकार से हम देवता से कामना करते हैं। कि हमारे जीवन में सदैव पूर्णता बनी रहे। और अबीर गुलाल हर्ष – उल्लास का प्रतीक हैं। उसी प्रकार से हमारे जीवन में खुशहाली बनी रहें|

10. पुष्प-

अपने ईष्ट देवताओं के पुजन क्रम में हम रंग- बिरंगे पुष्प चढ़ाते हैं। पुष्प को सुमन भी कहा जाता है। इसका आशय यह है कि हमारा मन सदैव उत्साह, सुंदर विचारों से पूर्ण रहें ।

11 धूपबत्ती

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर को धूप दर्शाते हैं। जिसका आशय यह है। किं जिस प्रकार से धूप का गुण धर्म सुगन्धित करना हैं।उसी प्रकार हम अपने ईस्ट देवता से यह कामना करते है कि हमारे जीवन को सुखमय करें|

12. दीपक

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर से यही कामना करते है कि जिस प्रकार दीपक अंधकार को मिटाकर प्रकाशमय करता है। उसी प्रकार से ईश्वर हमारे जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करे।

13. नैवैध

अपने ईस्ट देवताओं की पूजन में हम नैवेद्य नाना प्रकार के फल अर्पित करते हैं। इसका आशय यही कि जिस प्रकार नैवेद्य का गुण-धर्म मिठास है। उसी प्रकार से परमात्मा हमारे जीवन में मीठास भर दे।

14. तांबूल दक्षिण

अपने इस्ट देवताओं को हम तांबुल - दक्षिणा अर्पित करते है। हम ईश्वर से ऐश्वर्य कि कामना करते हैं।

15. आरती

हम अपने ईष्ट देवताओं के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ अपने ईश्वर का गुणगान करते हैं।. जिनसे हमारे ऊपर परमात्मा प्रसन्न होकर , हमें आशीवदि प्रदान करें।

16 मंत्र पुष्पांजली

पुष्पांजली का मूल आशय यही है। कि हे प्रभु आप खुशबूदार फूल स्वीकार कीजिए और पुष्पो कि तरह ही हमारे जीवन में यश कि खुशबु चारों ओर फैलाएं ताकि हमारे जीवन में सुख शांति और समृद्धि की, वर्षा हो ।।

2.5 सारांश

इस ईकाई में आपने पंचोपचार पूजन विधि संबंधी पंचोपचार पूजन प्रविधियों का अध्ययन आपने किया।।पंचोपचार पूजन क्रम के ज्ञानाभाव क्रम के कारण मनुष्य यत्र-तत्र बिना क्रम का पूजन करते हैं। जिससे पूजन का सम्पूर्ण फल कि प्राप्ति नहीं हो पाती है। देवी-देवताओं की पंचोपचार पूजन मे वेद मंत्र आगम मंत्र तथा बाद में नाम मन्त्र का का उच्चारण किया जाता है। तथा पंचोपचार पूजन पंचतत्व के माध्यम से भी किया जाता है। यहाँ इसी क्रम का आधार लिया गया है। जिन्हें वेद मन्त्र न आता हो, उन्हें लोकिक मंत्रों का प्रयोग करना चाहिये। जो इनका भी शुद्ध उच्चारण न कर सके उन्हें केवल नाम मंत्रों से पूजन करना चाहिये।

षोडशोपचार पूजन विधि का यह क्रम है।

1. आवाहन, 2 आसन, 3. पाद्य 4.अर्घ्य 5.आचपन 6.स्नान 7.वस्त्र 8.यज्ञोपवीत 9.गन्ध 10. पुष्पमाला 11.धूप 12.दीप 13.नैवेद्य 14.ताम्बूल-दक्षिणा 15.आरती 16.मन्त्र पुष्पांजलि

इसी क्रम से पूजन करना चाहिये ताकि सम्पूर्ण फल की प्राप्ति हो करते हैं। सर्वप्रथम हमे देवताओ का आहवान इसिलिए करते है की ईश्वर हमें आध्यात्मिक बल एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार करें।ताकि हम उनका स्वागत पुरे विधि- विधान से पूजन करने के योग्य बन सकें इसके बाद देवताओं को आसन देना सम्मान का प्रतीक है। पुनः पाद्य के द्वारा गंगाजल से देवी-देवताओं का पाद प्रक्षालन कराते हैं। ईश्वर के दिव्य दर्शन देने के पश्चात हम उनके हाथ-पैर

धूलवाकर आचमन कराते हैं। तदनन्तर अपने ईस्ट को सर्वप्रथम गंगाजल, दूध, दही, घी, शहद, एवं शक्कर से मंत्रपूर्वक स्नान कराते है। तत्पश्चात अपने ईस्ट को नूतन वस्त्रों से सुशोभित करते हैं। देवी-देवताओं का अत्यंत प्रिय ब्रहंसूत्र यज्ञोपवीत धारण कराते हैं। यह यज्ञोपवीत अर्पण करते समय यह भाव प्रकट करते है। कि मुझे परम पवित्रता को प्रदान करे तथा साथ ही साथ बल और तेज को प्रदान करें उसके बाद गंधाक्षत से अपने ईस्ट को अलंकृत करते है। तदन्तर अपने इष्ट को रंग-बिरंगे पुष्पों से सुशोभित करते हैं। तत्पश्चात् नाना प्रकार के धूपों से सुगन्धित करते हैं। तदन्तर हम लोग अपने इस्ट को दीप इसलिए दर्शाते हैं। कि हमारी अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करके प्रकाश रुपी ज्ञान को प्रदान करें।उसके बाद अनेक प्रकार के नैवेध को अपने इस्ट के सम्मुख निवेदित करते है। फिर ताम्बूल-दक्षिणा अर्पित करते हुये यह आशा करते है कि हमारे जीवन मे भी एश्वर्य कि प्राप्ति होती रहें,उसके बाद के क्रम में भगवान को आरती दिखाई जाती है,जिससे भगवान का आशीर्वाद सदा हमारे ऊपर बना रहें|अंतिम चरण में मन्त्रपुष्पांजलि के द्वारा हम यह प्रार्थना अपने इष्ट से करते है कि हमारे जीवन में सुख-शान्ति और समृद्धि की वर्षा होती रहे|

2.6 परिभाषिक शब्दावलियां

षोडश – सोलह , आहवान – बुलाना पञ्चतत्व - भूमि जल, वायु, अग्नि, 'आकाश, धूप-सुगंध सम्मुख- सामने, सम्पूर्ण -पूरा, ज्ञानाभाव - ज्ञान की कमी, अग्नि- आग, वायु- हवा , दधि-दही, मधु-शहद, घृत - घी, दुग्धम् – दूध, शर्करा – चीनी प्रविधि – नियम, विभक्त - विभाजित स्तुति - प्रशंसा, स्वस्ति - कल्यांण, घण्टा - घंटी, ज्योति - प्रकाश, भस्म- राख, गोमय-गौबर, गोमूत्र - गायका मूत्र नाना- अनेक, नूतन - नया, अक्षत –अखंडित चावल, , आहार - भोजन, दूर्वा – दूभ , मया - मेरे द्वारा

2.7 अभ्यास प्रशन

1. गंग्गा च यमुना चैव .....सरस्वती।

(क) सरस्वती (ख) गोदावरी (ग) नर्मदा (घ) सिंधु

2. सिन्दूरं शोभनं ..... सोभाग्यं सुवर्धनम्।

(क) रक्तं (ख) पीतं (ग) शुक्लं (घ) कृष्णं

3. इदं फलं मया ..... स्थापितं पुरस्तव

(क) देव (ख) गुरू (ग) दैत्य (घ) गन्धव:

4. नवनीतं समुतपन्नं सर्व ..... कारकम्।

(क)संतोष (ख) घृतम् (ग) स्नान (घ) सर्वसौरग्य

5. पंचामृतं मयानीतं मयो ..... घृतं मधु।

(क) दधि (ख) शर्करा (ग) मधु (घ) मधु

2.8 अभ्यास प्रश्नो के उत्तर

1. (ख) 2. (क) 3. (क) 4. (क) 7. (क)

2.9 सन्दर्भ ग्रंथ सूची-

1. शुक्लयजुर्वेद संहिता
2 . धर्म सिन्धु
3. पूजा कर्म प्रदीप
4. वर्ष कृत्य
5 . पुराण
6. निर्णय सिन्धु
7. पूजन विधान
8. नित्य कर्म पूजा प्रकाश
9. ग्रह शान्ति
10. यज्ञ फल प्रकाश

2.10 सहायक पाठ्य सामग्री-

पूजन विधान,
नित्यकर्मपूजा प्रकाश,
यज्ञमीमांसा,
अनुष्ठान प्रकाश,
स्मार्त प्रकाश

2.11 निबन्धात्मक प्रश्न-

1. षोडशोपचार पूजन का परिचय दीजिये
2. षोडशोपचार पूजन से पूर्व कि विधि का विस्तारपूर्वक वर्णन करें
3. षोडशोपचार पूजन क्रम सहित उपचार के महत्व का वर्णन करें
4. पवित्री का महत्व लिखिए
5. षोडशोपचार पूजन के उदेश्य का वर्णन कीजिए।

इकाई - 3 पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार का महत्व

इकाई की संरचना

3.1 प्रस्तावना
3.2 उद्देश्य
3.3 पूजन में पंचोपचार का महत्व
3.4 पूजन में षोडशोपचार का महत्व
3.5 सारांश
3.6 पारिभाषिक शब्दावली
3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
3.9 सहायक पाठ्यसामग्री
3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई BAKA(N)-121की तृतीय खण्ड की अंतिम इकाई से संबंधित है। इसका शीर्षक है- पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार का महत्व। इससे पूर्व की इकाईयों में आपने पंचोपचार एवं षोडशोपचार पूजन के बारे में अध्ययन कर लिया है। अब आप उन पूजन के महत्व के बारे में जानेंगे।

3.2 उद्देश्य

- ❖ इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान लेंगे कि –
- ❖ पूजन में पंचोपचार का क्या महत्व है।
- ❖ पूजन में षोडशोपचार पूजन का क्या योगदान है।
- ❖ पूजन के प्रकार कितने है।
- ❖ पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार की क्या विशेषता है।

3.3 पूजन में पंचोपचार का महत्व

पूजन भक्ति और आध्यात्मिक उन्नति का साधन है, विश्वभर में अनगिनत संस्कृतियों और धर्मों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह सामाजिक, आध्यात्मिक, और चिंतन की प्रक्रिया के माध्यम से मानव जीवन को संरचित करने में मदद करता है।

पूजन का प्रमुख उद्देश्य है ईश्वर और आत्मा के बीच एक साकार और निराकार सम्बन्ध स्थापित करना। यह एक आध्यात्मिक यात्रा है जो मन, वचन, और क्रिया के माध्यम से व्यक्ति को आत्मा के साथ मिलाती है। पूजन, जो आध्यात्मिक और धार्मिक अनुष्ठान का महत्वपूर्ण हिस्सा है, मानव जीवन को एक ऊँचाई और सांत्वना की दिशा में प्रवृत्त करता है।

पूजा का अर्थ है ईश्वर की उपासना करना, जिसमें भक्त अपने मन, वचन, और क्रिया से दिव्यता की अनुभूति करता है। इसका महत्व विभिन्न पहलुओं में होता है:

आत्मा का सम्बंध

पूजा आत्मा का आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत करती है। भक्त, अपनी आत्मा को परमात्मा के साथ एक मानवीय और दिव्य संबंध में महसूस करता है। पूजन से मन में दिव्यता, पवित्रता और अर्पण की भावना आती है जिससे धीरे धीरे आत्मा परमात्मा में लीन होने लगती है।

ईश्वर की उपासना

पूजा का मुख्य उद्देश्य ईश्वर की उपासना है। भक्त, भगवान के सामीप्य और समर्थन में अपने जीवन को दीक्षित करता है।

धार्मिक सद्गुणों की प्रोत्साहन

पूजा सद्गुणों को प्रोत्साहन करती है जैसे कि त्याग, दया, क्षमा, और सत्य। यह व्यक्ति को धार्मिक मूल्यों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है।

शांति और सांत्वना

पूजा व्यक्ति को शांति और सांत्वना की अद्भुत अनुभूति कराती है। यह मानव जीवन को सकारात्मकता और सहारा प्रदान करती है।

सामाजिक सहानुभूति

पूजा सामाजिक सहानुभूति और सामरस्य की भावना को बढ़ावा देती है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति अपने समाज में सहयोग, प्रेम, और समरसता का संदेश फैलाता है।

आत्म-निरीक्षण और सुधार

पूजा का अभ्यास करने से व्यक्ति अपनी भूलों और कमियों को पहचानकर सुधार करने की प्रक्रिया में रूचि लेता है।

आत्मिक शक्ति और स्थैर्य (धैर्यता)

पूजा से भक्ति व्यक्ति को आत्मिक शक्ति और स्थैर्य प्रदान करती है, जिससे वह जीवन के चुनौतीपूर्ण पहलुओं का सामना कर सकता है।

पूजन मानव जीवन को एक उच्च स्तर पर उत्थान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और व्यक्ति को आध्यात्मिक और सामाजिक सांत्वना प्रदान करता है।

पंचोपचार पूजन-

1. गन्ध 2. पुष्प 3. धूप 4. दीप 5. नैवेद्य

1.5 पंचोपचार

पंचोपचार पूजा एक अद्भुत और संबंधपूर्ण पूजा पद्धति है जो आदिकाल से चली आ रही है। इस पूजा का स्वरूप उन पाँच अभिष्टों या उपचारों पर आधारित है जो भक्त अपने ईश्वर या उपास्य देवता के सामने प्रस्तुत करता है। यह उपचार धार्मिक एवं आध्यात्मिक साधना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च।

अखंडफलमासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम्॥

अर्थात् देव पूजन में गंध, पुष्प, धूप, दीप एवं नैवेद्य इन पांच चीजों का प्रयोग किया जाता है।

पंचोपचार का अर्थ ही है पांच उपचार अथवा पांच उपकरण जिसके द्वारा भक्त अपने इष्ट की आराधना और पूजा करता है।

1. गंध

प्रथम उपचार है गंध, जिसमें भक्त आराध्य देवता के लिए सुगंधित और आत्मिकता को संरक्षित करने वाले सुगंधित पदार्थों से बने, कुमकुम आदि तिलक को प्रदान करता है। यह आत्मा की शुद्धता का प्रतीक है। गंध का इस्तेमाल तिलक के रूप में मानव जीवन की अद्वितीयता को दर्शाता है। यह सुगंधित तिलक भक्त के मस्तक पर अपने आराध्य देवता के साथ एकाग्रता और समर्पण की भावना को सुझाता है। इसके माध्यम से भक्ति की ऊँचाइयों की दिशा में एक पथ प्रदर्शित होता है।

भगवान के मस्तक पर तिलक लगाना, यह हिन्दू धर्म में एक महत्वपूर्ण आदर्शिता और आध्यात्मिक संबंध का प्रतीक है। इस क्रिया का महत्व विभिन्न पहलुओं में होता है:

1.समर्पण और आदर्शिता = तिलक लगाना एक व्यक्ति का आदर्शिता और समर्पण का प्रतीक है। यह व्यक्ति को दिखाता है कि वह अपने आराध्य देवता के प्रति समर्पित है और उसके आदर्शों का अनुसरण करने के लिए प्रतिबद्ध है।

2.आत्मनिवेदन = तिलक लगाना व्यक्ति को आत्मनिवेदन की भावना से युक्त करता है। यह उसे यह याद दिलाता है कि वह आत्मा का अद्वितीय अंश है और उसे आदर्श और पवित्रता की दिशा में अग्रसर करना चाहिए।

3.आध्यात्मिक संबंध = भक्ति और आध्यात्मिक संबंध को बढ़ावा देने के लिए तिलक एक महत्वपूर्ण क्रिया है। यह व्यक्ति को दिव्य और अद्वितीय सत्य के साथ जोड़ता है और उसे आध्यात्मिक साक्षात्कार की दिशा में मार्गदर्शन करता है।

4.पूजा की प्रक्रिया में सहारा = तिलक एक पूजा की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और भक्त को अपने आराध्य देवता के साथ संबंध स्थापित करने में सहारा प्रदान करता है।

5.पौराणिक महत्व = कई पौराणिक कथाएं बताती हैं कि तिलक को लगाने से व्यक्ति को भगवान की कृपा मिलती है और उसका आत्मा परमात्मा के साथ एक हो जाता है।

6.धार्मिक समर्थन = तिलक लगाना धार्मिक समर्थन की भावना को साझा करता है और धार्मिक समृद्धि के माध्यम से समाज में एकता बनाए रखने में मदद करता है।

इस प्रकार, भगवान के मस्तक पर तिलक लगाने से व्यक्ति को आध्यात्मिक, धार्मिक और सामाजिक संरचना में सहारा मिलता है और उसे अपने आराध्य देवता के साथ साक्षात्कार में साहस मिलता है।

2. पुष्प (Flowers)

- दूसरा उपचार है पुष्प, जिसमें भक्त अपनी भक्ति और प्रेम का अभिव्यक्ति देवता के सामने रखता है। यह सौंदर्य और प्रेम की भावना को प्रकट करता है ।पुष्प, या फूल, पंचोपचार पूजा में एक महत्वपूर्ण उपचार है । पुष्पों का उपयोग पूजा में भगवान की अराधना के लिए किया जाता है और इससे भक्त की आत्मा में एक साकारात्मक बदलाव आता है। फूलों की सुगंध और सौंदर्य भक्त को भगवान के प्रति भक्ति और आदर्श भावना से भर देते हैं। प्रत्येक देवता के लिए विशेष पुष्प का चयन किया जाता है क्योंकि फूलों का सौंदर्य और सुगंध विकसित करने में इनकी विशेषता होती है ।

पुष्पों का चयन धार्मिक परंपरा में भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये सात्विक गुणों का प्रतीक होते हैं और भक्त को शुद्धता और पवित्रता की अनुभूति कराते हैं।

पुष्पों का अर्पण न केवल दिव्यता की ऊँचाइयों की ओर एक कदम होता है, बल्कि यह भक्त को समर्पण और प्रेम की भावना में ले जाता है। पुष्पों की आराधना के माध्यम से भक्त अपने आराध्य देवता के साथ एक अद्वितीय और साकारात्मक संबंध में स्थापित होता है, जो एक पूर्ण और सुखमय जीवन की दिशा में मदद करता है।

पुष्प का प्रयोग भगवान की सुंदरता और पवित्रता की आराधना में किया जाता है। यह भक्ति और प्रेम की भावना को सुंदरता के साथ भगवान के सामने प्रस्तुत करने का एक अद्वितीय माध्यम है, जिससे आराधक अपने इष्टदेवता के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति का अभिव्यक्ति करता है।

पुष्पों की सुंदरता और महक से यह साबित होता है कि भगवान के समक्ष भक्त का मन पवित्र भावना से भरा होता है। यह सिर्फ एक फूल नहीं होता, बल्कि इसके माध्यम से भक्त अपने हृदय की सबसे गहरी भावनाओं को भगवान के सामने प्रस्तुत करता है।

पुष्प का अर्थ भी यहां बहुतात्विक होता है। यह न केवल फिजिकल सुंदरता का प्रतीक है, बल्कि इसमें प्रकृति की सुंदरता, जीवन की असीम रूपरेखा और सृष्टि के आदि का संकेत होता है। इस प्रकार, पुष्प द्वारा भक्त भगवान के सामने अपनी समर्पण भावना और अद्भुतता की भावना को प्रकट करता है।

इसके साथ ही, भगवान को पुष्पों की विशेषता और सुंदरता के माध्यम से सजीवन का स्रोत मिलता है, जो भक्त को आत्मिक ऊर्जा और शक्ति प्रदान करता है। यह आत्मा के उद्दीपन का संकेत होता है और भक्त को आत्मा के प्रकाश से जोड़ने का एक साधन प्रदान करता है।

इस प्रकार, पुष्प भगवान के सामने भक्ति और समर्पण का प्रतीक होता है, जो भक्त को आत्मिक समृद्धि और आत्मा के पवित्रता की अनुभूति कराता है।

3. धूप (Incense)

- तीसरा उपचार है धूप, जिससे सुगन्ध, पवित्रता, और आत्मा के साथ संयोजन होता है। धूप के धुआं से वातावरण को पवित्रित करने का उद्देश्य होता है।

धूप का महत्वपूर्ण स्थान पूजा में है, जिससे भक्त अपनी आराध्य देवता के सामने पवित्रता की भावना को व्यक्त करता है। धूप आराधना का समय पूजा के शुरूआती अवस्था में किया जाता है और यह धूप मिलने वाली महक से भक्त को आनंदित करता है।

धूप का अर्थ है देवता के सामने आत्मा की शुद्धि का प्रतीक बनाना और व्यक्ति को आत्मिक स्थिति में लाना। धूप से उत्पन्न होने वाली महक आत्मा को पवित्र बनाती है और उसे देवता के साथ संबंधित करती है।

विभिन्न प्रकार के धूपों का उपयोग किया जाता है, जैसे गोबर, कपूर, चन्दन, अगरबत्ती, और वनस्पति धूप आदि। इनमें विशेष गुणस्तर होता है जो पूजा में उपयोग के लिए उपयुक्त होता है।

धूप से उत्पन्न होने वाली धुप का अर्थ है आत्मा की ऊँचाई को स्वीकार करना और देवता के सामने विनम्रता से स्थित होना। यह आत्मा को आध्यात्मिक उन्नति की दिशा में प्रेरित करता है और उसे साकार और निराकार ब्रह्म के साथ एकात्मता में ले जाता है।

धूप आराधना का अन्य एक महत्वपूर्ण पहलु यह है कि यह आत्मा को अज्ञानता से मुक्ति की ओर अग्रसर करता है और उसे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है। धूप की महक आत्मा को सच्ची स्वतंत्रता की भावना प्रदान करती है और उसे दिव्यता की ओर एक पथ प्रदान करता है ।

4. दीप (Lamp)

- चौथा उपचार है दीप, जो प्रकाश की स्थायिता, ज्ञान, और दिव्यता का प्रतीक है। यह आत्मा की अज्ञानता को हराने की क्रिया को दर्शाता है।

दीप, भक्ति और पूजन का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिससे आत्मज्योति की प्राप्ति होती है और व्यक्ति भगवान के साथ अद्वितीय संबंध में आत्मा की स्थिति में पहुंचता है।

दीप पूजन का महत्व सात्विक और आध्यात्मिक सांस्कृतिकता में हमेशा से अद्भुत माना गया है। यह पूजा में विधिवत जलाए जाने वाले दीप के माध्यम से भक्त अपनी आत्मा को दिव्यता की ओर प्रवृत्त करता है। **" तमसो मा ज्योतिर्गमया"** जिसका अर्थ भी यही है अंधकार से प्रकास की ओर जाना ।

दीप पूजा में उपयोग किए जाने वाले तेल, घी से जलता हुआ दीप समृद्धि और आत्मा को

प्रकाशित करता है, जिससे भक्त आत्मज्योति की प्राप्ति में समर्थ होता है। यह आत्मा को ब्रह्मज्योति से जोड़कर उसे अद्वितीय ब्रह्म के साथ एक करता है।

दीप का जलना आत्मा के अंधकार को हराकर ज्ञान की प्राप्ति में सहायक होता है। दीप पूजा में समर्पित किया जाने वाला यह उपचार भक्त को अद्वितीयता की अनुभूति कराता है और उसे आत्मा के अद्वितीय स्वरूप का अनुभव करने में सहायक होता है।

दीप पूजन विधि से आत्मा का साक्षात्कार होता है और भक्त अपनी आत्मा को प्रकाशमय बनाकर उसे देवता के साथ समर्थित करता है। यह पूजा में समर्पित किए जाने वाले दीप से ज्ञान, शांति, और आत्मिक समृद्धि की प्राप्ति होती है।

5. नैवेद्य (Offerings)

पंचोपचार में आखिरी उपचार है नैवेद्य, जिसमें भक्त आराध्य देवता के लिए आत्मिक भोगों की प्रस्तुति करता है। यह श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक है और भक्ति में सामर्थ्य की उदाहरणीय भावना प्रदान करता है।

पंचोपचार पूजा का यह स्वरूप भक्ति और साधना का महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो आत्मा के उन्नति और ईश्वर के साथ एकात्मता की दिशा में मदद करता है।

नैवेद्य, पूजा के एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्से को सूचित करता है जहाँ भक्त आराध्य देवता को अन्न, फल, और अन्य भोजन सामग्री के रूप में समर्पित करता है। यह क्रिया भक्ति में समर्पण और प्रेम की भावना को प्रकट करती है।

नैवेद्य का अर्थ और महत्व

भगवान को लागाए जाने वाले भोग को नैवेद्य कहते हैं । भोग में मिठाई, खीर, भोजन आदि को भगवान को अर्पित किया जाता है जिसे बाद में प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है ।

1 भगवान को समर्पण =

नैवेद्य के माध्यम से भक्त अपने आराध्य देवता को अपने जीवन का हिस्सा मानता है और ईश्वर को अपने में तथा अपने को ईश्वर में देखता है पहले वह भगवान को भोजन अर्पण करता है तथा उसके बाद उसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करता अर्थात् भक्त के जीवन का केन्द्र मात्र ईश्वर होता है किसी

भी कार्य को करने से पूर्व भगवान को स्मरण करना तथा कार्य होने के पश्चात उन्हें अर्पित कर देता है जिससे कि उस कार्य के फल में होने वाले दोषों को नहीं भोगना पडता इसी प्रकार से भगवान के प्रसाद को ग्रहण करने से भोजन में सात्विकता तथा तमोगुणादि दोषों का निराकरण हो जाता है। भोजन जीवन का महत्व पूर्ण अंग है उसे भगवान को अर्पित कर हृदय से धन्यवाद के साथअपने संपूर्ण जीवन को शरणागति के साथ चरणों में समर्पित की भावना करते हैं है।

2. संयम और शुद्धि =

नैवेद्य में संयम और शुद्धि की भावना होती है। भक्त अपने आहार की शुद्धता का ध्यान रखता है और उसे देवता के सामने प्रस्तुत करता है जिससे वह आत्मा को भी पवित्र मानता है।

3. आत्मिक शक्ति =

नैवेद्य की एक विशेषता यह है कि यह भक्ति में आत्मिक शक्ति की भावना को बढ़ाता है। भक्त अपनी आत्मा को भगवान के साथ जोड़ने का प्रयास करता है और नैवेद्य को अर्पण करने के पश्चात प्रसाद के रूप में ग्रहण करने से उस प्रसाद के रस से शरीर में आराध्य के गुण तथा आत्मिक बल में वृद्धि होती है तथा यही बल साधना में सहायक होता है।

4. भगवान का प्रतीक =

नैवेद्य पूजा में भगवान को भोग अर्पण करने का समय होता है जिससे यह प्रतिष्ठान मिलता है कि सभी भोजन को भगवान की अर्पणा के रूप में किया जा रहा है और उसे श्रद्धा भाव से आत्मिक भूक्ति का आनंद होता है।

5. सामर्थ्य और सहानुभूति =

नैवेद्य के माध्यम से भक्त भगवान के साथ एक सामर्थ्य और सहानुभूति की भावना का अनुभव करता है। यह भक्ति में भगवान के साथ एक संबंध बनाए रखने का साधन है और भक्त को अनुभूति होती है कि भगवान उसके साथ हैं और उसका सहारा करते हैं।

नैवेद्य का अर्थ भगवान के सामने हमारी भक्ति, समर्पण, और सहानुभूति का प्रतीक है और इसके माध्यम से हम भगवान के साथ एक सांगत्य महसूस करते हैं। यह नहीं केवल भोजन की चीज होती है, बल्कि नैवेद्य भगवान के सामने सच्ची भावना और समर्पण की अद्वितीयता को दर्शाता है।

3.4 पूजन में षोडशोपचार का महत्व

षोडशोपचार विधि से पूजा करने पर १६ चरणों में पूजन की जाती है।

1. वैदिक पौराणिक एवं तांत्रिक पूजा अनुष्ठानों में षोडशोपचार पूजा का अत्यधिक महत्व है। अनुष्ठानो में देवी- देवताओ के षोडशोपचार पूजन मंत्र के द्वारा षोडशोचार पूजा की जाती है। जिसका यहां वर्णन किया जा रहा है। षोडशोपचार पूजन में वैदिक एवं पौराणिक मंत्रों का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा देवी देवताओं के स्तुति मंत्रों द्वारा भी उन देवी देवताओं की षोडशोपचार पूजा की जा सकती है। जैसे

पुरूष सूक्त के षोडश मंत्र और रूद्र सुक्त के (नमस्ते रूद्र मन्यव) आदि १६ मंत्रों से भी षोडशोपचार पूजन किया जा सकता है।

षोडशोपचार पूजन क्रम निम्नलिखित है।

१. आवाहनम् , २ आसनम् , ३ पाद्यम् , ४अर्घ्यम् , ५ आचमनीयम्, ६स्नानम्, ७ यज्ञोपवीतम् , ८ वस्त्रम् , ९ गंध १० अक्षत: ११ पुष्पाणि १२ धूपम् १३ दीपम् १४नैवेद्यं १५ दक्षिणा १६ प्रदक्षिण

1. ध्यान आवाहन

किसी अनुष्ठान में देवी-देवताओं का पूजन हेतु घर पर आमंत्रित के लिए मंत्रों द्वारा उनका ध्यान और आह्वाहन किया जाता है। आह्वाहन का आश्रय है,कि अपने घर पर का ईश्वर को आमंत्रित करना या देवी- देवता विशेष को बुलाने के लिये मन्त्र शक्ति विधिवत पूजन विधान सम्पन्न किया जाता है। इस आवाहन केपीछे उद्देश्य यही है कि ईश्वर हमें आत्मिक बल और 'आध्यात्मिक शक्ति का संचार करे, ताकि उनका स्वागत पूरे विधि विधान से पूजा करने के योग्य बन सके।

2 आसन

अपने इष्ट देवता से सम्मान के साथ प्रार्थना करें कि वह हमारे द्वारा दिए गये आसन पर विराजमान हो, ईश्वर के आगमन पर उनके लिये आसन दिया जाता है

3 पाद्यं-

अपने आराध्य देवी अथवा देवता के शुद्ध गंगाजल से चरण धुलवा कर पांव छुना सम्मान के प्रतीक होते हैं।

4 अर्घ्य

पाद्य और अर्घ्य दोनों ही सम्मान सूचक होते हैं। ईश्वर के दिव्य दर्शन देने पश्चात उनके हाथ - पैर धुलवा कर आचमन कराते हैं।,

5 आचमन

आचमन का आश्रययह है। मन कर्म और वचन से शुद्ध होकर अंजली में जल लेकर पान कराना यह मुख्यतया शुद्धि के लिए किया जाता है||

6 स्नान-

अपने ईष्ट देवता के पूजा के दरम्यान सर्वप्रथम शुद्ध जल से ईश्वर को स्नान कराया जाता है।इसे ईश्वर कि एक प्रक्रिया मानी जाती है। शुद्ध जल अथवा गंगाजल से स्नान कराने के पश्चात ईश्वर को पंचामृत से स्नान करवाया प्राता है।।

7 वस्त्र

ईश्वर को स्नान कराने के पश्चात नये वस्त्र चड़ाये जाते हैं। कि हम अपने ईस्ट देव को वस्त्र अर्पित कर रहे हैं। मन में यही धारणा रहती है।

8 यज्ञोपवीत

इसका आशय जनेऊ से होता है। जनेऊ के वाद देवताओं को अर्पित किया जाता है। जनेऊ सनातन धर्म की सबसे सम्मानित पहचान होता है।

9. गंधाक्षत

गंधाक्षत का आशय है। अखण्डित चावल रोली अबीर गुलाल एवं चंदन इसे देवताओं की पसंद के अनुरूप चढाया जाता है। जिस प्रकार से अक्षत को पूर्णता का सूचक माना है। उसी प्रकार से हम देवता से कामना करते हैं। कि हमारे जीवन में सदैव पूर्णता बनी रहे। और अबीर गुलाल हर्ष – उल्लास का प्रतीक हैं। उसी प्रकार से हमारे जीवन में खुशहाली बनी रहें|

10. पुष्प-

अपने ईष्ट देवताओं के पुजन क्रम में हम रंग- बिरंगे पुष्प चढ़ाते हैं। पुष्प को सुमन भी कहा जाता है। इसका आशय यह है कि हमारा मन सदैव उत्साह, सुंदर विचारों से पूर्ण रहें ।

11 धूपबत्ती

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर को धूप दर्शाते हैं। जिसका आशय यह है। किं जिस प्रकार से धूप का गुण धर्म सुगन्धित करना हैं।उसी प्रकार हम अपने ईस्ट देवता से यह कामना करते है कि हमारे जीवन को सुखमय करें|

12. दीपक

अपने ईष्ट देवताओं की पूजन क्रम में हम ईश्वर से यही कामना करते है कि जिस प्रकार दीपक अंधकार को मिटाकर प्रकाशमय करता है। उसी प्रकार से ईश्वर हमारे जीवन में अज्ञान रूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करे।

13. नैवैध

अपने ईस्ट देवताओं की पूजन में हम नैवेद्य नाना प्रकार के फल अर्पित करते हैं। इसका आशय यही कि जिस प्रकार नैवेद्य का गुण-धर्म मिठास है। उसी प्रकार से परमात्मा हमारे जीवन में मीठास भर दे।

14. तांबूल दक्षिण

अपने इस्ट देवताओं को हम तांबुल - दक्षिणा अर्पित करते है। हम ईश्वर से ऐश्वर्य कि कामना करते हैं।

15. आरती

हम अपने ईष्ट देवताओं के प्रति पूर्ण समर्पण के साथ अपने ईश्वर का गुणगान करते हैं।. जिनसे हमारे ऊपर परमात्मा प्रसन्न होकर , हमें आशीवदि प्रदान करें।

16 मंत्र पुष्पांजली

पुष्पांजली का मूल आशय यही है। कि हे प्रभु आप खुशबूदार फूल स्वीकार कीजिए और पुष्पो कि तरह ही हमारे जीवन में यश कि खुशबु चारों ओर फैलाएं ताकि हमारे जीवन में सुख शांति और समृद्धि की, वर्षा हो ।।

3.5 सारांश

इस इकाई के माध्यम से हमने यह जानने का प्रयास किया कि पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार का क्या महत्व है। सांथ ही कौन-कौन सी सामग्री के द्वारा इन सोलह प्रकार से पूजन किया जा सकता है। किसी भी मांगलिक कार्य में मुख्यतः इन्ही षोडश मन्त्रो के द्वारा पूजन किया जाता है। इस प्रकार से आप समझ सके होंगे कि षोडशोपचार पूजन क्या है करके ।

पूजन के अनेक प्रकार की होती है परन्तु समय के आभाव एवं पूजन सामग्री के आभाव होने पर भक्त पंचोपचार पूजा के माध्यम से भगवान का पूजन करता है । जो कि भारतीय संस्कृति में भगवान की आराधना का एक प्रमुख तरीका है, जिसमें पाँच मुख्य उपायों का संयोजन होता है। इस पूजा का आदान-प्रदान वेद, पुराण और धार्मिक ग्रंथों में मिलता है और इसे भक्ति मार्ग का एक साधना माना जाता है।

पंचोपचार पूजा भक्ति और समर्पण का प्रतीक है जो भक्त को आत्मा के माध्यम से दिव्यता

का अनुभव करने में मदद करती है। इस पूजा से भक्त भगवान के साथ एकीकृत महसूस करता है और अपने जीवन को उद्दीपन और मार्गदर्शन की दिशा में बदलता है।

3.8 सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पूजन विधान
नित्यकर्मपूजा प्रकाश
यज्ञमीमांसा
अनुष्ठान प्रकाश
स्मार्त प्रकाश

3.9 सहायक पाठ्यसामग्री

धर्म सिन्धु
पूजा कर्म प्रदीप
वर्ष कृत्य
पुराण
निर्णय सिन्धु
नित्य कर्म पूजा प्रकाश
ग्रह शान्ति
यज्ञ फल प्रकाश

3.10 निबन्धात्मक प्रश्न

1. षोडशोपचार का क्या महत्व है? वर्णन करें।
2. पंचोपचार का क्या महत्व है? वर्णन करें।
3. पूजन में पंचोपचार एवं षोडशोपचार के महत्व पर प्रकाश डालें।